सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 24, नई दिल्ली । शुक्रवार, 04 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

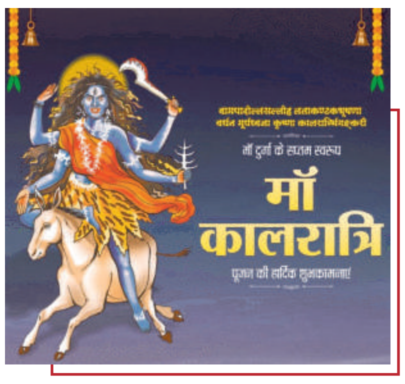

03 दिल्ली के 1000 आंगनबाड़ी केंद्रों का होगा कायापलट....
06 क्या एनडीए जेईई से ज्यादा कठिन है?
08 लेखक की स्वतंत्रता बनाम संपादकीय नीति: बहस के नए आयाम

2028-29 तक देशभर में हाइवे और एक्सप्रेस वे के किनारों पर 700 से ज्यादा वेसाइड एमिनिटीज का विकास किया जाएगा : गडकरी

संजय बाटला

भारत में कुछ सालों में सड़कों की स्थिति में काफी ज यादा सुधार हुआ है। हाइवे और एव सप्रेस वे बनने से सफर करने में काफी आसानी हो गई है लेकिन परेशानी तब होती है जब कई किलोमीटर तक हाइवे के किनारे बुनियादी सुविधाएं नहीं मिलती। इस मामले पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने व या जानकारी दी है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में पिछले कुछ सालों में हाइवे और एक्सप्रेस वे का निर्माण तेजी से हुआ है। इसका फायदा न सिर्फ सरकार को हुआ है बल्कि इससे लोगों को भी काफी सुविधा हो गई है। लेकिन अभी इन हाइवे और एक्सप्रेस वे के किनारे वे साइड एमिनिटीज की सही सुविधा न होने से लोगों को परेशानी होती है। इस मामले में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने संसद में क्या जानकारी दी है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी की ओर से संसद में जानकारी दी गई है कि देशभर में हाइवे और एक्सप्रेस वे के किनारों पर वे साइड एमिनिटीज को बेहतर करने का काम किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अब तक 94 वेसाइड एमिनिटीज को शुरू किया जा चुका है और 501 को आवंटित किया जा चुका है।

केंद्र सरकार का लक्ष्य है कि साल 2028-29 वित्त वर्ष तक देशभर में हाइवे और एक्सप्रेस वे के किनारों पर 700 से ज्यादा वेसाइड एमिनिटीज का विकास किया जाएगा। जहां पर कई बुनियादी सुविधाओं को दिया जाएगा।

हाइवे और एक्सप्रेस वे के किनारों पर वे साइड एमिनिटीज में कई बुनियादी सुविधाओं को दिया जाता है। इनमें पेट्रोल-डीजल और सीएनजी को उपलब्ध करवाए जाने के साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग स्टेशन, शौचालय, पीने का पानी, पार्किंग, रेस्तरां जैसी सुविधाओं को दिया जाता है।

केंद्र सरकार की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक राजस्थान में सबसे ज्यादा वे साइड एमिनिटीज को आवंटित किया गया है। राज्य में 72 वे साइड एमिनिटीज आवंटित की गई हैं। इसके अलावा गुजरात में 56, मध्य प्रदेश में 50, उत्तर प्रदेश में 48, हरियाणा में 47, पंजाब में 37, आंध्र प्रदेश में 30, जम्मू कश्मीर में 25, तमिलनाडु में 22, महाराष्ट्र में 21, कर्नाटक में 18, ओडिशा में 11, तेलंगाना में 10, पश्चिम बंगाल में 10 मिलाकर कुल संख्या 501 है। इनमें से अभी तक 94 को शुरू किया जा चुका है। जिनमें से हरियाणा में 20, राजस्थान में 20, उत्तर प्रदेश में 11, मध्य प्रदेश में 11, गुजरात में नौ, आंध्र प्रदेश में पांच, तमिलनाडु में पांच, कर्नाटक में पांच, असम में तीन, पंजाब में दो, पश्चिम बंगाल में दो और झारखंड में एक शामिल हैं।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

मुफ्त बस यात्रा हेतु स्मार्ट कार्ड के लिए पंजीकरण प्रक्रिया होगी शुरू...

दिल्ली में भाजपा सरकार जल्द ही मुफ्त बस यात्रा के लिए स्मार्ट कार्ड के लिए पंजीकरण प्रक्रिया शुरू करेगी। यह कदम मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा विधानसभा में पिछले आम आदमी पार्टी (आप) सरकार के तहत मौजूदा पिंक टिकट प्रणाली में भ्रष्टाचार के आरोपों के कुछ दिनों बाद आया है। सरकार इस कार्ड को लेकर अगले 2-3 हफ्तों में प्रक्रिया शुरू करेगी।

परिवहन विशेष न्यूज

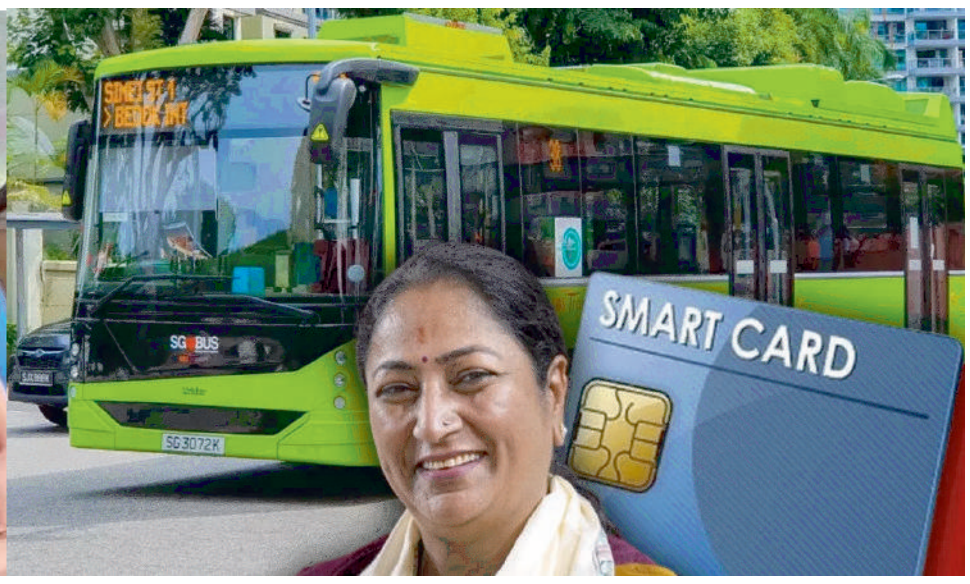

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार की महिलाओं के लिए 'मुफ्त बस यात्रा योजना' अब केवल दिल्ली में रहने वाली महिलाओं के लिए उपलब्ध होगी। परिवहन विभाग ने इस योजना का लाभ उठाने के लिए एक 'लाइफटाइम' स्मार्ट कार्ड शुरू करने की प्रक्रिया शुरू की है। अधिकारियों ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

दिल्ली में भाजपा सरकार जल्द ही मुफ्त बस यात्रा के लिए स्मार्ट कार्ड के लिए पंजीकरण प्रक्रिया शुरू करेगी। यह कदम मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा विधानसभा में पिछले आम आदमी पार्टी (आप) सरकार के तहत मौजूदा 'पिंक टिकट' प्रणाली में भ्रष्टाचार के आरोपों के कुछ दिनों बाद आया है।

गुप्ता ने कहा, "हम महिलाओं को यह सेवा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं... भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हम महिलाओं के लिए डिजिटल यात्रा कार्ड शुरू करेंगे, जिससे फिजिकल टिकटों से जुड़े 'पिंक भ्रष्टाचार' को खत्म किया जाएगा।"

टिकटिंग से जुड़े भ्रष्टाचार खत्म होंगे: रेखा गुप्ता

उन्होंने कहा कि यह कार्ड महिलाओं को सार्वजनिक बसों में कभी भी मुफ्त यात्रा करने की सुविधा देगा और टिकटिंग से जुड़े भ्रष्टाचार को खत्म करेगा। टिकटिंग प्रणाली को पूरी तरह डिजिटाइज कर दक्षता बढ़ाई जाएगी। गुप्ता ने यह भी कहा कि पूरी प्रणाली को आधुनिक बनाया जाएगा और मौजूदा खामियों वाली योजनाओं को पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए सुधारा जाएगा। उन्होंने बजट सत्र के दौरान कहा, ₹हमारा लक्ष्य दिल्ली के सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुलभ, विश्वसनीय और वैश्विक रूप से मान्यता प्राप्त बनाना है।₹

आप सरकार ने 2019 में किया था योजना का शुभारंभ

'पिंक टिकट' योजना को आप सरकार ने 2019 में भाई दूज के अवसर पर शुरू किया था। इस योजना के तहत दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) बसों में महिलाओं को मुफ्त यात्रा प्रदान किया जाता है। महिलाओं को एकल यात्रा के लिए पिंक टिकट दिए जाते हैं, जिसकी कीमत 10 रुपये प्रति टिकट है। दिल्ली सरकार इस लागत को वहन करती है और जारी किए गए टिकटों की संख्या के आधार पर बस कंपनियों को मुआवजा देती है। इस योजना में भागीदारी स्वैच्छिक है, जिससे राष्ट्रीय राजधानी में सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने वाली महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

अगले 2-3 हफ्तों में स्मार्ट कार्ड पर काम होगा शुरू

भाजपा ने 5 फरवरी को हुए विधानसभा चुनावों में भारी जीत के बाद 26 साल से अधिक समय बाद दिल्ली में सरकार बनाई है। सरकार अगले दो से तीन हफ्तों में स्मार्ट कार्ड इनीशिएटिव पर काम शुरू करेगी। पात्रता मानदंड के अनुसार, लाइफटाइम स्मार्ट कार्ड केवल दिल्ली में रहने वाली महिलाओं को जारी किया जाएगा, जिससे वे बिना किसी सीमा के कहीं भी, कभी भी यात्रा कर सकेंगी। एक अधिकारी ने कहा कि यह कार्ड जल्द ही जारी किया जाएगा, जो सरकार की जन कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को दोहराता है।

यू-टर्न बनाने के प्रस्ताव से स्वामी दयानंद मार्ग को मिलेगी जाम से निजात

पूर्वी दिल्ली के स्वामी दयानंद मार्ग पर ट्रैफिक जाम से निजात दिलाने के लिए पुलिस ने एक नया प्रस्ताव दिया है। पुलिस इस मार्ग पर एक यू-टर्न बनाना चाहती है ताकि वाहनों को आसानी से यू-टर्न लेने में मदद मिले और ट्रैफिक जाम की समस्या कम हो। इस मार्ग पर एक दिन में करीब दो लाख वाहनों का आवागमन होता है और वाहनों का दबाव अधिक रहता है।

दिल्ली। स्वामी दयानंद मार्ग पर छह किलोमीटर की दूरी में सात ट्रैफिक सिग्नल है। एक दिन में करीब दो लाख वाहनों का आवागमन होता है। वाहनों का दबाव अधिक रहने के कारण व ट्रैफिक सिग्नल पास-पास होने के कारण सड़क पर जाम लगता है। दस मिनट का सफर तय करने में 20 मिनट का समय लगता है। रोजाना वाहन चालकों को जाम से जूझना पड़ता है। खास तौर पर दोपहर के वक्त जब स्कूल के बच्चों की छुट्टी होती है। पुलिस ट्रैफिक सिग्नल बंद करके यू-टर्न बनाना चाहती है। इसका प्रस्ताव पीडल्यूडी के साथ साझा किया जाएगा। पुलिस विकास मार्ग पर जाम को खत्म करने के लिए ट्रैफिक सिग्नल को बंद करके यू-टर्न बना चुकी है।

स्वामी दयानंद मार्ग टेल्को पाइंट गाजीपुर से शुरू होकर शाहदरा के कैशव चौक तक है। इस मार्ग पर से जुड़े दो रास्तों पर भोलानाथ नगर स्थित शाहदरा व आइपी एक्सटेंशन स्थित पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त के कार्यालय बने हुए हैं। साथ ही इस मार्ग पर जगतपुरी में मार्बल की एक बड़ी मार्केट है। मार्केट के पास कड़कड़डूमा कोर्ट भी है। इस कारण इस मार्ग पर वाहनों का दबाव अधिक रहता है। जगतपुरी से आजाद नगर की ओर जाने वाले मार्ग पर सर्विस लेन भी बनी हुई है। लेकिन दुकानदार उस लेन पर अवैध पार्किंग करने के साथ सामान लगाकर रखते हैं। जाम के कारण लोगों को परेशानी से जूझना पड़ता है। पूर्वी रेंज के जिला पुलिस उपायुक्त राजीव कुमार रावल ने कहा कि सड़कों को जाम मुक्त बनाने के लिए यातायात पुलिस विशेष ध्यान दे रही है। स्वामी दयानंद मार्ग पर वाहनों का दबाव अधिक रहता है। उन्होंने कहा कि जगतपुरी से कैशव चौक जाने वाले मार्ग की तुलना में कैशव चौक से जगतपुरी की ओर आने वाला मार्ग करीब ढाई फीट ऊंचा है। पुलिस एक प्लान बना रही है और उस प्लान को पीडब्ल्यूडी को साझा किया जाएगा। मांग कि जाएगी दोनों मार्ग का बराबर किया जाए, ताकि यू-टर्न बनाने में आसनी हो। यू-टर्न के बन जाने से वाहन चालकों के 10 से 15 मिनट का समय बचेगा।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

सैक्टर-25 व नाले की उपर्युक्त निरीक्षण सड़क जिसके बीच की दूरी लगभग 100-150 मीटर है में वाहनों के आवागमन का विकल्प उपलब्ध करवाने के लिए

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हम आपका ध्यान रोहिणी सैक्टर-11, केएनके मार्ग स्थित पूरक नाला सेतु (नजफगढ़ ड्रेन) से भगवान महावीर मार्ग, सैक्टर-25 स्थित इस्कॉन मंदिर की ओर जा रहे निरीक्षण रोड़ की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जिस पर दिल्ली जल बोर्ड का मलजल उपचार संयंत्र स्थित है।

इस उपचार संयंत्र के एक ओर सैक्टर-25 व दूसरी ओर नाले की सड़क उपर्युक्त निरीक्षण सड़क है जिसके बीच की दूरी लगभग 100-150 मीटर है जहाँ पूर्व समय में वाहनों के आवागमन का विकल्प उपलब्ध था जोकि वर्तमान समय में झाड़-फूँस आदि से बाधित है।

वर्तमान समय में नाला निरीक्षण मार्ग से होकर छोटे वाहन (LMV) केएनके मार्ग व भगवान महावीर मार्ग के बीच आवागमन कर रहे हैं जबकि सैक्टर-11 की ओर से आकर सैक्टर-25 में प्रवेश के लिए वाहनों को भगवान महावीर मार्ग जाकर रिठाला मैट्रो स्टेशन की ओर बाएं मुड़कर नाला सेतु पार कर यू-टर्न लेकर वापिस आकर दाएं मुड़ना पड़ रहा है जोकि अत्यधिक असुविधाजनक व समय लेने वाला मार्ग/रूट है। इस असुविधाजनक रूट समय नष्ट होने से बचने के लिए सैक्टर-25 की ओर बढ़ रहे वाहन नाला निरीक्षण मार्ग से आकर भगवान महावीर मार्ग पर पहुँचते ही दाईं ओर सर्विस लेन में सीएनजी स्टेशन की ओर से वाहनों के आने जाने के लिए सड़क को साफ कर शुरू करवाने से जाम से मुक्ति और लोगों को हो रही असुविधा से मुक्ति मिलेगी।

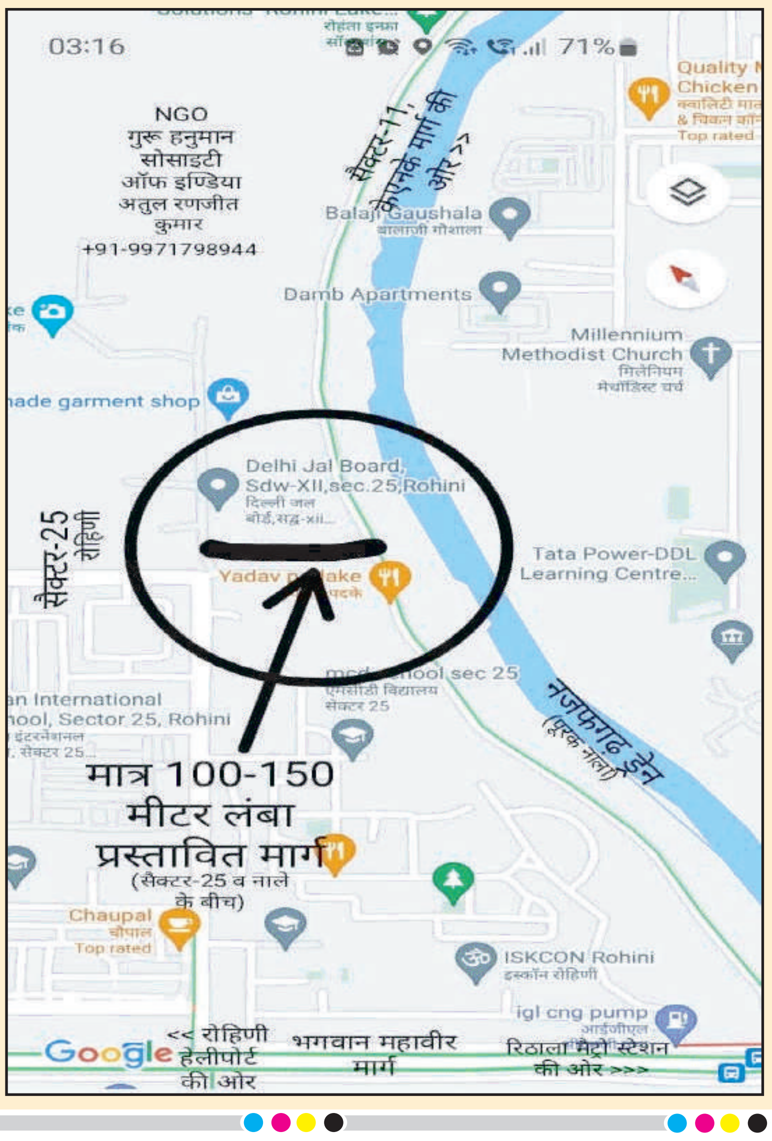

दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला, दुर्गा के 32 चमत्कारी नाम

एक समय की बात है, ब्रह्मा आदि देवताओ ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गा का पूजन किया। इस से प्रसन्न होकर दुर्गतिनाशिनी दुर्गा ने कहाः देवताओं ! मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो, माँगो, मैं दुर्लभ से दुर्लभ वस्तु भी प्रदान करुँगी। दुर्गा का यह वचन सुनकर देवता बोलेः देवी ! हमारे शत्रु महिषासुर को, जो तीनों लोकों के लिए कंटक था, आपने मार डाला, इस से सम्पूर्ण जगत स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी कृपा से हमें पुनः अपने-अपने पद की प्राप्ति हुई है। आप भक्तों के लिए कल्पवृक्ष हैं, हम आपकी शरण में आये हैं, अतः अब हमारे मन में कुछ भी पाने की अभिलाषा शेष नहीं हैं। हमें सब कुछ मिल गया। तथापि आपकी आज्ञा हैं, इसलिए हम जगत की रक्षा के लिए आप से कुछ पूछना चाहते हैं। महेश्वरी ! कौन-सा ऐसा उपाय हैं, जिस से शीघ्र प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं। देवेश्वरी ! यह बात सर्वथा गोपनीय हो तो भी हमें अवश्य बतावें। देवताओं के इस प्रकार प्रार्थना करने पर दयामयी दुर्गा देवी ने कहाः देवगण ! सुनो-यह रहस्य अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ हैं। मेरे बत्तीस नामों की माला सब प्रकार की आपत्ति का विनाश करने वाली हैं। तीनों लोकों में इस के समान दूसरी कोई स्तुति नहीं हैं। यह रहस्यरूप हैं। इसे बतलाती हूँ, सुनो...

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी
दुर्गापद्विनिवारिणी ।दुर्गमच्छेदिनी
दर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ।।
दुर्गतोद्धारिणी दर्गनिहन्त्री
दुर्गमापहा ।दुर्गमज्ञानदा
दुर्गदैत्यलोकदवानला ।।
दुर्गमा दुर्गमालोका
दुर्गमात्मस्वरूपिणी ।दुर्गमार्गप्रदा
दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ।।
दुर्गमज्ञानसंस्थाना
दुर्गमध्यभासिनी ।दुर्गमोहा दुर्गमगा
दुर्गमार्थस्वारूपिणी ।।
दुर्गमासुरसंहन्त्री
दुर्गमायुधधारिणी ।दुर्गमागीं दुर्गमता
दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ।।
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा
दुर्गदारिणी ।नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया
मम मानवः ।।
पठेत सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति प
संशयः ।।

एक समय की बात है, ब्रह्मा आदि देवताओ ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गा का पूजन किया। इस से प्रसन्न होकर दुर्गतिनाशिनी दुर्गा ने कहाः देवताओं ! मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो, माँगो, मैं दुर्लभ से दुर्लभ वस्तु भी प्रदान करुँगी। दुर्गा का यह वचन सुनकर देवता बोलेः देवी ! हमारे शत्रु महिषासुर को, जो तीनों लोकों के लिए कंटक था, आपने मार डाला, इस से सम्पूर्ण जगत स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी कृपा से हमें पुनः अपने-अपने पद की प्राप्ति हुई है। आप भक्तों के लिए कल्पवृक्ष हैं, हम आपकी शरण में आये हैं, अतः अब हमारे मन में कुछ भी पाने की अभिलाषा शेष नहीं हैं। हमें सब कुछ मिल गया। तथापि आपकी आज्ञा हैं, इसलिए हम जगत की रक्षा के लिए आप से कुछ पूछना चाहते हैं। महेश्वरी ! कौन-सा ऐसा उपाय हैं, जिस से शीघ्र प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं। देवेश्वरी ! यह बात सर्वथा गोपनीय हो तो भी हमें अवश्य बतावें। देवताओं के इस प्रकार प्रार्थना करने पर दयामयी दुर्गा देवी ने कहाः देवगण ! सुनो-यह रहस्य अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ हैं। मेरे बत्तीस नामों की माला सब प्रकार की आपत्ति का विनाश करने वाली हैं। तीनों लोकों में इस के समान दूसरी कोई स्तुति नहीं हैं। यह रहस्यरूप हैं। इसे बतलाती हूँ, सुनो -

१) दुर्गा,
२) दुर्गार्तिशमनी,
३) दुर्गापद्विनिवारिणी,
४) दुर्गमच्छेदिनी,
५) दुर्गसाधिनी,
६) दुर्गनाशिनी,
७) दुर्गतोद्धारिणी ,
८) दुर्गनिहन्त्री,
९) दुर्गमापहा,
१०) दुर्गमज्ञानदा,
११) दुर्गदैत्यलोकदवानला,
१२) दुर्गमा,
१३) दुर्गमालोका,
१४) दुर्गमात्मस्वरूपिणी,
१५) दुर्गमार्गप्रदा,
१६) दुर्गमविद्या,
१७) दुर्गमाश्रिता,
१८) दुर्गमज्ञानसंस्थाना,
१९) दुर्गमध्यानभासिनी,
२०) दुर्गमोहा,
२१) दुर्गमगा,
२२) दुर्गमार्थस्वरूपिणी,
२३) दुर्गमासुरसंहन्त्री,
२४) दुर्गमायुधधारिणी,
२५) दुर्गमांगी,
२६) दुर्गमता,
२७) दुर्गम्या,
२८) दुर्गमेश्वरी,
२९) दुर्गभीमा,
३०) दुर्गभामा,
३१) दुर्गभा
३२) दुर्गदारिणी

जो मनुष्य मुझ दुर्गा की इस नाममाला का यह पाठ करता हैं, वह निःसंदेह सब प्रकार के भय से मुक्त हो जायेगा।' 'कोई शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा दुर्भेद्य बंधन में पड़ा हो, इन बत्तीस नामों के पाठ मात्र से संकट से छुटकारा पा जाता हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं हैं। यदि राजा क्रोध में भरकर वध के लिए अथवा और किसी कठोर दंड के लिए आज्ञा दे दे या युद्ध में शत्रुओं द्वारा मनुष्य घिर जाए अथवा वन में व्याघ्र आदि हिंसक जंतुओं के चंगुल में फंस जाए तो इन बत्तीस नामों का एक सौ आठ बार पाठ मात्र करने से वह सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाता हैं। विपत्ति के समय इस के समान भयनाशक उपाय दूसरा नहीं हैं। देवगण ! इस नाममाला का पाठ करने वाले मनुष्यो की कभी कोई हानि नहीं होती। अभक्त, नास्तिक और शठ मनुष्य को इसका उपदेश नहीं देना चाहिए। जो भारी विपत्ति में पड़ने पर भी इस नामावली का हजार, दस हजार अथवा लाख बार पाठ करता हैं, स्वयं करता या ब्राह्मणो से कराता हैं, वह सब प्रकार की आपत्तियों से मुक्त हो जाता हैं। सिद्ध अग्नि में मधुमिश्रित सफ़ेद तिलों से इन नामों द्वारा लाख बार हवन करे तो मनुष्य सब विपत्तियों से छूट जाता हैं। इस नाममाला का पुरश्चरण तीस हजार का हैं। पुरश्चरणपूर्वक पाठ करने से मनुष्य इसके द्वारा सम्पूर्ण कार्य सिद्ध कर सकता हैं। मेरी सुन्दर मिट्टी की अष्टभुजा मूर्ति बनावे, आठों भुजाओं में क्रमशः गदा, खड्ग, त्रिशूल, बाण, धनुष, कमल, खेट (ढाल) और मुद्गर धारण करावें। मूर्ति के मस्तक पर चन्द्रमा का चिन्ह हो, उसके तीन नेत्र हों, उसे लाल वस्त्र पहनाया गया हों, वह सिंह के कंधे पर सवार हो और शूल से महिषासुर का वध कर रही हो, इस प्रकार की प्रतिमा बनाकर नाना प्रकार की सामग्रियों से भक्तिपूर्वक मेरा पूजन करे। मेरे उक्त नमो से लाल कनेर के फूल चढ़ाते हुए सौ बार पूजा करे और मंत्र जाप करते हुए पुए से हवन करे। भांति-भांति के उत्तम पदार्थ का भोग लगावे। इस प्रकार करने से मनुष्य असाध्य कार्य को भी सिद्ध कर लेता हैं। जो मानव प्रतिदिन मेरा भजन करता हैं, वह कभी विपत्ति में नहीं पड़ता।' देवताओं से ऐसा कह कर जगदम्बा वहीं अंतर्धान हो गयीं। दुर्गा जी के इस उपाख्यान को जो सुनते हैं, उन पर कोई विपत्ति नहीं आती। आप सभी साधक भाई बहनों को नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

नवरात्रि का छठा दिन, माता का छठा स्वरूप "माँ कात्यायनी"

कात्यायनी नवदुर्गा या हिंदू देवी पार्वती (शक्ति) के नौ रूपों में छठवें रूप है। यह अमरकोष में पार्वती के लिए दूसरा नाम है, संस्कृत शब्दकोश में उमा, कात्यायनी, गौरी, काली, हैमावती, इस्वरी इन्हीं के अन्य नाम हैं। शक्तिवाद में उन्हें शक्ति या दुर्गा, जिसमे भद्रकाली और चंडिका भी शामिल है, में भी प्रचलित हैं। यजुर्वेद के तैत्तिरीय आरण्यक में उनका उल्लेख प्रथम किया है। स्कंद पुराण में उल्लेख है कि वे परमेश्वर के नैसर्गिक क्रोध से उत्पन्न हुई थी, जिन्होंने देवी पार्वती द्वारा दी गई सिंह पर आरूढ़ होकर महिषासुर का वध किया। वे शक्ति की आदि रूपा है, जिसका उल्लेख पाणिनि पर पतांजलि के महाभाष्य में किया गया है, जिसे दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखी गयी थी। उनका वर्णन देवी-भागवत पुराण, और मार्कंडेय ऋषि द्वारा रचित मार्कंडेय पुराण के देवी महात्म्य में किया गया है जिसे ४०० से ५०० ईसा में लिपिबद्ध किया गया था। बौद्ध और जैन ग्रंथों और कई तांत्रिक ग्रंथों, विशेष रूप से कालिका-पुराण (१०वीं शताब्दी) में उनका उल्लेख है, जिसमें उद्यान या उड़ीसा में देवी कात्यायनी और भगवान जगन्नाथ का स्थान बताया गया है। 'श्रीजी की चरण सेवा' की सभी धार्मिक, आध्यात्मिक एवं धारावाहिक पोस्टों के लिये हमारे पेज से जुड़े रहें तथा अपने सभी भगवत्प्रेमी मित्रों को भी आमंत्रित करें। परंपरागत रूप से देवी दुर्गा की तरह वे लाल रंग से जुड़ी हुई हैं। नवरात्रि उत्सव के षष्ठी में उनकी पूजा की जाती है। उस दिन साधक का मन 'आज्ञा' चक्र में स्थित होता है। योगसाधना में इस आज्ञा चक्र का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इस चक्र में स्थित मन वाला साधक माँ कात्यायनी के चरणों में अपना सर्वस्व निवेदित कर देता है। परिपूर्ण आत्मदान करने वाले ऐसे भक्तों को सहज भाव से माँ के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं। माँ का नाम कात्यायनी कैसे पड़ा इसकी भी एक कथा है- कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे। उनके पुत्र ऋषि कात्य हुए। इन्हीं कात्य के गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन उत्पन्न हुए थे। इन्होंने भगवती पराम्बा की उपासना करते हुए बहुत वर्षों तक बड़ी कठिन तपस्या की थी। उनकी इच्छा थी माँ भगवती उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लें। माँ भगवती ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। कुछ समय पश्चात जब दानव महिषासुर का अत्याचार पृथ्वी पर बढ़ गया तब भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों ने अपने-अपने तेज का अंश देकर महिषासुर के विनाश के लिए एक देवी को उत्पन्न किया। महर्षि कात्यायन ने सर्वप्रथम इनकी पूजा की। इसी कारण से यह कात्यायनी कहलाईं। ऐसी भी कथा मिलती है कि ये महर्षि कात्यायन के वहाँ पुत्री रूप में उत्पन्न हुई थीं। आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को जन्म लेकर शुक्त सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक तीन दिन इन्होंने कात्यायन ऋषि की पूजा ग्रहण कर दशमी को महिषासुर का वध किया था। माँ कात्यायनी अमोघ फलदायिनी हैं। भगवान कृष्ण को पतिरूप में पाने के लिए ब्रज की गोपियों ने इन्हीं की पूजा कालिन्दी-यमुना के तट पर की थी। ये ब्रजमंडल की अधिष्ठात्री देवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। माँ कात्यायनी का स्वरूप अत्यंत चमकीला और भास्वर है। इनकी चार भुजाएँ हैं। माताजी का दाहिनी तरफ का ऊपरवाला हाथ अभयमुद्रा में तथा नीचे वाला वरमुद्रा में है। बाईं तरफ के ऊपरवाले हाथ में तलवार और नीचे वाले हाथ में कमल-पुष्प सुशोभित है। इनका वाहन सिंह है। माँ कात्यायनी की भक्ति और उपासना द्वारा मनुष्य को बड़ी सरलता से अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चारों फलों की प्राप्ति हो जाती है। वह इस लोक में स्थित रहकर भी अलौकिक तेज और प्रभाव से युक्त हो जाता है। नवरात्रि का छठा दिन माँ कात्यायनी की उपासना का दिन होता है। इनके पूजन से अद्भुत शक्ति का संचार होता है व दुश्मनों का संहार करने में ये सक्षम बनाती हैं। इनका ध्यान गोधुली बेला में करना होता है। प्रत्येक सर्वसाधारण के लिए आराधना योग्य यह श्लोक सरल और स्पष्ट है। माँ जगदम्बे की भक्ति पाने के लिए इसे कंठस्थ कर नवरात्रि में छठे दिन इसका जाप करना चाहिए।

'या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ : हे माँ ! सर्वत्र विराजमान और शक्ति -रूपिणी प्रसिद्ध अम्बे, आपको मेरा बार-बार प्रणाम है। या मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूँ। इसके अतिरिक्त जिन कन्याओ के विवाह मे विलम्ब हो रहा हो, उन्हें इस दिन माँ कात्यायनी की उपासना अवश्य करनी चाहिए, जिससे उन्हे मनोवान्छित वर की प्राप्ति होती है। विवाह के लिये कात्यायनी मन्त्र-

ॐ कात्यायनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरि !
नंदगोपसुतम्देवि पतिम्मे कुरुते नमः।

माँ को जो सच्चे मन से याद करता है उसके रोग, शोक, संताप, भय आदि सर्वथा विनष्ट हो जाते हैं। जन्म-जन्मांतर के पापों को विनष्ट करने के लिए माँ की शरणागत होकर उनकी पूजा-उपासना के लिए तत्पर होना चाहिए।

"जय माता दी"

पपीते के पत्तों में कई पोषक तत्व होते हैं, जैसे- विटामिन, मिनरल्स, और एंटीऑक्सीडेंट. इनके कई स्वास्थ्य लाभ हैं

पपीते के पत्तों में कई तरह के पोषक तत्व होते हैं, जैसे कि एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन, और खनिज.

इन पत्तों का सेवन करने से कई तरह के स्वास्थ्य लाभ होते हैं. पपीते के पत्तों का इस्तेमाल चाय, अर्क, गोलियों, और जूस के रूप में किया जाता है.

पपीते के पत्तों के फ़ायदेः

डेंगू बुखार में राहत मिलती है. पपीते के पत्तों का रस पीने से प्लेटलेट और आरबीसी की संख्या बढ़ती है.
पाचन तंत्र मज़बूत होता है. पपीते के पत्तों में पैपीन और फ़ाइबर होता है, जो पाचन को बेहतर करता है.
लिवर की समस्याओं में फ़ायदेमंद. पपीते के पत्तों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट लीवर की सेहत को सुधारते हैं.
ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद मिलती है.
त्वचा संबंधी समस्याओं का समाधान होता है.
इम्यून सिस्टम मज़बूत होता है.
सूजन और दर्द में राहत मिलती है.
कब्ज़ की समस्या से आराम मिलता है.
कैंसर की रोकथाम में मदद मिलती है.
किडनी और हार्ट की सेहत को सुधारने में मदद मिलती है.
पपीते के पत्तों का रस पीने से कई बीमारियों से बचा जा सकता है.

मन असहज अवस्था है। यह हमारी सहज-स्वाभाविक अवस्था कभी नहीं बन सकता

ध्यान हमारी सहज अवस्था है, लेकिन हमने उसे खो दिया है। हम उस स्वर्ग से बाहर आ गये हैं। लेकिन यह स्वर्ग पुनः पाया जा सकता है। यदि किसी बच्चे की आंख में झांके तो वहां अद्भुत मौन/निर्दोषता दिखेगी। हर बच्चा ध्यान के लिए ही पैदा होता है, लेकिन उसे समाज के रंग-ढंग सीखने होतें हैं। उसे विचार करना, तर्क करना, हिसाब-किताब, सब सीखना होता है। शब्द/भाषा/व्याकरण सीखते सीखते, धीरे-धीरे वह अपनी निर्दोषिता, सरलता से दूर हटता जाता है। उसकी कोरी स्लेट समाज की इस लिखावट से गंदी हो जाती है। वह समाज के ढांचे का एक कुशल यंत्र हो जाता है और जीवंत/सहज/सरल मनुष्य नहीं रहता। बस उसी निर्दोष/सहजता को पुनः उपलब्ध करने की आवश्यकता है। इसी ध्यान की तरंग में, जिसमें हम पहले थे, पुनः प्राप्त करना है। जो हीरा कूड़े-कचरे में दब गया है, हम जरा खोदें तो हीरा पुनः हाथ आ सकता है, वही हमारा स्वभाव है। उसे हम खो नहीं सकते, उसे हम केवल भूल सकतें हैं, उसे हम विस्मृति करतें हैं और उसे ही पुनः प्राप्त करने को हम ध्यान कहतें हैं।

हिंगलाज मंदिर (नानी मन्दिर)

पाकिस्तान के लसबेला से अरब सागर से छूकर निकलता 150 किमी तक फैला रेगिस्तान। बगल में 1000 फीट ऊँचे रेतीले पहाड़ों से गुजरती नदी। बाईं ओर दुनिया का सबसे विशाल मड ज्वालामुखी। जंगलों के बीच दूर तक परसा सन्नाटा और इस सन्नाटे के बीच से आती आवाज 'जय माता दी'। इन्हीं रास्तों में है धरती पर देवी माता का पहला स्थान माने जानेवाले पाकिस्तान स्थित एकमात्र शक्तिपीठ 'हिंगलाज मंदिर'।

अमरनाथ जी से ज्यादा कठिन है हिंगलाज की यात्रा करीब 2 लाख साल पुराने इस मंदिर में पिछले जन्मों के पाप भी नष्ट हो जाते हैं। इस मंदिर में नवरात्रि में गरबा से लेकर कन्या भोज तक सब होता है। देवी के 51 शक्तिपीठों में से एक हिंगलाज मंदिर में नवरात्रि का जश्न करीब-करीब भारत जैसा ही होता है। कई बार इस बात का अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है कि ये मंदिर पाक में है या भारत में।

- हिंगलाज मंदिर जिस स्थान में है वो पाकिस्तान के सबसे बड़े हिंदू बाहुल्य इलाकों में से एक है। पूरे नवरात्रि यहां 3 किमी में मेला लगता है। दर्शन के लिए आनेवाली महिलाएं गरबा नृत्य करती हैं। पूजा-हवन होता है। कन्या खिलाई जाती हैं। माँ के भजनों की गूँज दूर-दूर सुनाई देती है।

- कुल मिलाकर हर वो आस्था देखने को मिलती है जो भारत में नवरात्रि पूजा के दौरान होती है। नवरात्रि में हो जाती है साल भर के खर्चे के बराबर कमाई।

- हिंगलाज मंदिर आनेवाले भक्तों की संख्या का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि नवरात्रि के 9 दिनों में यहाँ के लोग अपने साल भर के खर्चे के बराबर कमा लेते हैं।

- मंदिर के प्रमुख पुजारी महाराज श्री गोपाल गिरी जी का कहना है कि नवरात्रि के दौरान भी मंदिर में हिंदू-मुस्लिम का कोई फर्क नहीं दिखता है। कई बार पुजारी-सेवक मुस्लिम टोपी पहने दिखते हैं। तो वहीं मुस्लिम भाई देवी माता की पूजा के दौरान साथ खड़े मिलते हैं। इनमें से अधिकतर बलूचिस्तान-सिंध के होते हैं।

- हर साल पड़ने वाले 2 नवरात्रों में यहाँ सबसे ज्यादा भीड़ होती है। करीब 10 से 25 हजार भक्त रोज़ माता के दर्शन करने हिंगलाज आते हैं। इनमें अमेरिका, ब्रिटेन, बांग्लादेश और पाकिस्तान के आस-पास के देश प्रमुख हैं।

- चूंकि, हिंगलाज मंदिर को मुस्लिम 'नानी बीबी की हज' या पीरगाह के तौर पर मानते हैं, इसलिए पीरगाह पर अफगानिस्तान, इजिप्ट और ईरान जैसे देशों के लोग भी आते हैं।

शिवजी की पत्नी माता सती का सिर कटकर गिरने से बना 'हिंगलाज'। हिन्दू धर्म, शास्त्रों और पुराणों के मुताबिक, सती के पिता राजा दक्ष अपनी बेटी का विवाह भगवान शंकर से होने से खुश नहीं थे। क्रोधित दक्ष ने बेटी का बहुत अपमान किया था। इससे दुखी सती ने खुद को हवनकुंड में जला डाला। इसे देखकर शंकर के गण ने राजा दक्ष का वध कर दिया था। घटना की खबर पाते ही शंकरजी दक्ष के घर पहुँचे। फिर सती के शव को कंधे पर उठाकर क्रोध में नृत्य करने लगे। शंकरजी को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने चक्र से सती के 51 टुकड़े कर दिए। ये टुकड़े जहाँ-जहाँ गिरे, उन 51 जगहों को ही देवी शक्तिपीठ के नाम से जाना जाता है। टुकड़ों में से सती के शरीर का पहला हिस्सा यानी सिर 'किर्थर पहाड़ी' पर गिरा, जिसे आज हिंगलाज के नाम से जानते हैं। इसी पहले हिस्से यानी सिर के चलते पाकिस्तान के हिंगलाज मंदिर को धरती पर माता का पहला स्थान कहते हैं।

नवार्ण मंत्र महत्वः एवं जप विधि

माता भगवती जगत जननी दुर्गा जी की साधना-उपासना के क्रम में, नवार्ण मंत्र एक ऐसा महत्त्वपूर्ण महामंत्र है। नवार्ण अर्थात नौ अक्षरों का इस नौ अक्षर के महामंत्र में नौ ग्रहों को नियंत्रित करने की शक्ति है, जिसके माध्यम से सभी क्षेत्रों में पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है और भगवती दुर्गा का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है यह महामंत्र शक्ति साधना में सर्वोपरि तथा सभी मंत्रों-स्तोत्रों में से एक महत्त्वपूर्ण महामंत्र है। यह माता भगवती दुर्गा जी के तीनों स्वरूपों माता महासरस्वती, माता महालक्ष्मी व माता महाकाली की एक साथ साधना का पूर्ण प्रभावक बीज मंत्र है और साथ ही माता दुर्गा के नौ रूपों का संयुक्त मंत्र है और इसी महामंत्र से नौ ग्रहों को भी शांत किया जा सकता है।

नवार्ण मंत्र
||ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे ||

नौ अक्षर वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र में देवी दुर्गा की नौ शक्तियां समायी हुई है। जिसका सम्बन्ध नौ ग्रहों से भी है।

ऐं = सरस्वती का बीज मन्त्र है ।
ह्रीं = महालक्ष्मी का बीज मन्त्र है ।
क्लीं = महाकाली का बीज मन्त्र है ।

इसके साथ नवार्ण मंत्र के प्रथम बीज " ऐं " से माता दुर्गा की प्रथम शक्ति माता शैलपुत्री की उपासना की जाती है, जिस में सूर्य ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के द्वितीय बीज " ह्रीं " से माता दुर्गा की द्वितीय शक्ति माता ब्रह्मचारिणी की उपासना की जाती है, जिस में चन्द्र ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के तृतीय बीज " क्लीं " से माता दुर्गा की तृतीय शक्ति माता चंद्रघंटा की उपासना की जाती है, जिस में मंगल ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के चतुर्थ बीज " चा " से माता दुर्गा की चतुर्थ शक्ति माता कुष्मांडा की उपासना की जाती है, जिस में बुध ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के पंचम बीज " मुं " से माता दुर्गा की पंचम शक्ति माँ स्कंदमाता की उपासना की जाती है, जिस में बृहस्पति ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के षष्ठ बीज " डा " से माता दुर्गा की षष्ठ शक्ति माता कात्यायनी की उपासना की जाती है, जिस में शुक्र ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के सप्तम बीज " यै " से माता दुर्गा की सप्तम शक्ति माता कालरात्रि की उपासना की जाती है, जिस में शनि ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के अष्टम बीज " वि " से माता दुर्गा की अष्टम शक्ति माता महागौरी की उपासना की जाती है, जिस में राहु ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।
नवार्ण मंत्र के नवम बीज " चै " से माता दुर्गा की नवम शक्ति माता सिद्धीदात्री की उपासना की जाती है, जिस में केतु ग्रह को नियंत्रित करने की शक्ति समायी हुई है।

नवार्ण मंत्र साधना विधीः-
विनियोगः
|| ॐ अस्य श्रीनवार्णमंत्रस्य ब्रम्हाविष्णुरुद्राऋषयःगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंन्दांसी,श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः , ऐं बीजम , ह्रीं शक्तिः ,क्लीं कीलकम श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ||

विलोम बीज न्यासः-
ॐ च्चै नमः गूदे ।
ॐ विं नमः मुखे ।
ॐ यै नमः वाम नासा पूटे ।
ॐ डां नमः दक्ष नासा पुटे ।
ॐ मुं नमः वाम कर्णे ।
ॐ चां नमः दक्ष कर्णे ।
ॐ क्लीं नमः वाम नेत्रे ।
ॐ ह्रीं नमः दक्ष नेत्रे ।
ॐ ऐं ह्रीं नमः शिखायाम ॥
(विलोम न्यास से सर्व दुखो का नाश होता है,संबन्धित मंत्र उच्चारण की साथ दहीने हाथ की उँगलियो से संबन्धित स्थान पे स्पर्श कीजिये)

ब्रम्हारूप न्यासः-
ॐ ब्रम्हा सनातनः पादादी नाभि पर्यन्तं मां पातु ॥
ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धी पर्यन्तं नित्यं मां पातु ॥
ॐ रुद्र स्त्रीलोचनः विशुद्धेर्वम्हरंध्रातं मां पातु ॥
ॐ हं सः पादद्वयं मे पातु ॥
ॐ वैनतेयः कर इयं मे पातु ॥
ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु ॥
ॐ गजाननः सर्वाड्गानी मे पातु ॥
ॐ सर्वानंन्द मयोहरीः परपरौ देहभागौ मे पातु ॥
(ब्रम्हारूपन्यास से सभी मनोकामनाये पूर्ण होती है, संबन्धित मंत्र उच्चारण की साथ दोनों हाथो की उँगलियो से संबन्धित स्थान पे स्पर्श कीजिये)

ध्यान मंत्रः-
खड्गमं चक्रगदेशुषुचापपरिघाञ्छुलं भूशुण्डीम शिरः शड्ख संदधतीं करैस्त्रीनयना सर्वाड्ग भूषावृताम ।
नीलाश्मद्युतीमास्यपाददशकां सेवे महाकालीकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधु कैटभम ॥

माला पूजनः-
जाप आरंभ करने से पूर्व ही इस मंत्र से माला का पुजा कीजिये,इस विधि से आपकी माला भी चैतन्य हो जाती है.
"ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नंमः"
ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरुपिनी ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृहनामी दक्षिणे करे ।जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥
ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देही देही सर्वमन्त्रार्थसाधिनी साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

अब आप चैतन्य माला से नवार्ण मंत्र का जाप करे-
नवार्ण मंत्र :-
|| ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ||

नवार्ण मंत्र की सिद्धि 9 दिनो मे 1,25,000 मंत्र जाप से होती है,परंतु आप ऐसे नहीं कर सकते है तो रोज 1,3,5,7,11,21 .इत्यादि माला मंत्र जाप भी कर सकते है, इस विधि से सारी इच्छाये पूर्ण होती है, दुख कम होते है और धन की वसूली भी सहज ही हो जाती है। हमे शास्त्र के हिसाब से यह सोलह प्रकार के न्यास देखने मिलती है जैसे ऋष्यादी, कर, हृदयादी, अक्षर, दिड्ग, सारस्वत, प्रथम मातृका, द्वितीय मातृका, तृतीय मातृका, षडदेवी, ब्रम्हरूप, बीज मंत्र , विलोम बीज, षड, सप्तशती ,शक्ति जाग्रण न्यास और बाकी के 8 न्यास गुप्त न्यास नाम से जाने जाते है,इन सारे न्यासो का अपना एक अलग ही महत्व होता है,उदाहरण के लिये शक्ति जाग्रण न्यास से माँ सुक्ष्म रूप से साधको के सामने शीघ्र ही आ जाती है और मंत्र जाप की प्रभाव से प्रत्यक्ष होती है और जब माँ चाहे किसी भी रूप मे क्यू न आये हमारी कल्याण तो निश्चित ही कर देती है।

आप नवरात्री एवं अन्य दिनो मे भी इस मंत्र का जाप कर सकते है। मंत्र जाप काली हकीक माला अथवा रुद्राक्ष माला से ही किया करे।

विशेषः-नवार्ण मंत्र का जप योग्य गुरु से नवाक्षरी दीक्षा के बाद ही फलित होता है ऐसी शास्त्र आज्ञा है।

'किसी भी हालत में स्वीकार नहीं', जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने वक्फ संशोधन विधेयक पर लिया बड़ा फैसला

संसद में वक्फ संशोधन विधेयक पर बहस जारी है। इस बीच जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने विधेयक को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने का फैसला किया है। जमीयत उलेमा का कहना है कि यह कानून मुसलमानों के अधिकारों का हनन है और संविधान का उल्लंघन है। जमीयत ने सरकार से इस कानून को वापस लेने की मांग की है।

नई दिल्ली। एक तरफ संसद में वह संशोधन विधेयक पर जोरदार बहस जारी है। इस बीच देश के शीर्ष मुस्लिम संगठन भी इसे लेकर अपनी रणनीति बनाने में जुटी हुई है। बृहस्पतिवार को जमीयत उलेमा ए हिंद की वर्किंग कमेटी की बैठक हुई जिसमें तय किया गया कि इस कानून के पारित होने की स्थिति में उसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जाएगी।

इस मौके पर जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि संसद में वक्फ से संबंधित जो कानून लाया गया है, हम उसे पूरी तरह से खारिज करते हैं। यह देश के संविधान और कानून पर हमला है और हमारे धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप है। मौलाना मदनी ने कहा कि किसी भी हालत में हम इसे स्वीकार नहीं करेंगे।

वक्फ मुसलमानों का धार्मिक मामला

उन्होंने कहा कि हम ने लोकतांत्रिक तरीके से सरकार को यह समझाने की हरसंभव कोशिश की। वक्फ मुसलमानों का धार्मिक मामला है। वक्फ संपत्तियां वे दान हैं, जो हमारे बुजुर्गों ने समाज की भलाई और कल्याण के लिए दी थीं, इसलिए हम इसमें किसी भी सरकारी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

मौलाना मदनी ने कहा कि हम शुरू से ही यह कहते आ रहे हैं कि मुसलमान ऐसे किसी कानून को स्वीकार नहीं कर सकते, जिससे वक्फ की प्रकृति और उसका उद्देश्य बदला जाए। उन्होंने कहा कि हमें ऐसा कोई भी कानून स्वीकार नहीं, जो इस्लामी कानून (शरीयत) के खिलाफ हो। मौलाना मदनी ने कहा कि मुसलमान हर चीज पर समझौता कर सकता है, लेकिन अपनी शरीयत पर कोई समझौता नहीं करेगा।

नए कानून से मुसलमानों से छीनना चाहते हैं अधिकार-मदनी

यह सिर्फ मुसलमानों के अस्तित्व का सवाल नहीं है, बल्कि उनके अधिकारों का भी मामला है। मौलाना मदनी ने कहा कि वर्तमान सरकार नया वक्फ संशोधन कानून लाकर मुसलमानों से वे अधिकार छीनना चाहती है, जो उन्हें देश के संविधान ने दिए हैं।

जमीयत उलेमा-ए-हिंद इस कानून के खिलाफ अंतिम दम तक कानूनी लड़ाई लड़ेगी और अन्य अल्पसंख्यकों तथा न्यायप्रिय लोगों को साथ लेकर सभी लोकतांत्रिक और संवैधानिक माध्यमों का इस्तेमाल करेगी। उन्होंने कहा कि यह कानून मुसलमानों के साथ एक बड़ा धोखा है। दुख की बात यह भी है कि इस खेल में वे राजनीतिक पार्टियां भी शामिल हैं, जिनकी जीत में मुसलमानों की अहम भूमिका रही है।

मौलाना मदनी ने और क्या कहा?

मौलाना मदनी ने कहा कि आज देश में जो कुछ हो रहा है, उसके लिए वे तथाकथित सेक्युलर पार्टियां भी उतनी ही जिम्मेदार हैं, जो अपने दावों के बावजूद देश को बर्बादी की ओर धकेलने में सांप्रदायिक ताकतों की खुली मदद कर रही हैं। उनका यह रवैया सांप्रदायिक शक्तियों से भी अधिक खतरनाक है।

मौलाना मदनी ने आगे कहा कि किसी भी स्थिति में हमें अपने धर्म, धैर्य, उम्मीद और संकल्प को नहीं छोड़ नहीं मौलाना मदनी ने कहा कि हमने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि यह कानून किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं होगा। हम इस कानून के खिलाफ देश के सभी राज्यों के उच्च न्यायालयों और साथ ही सुप्रीम कोर्ट में भी जायेंगे, क्योंकि हमारे लिए अंतिम सहारा केवल अदालतें ही हैं।

दिल्ली के 1000 आंगनबाड़ी केंद्रों का होगा कायापलट, इसे स्कूलों से जोड़ने की सरकार ने कर ली तैयारी

दिल्ली के आंगनवाड़ी केंद्रों को सुधारने के लिए सरकार ने कमर कस ली है। अगले तीन महीनों के भीतर करीब 1000 आंगनवाड़ी केंद्रों को दिल्ली सरकार के स्कूलों के साथ जोड़ने की तैयारी कर ली है। एकीकृत पोषण सहायता कार्यक्रम पोषण 2.0 के तहत सह-स्थित आंगनवाड़ी केंद्रों को सक्षम आंगनवाड़ी के रूप में भी नामित किया जाएगा।

नईदिल्ली। सुविधाओं और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए अगले तीन महीनों के भीतर लगभग 1,000 आंगनवाड़ी केंद्रों को दिल्ली सरकार के स्कूलों के साथ जोड़ा जाएगा। एकीकृत पोषण सहायता कार्यक्रम पोषण 2.0 के तहत सह-स्थित आंगनवाड़ी केंद्रों को सक्षम आंगनवाड़ी के रूप में भी नामित किया जाएगा।

महिला एवं बाल विकास विभाग के एक अधिकारी ने बताया, ₹इस पहल का उद्देश्य बच्चों के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा और सुविधाएं प्रदान करना है। बच्चों को अपनी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए पर्याप्त स्वास्थ्य सेवा, पोषण, सुरक्षा, सुरक्षा, उत्तरदायी देखभाल और प्रारंभिक शिक्षा के अवसर आवश्यक हैं।₹

अगले तीन महीनों के भीतर दिल्ली सरकार करेगी कार्रवाई

उन्होंने कहा कि इन 1,000 आंगनवाड़ी केंद्रों को अगले तीन महीनों के भीतर दिल्ली सरकार के स्कूलों, एमसीडी स्कूलों और दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड (डीयूएसआईबी) के तहत संचालित स्कूलों में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा, ₹एशियाई विकास बैंक के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए जाएंगे, जो बुनियादी ढांचे के विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।₹ अधिकारी ने कहा, ₹फिलहाल, हमने स्थानांतरण के लिए 153 एमसीडी स्कूलों की पहचान की है और अधिक स्कूलों की पहचान करने की प्रक्रिया जारी है।"

'बच्चों के लिए विभिन्न सुविधाएं विकसित करना आसान'

उन्होंने बताया कि किराए के स्थानों में उचित बुनियादी ढांचे का विकास करना एक चुनौती थी, लेकिन आंगनवाड़ियों को स्कूलों में स्थानांतरित करने के बाद, सुधार करना और बच्चों के लिए विभिन्न सुविधाएं विकसित करना आसान हो जाएगा। उन्होंने कहा, ₹हम उन स्कूलों की पहचान कर रहे हैं जो मौजूदा आंगनवाड़ी केंद्रों के करीब स्थित हैं ताकि बच्चों और कर्मचारियों दोनों के लिए बदलाव आसान हो सके।"

गोमुख के अद्भुत रहस्य ...

गोमुख का मार्ग बहुत विकट है। सड़क तो क्या कोई पगडंडी भी नहीं है। ऊबड़ खाबड़ पड़े हुए पत्थरों पर चलना पड़ता है, वैसे अब कुछ दूर तक मार्ग बन गया है। चीड़वासा से हो कर गोमुख पहुंचा जाता है। बर्फ के गलने से गंगा का जल उत्पन्न होता है, यहाँ जल का वेग अति तीव्र होता है। जिस ग्लेशियर से गंगा जी निकली हैं वह प्रतिवर्ष कम होता जा रहा है। गंगा जी के उद्गम स्थान पर बर्फ का ग्लेशियर लगभग १०० फुट ऊंचा और आधा मील चौड़ा था। इसकी लम्बाई का अनुमान नहीं लगाया जा सकता क्योंकि यहाँ बड़े बड़े पर्वत खड़े हैं जो एक तरफ से बद्रीनाथ से जुड़े हैं तो एक तरफ से केदारनाथ से। यहाँ से बद्रीनाथ 12 मील के लगभग है जो केदारनाथ की अपेक्षा ज्यादा निकट है। यहाँ से केदारनाथ का मार्ग 15 मील है परन्तु इस मार्ग को खोजना अत्यंत कठिन है, परन्तु कोई गुप्त मार्ग यहाँ केदारनाथ के लिए अवश्य है।

गोमुख पर लगातार रिसर्च करने वाले वैज्ञानिकों के अनुसार ग्लेशियर का एक टुकड़ा टूटने के कारण गोमुख बंद हो गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार ऐसा भी नहीं है कि गोमुख के बंद हो जाने से गंगा में पानी का प्रवाह बंद हो गया हो। गोमुख का क्षेत्रफल 28 किलोमीटर में फैला हुआ है। ये समुद्रतल से 3,415 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसमें गंगोत्री के अलावा नन्दनवन, सतरंगी और बामक जैसे कई छोटे-छोटे ग्लेशियर स्थित हैं। अब गंगा की मुख्य धारा नन्दन वन वाले ग्लेशियर से निकल रही है। गोमुख का बंद होना सबको चकित कर रहा है और गंगोत्री पर शोध करने वाले वैज्ञानिक इसकी पड़ताल करने में जुटे हैं।

गोमुख का अर्थ

भोजपत्र के जंगल से होते हुए गोमुख मिलता है, गोमुख के बारे में किवदंतियां प्रसिद्ध हैं कि गंगा की हिमधारा के ऊपर जो पर्वत है इस सबको संयुक्त रूप से मिलाकर गाय के मुख के समान जो आकृति बनी है, इसे ही गोमुख कहते है। कोई कहता है कि जिस स्थान से गंगा जी निकली है वो स्थान गोमुख की भाँति बना हुआ है। परन्तु विचार करें कि वेद में पृथ्वी को गो भी कहा गया है। निघुंट में पृथ्वी के 22 पर्यायवाची दिए गए हैं, इसमें गो शब्द भी आता है। इसलिए गो नाम पृथ्वी का है, और पृथ्वी का मुख फाड़ कर गंगा जी का उद्गम हुआ है। गंगा के ऊपर का भाग आधा मील तक हिम से आच्छादित है। इसे हिम धारा भी कह सकते हैं.परन्तु गंगा का वास्तविक उद्भव स्थान अज्ञात है। जहाँ कही भी गंगा जी का उद्गम हुआ होगा वह स्थान अदृश्य है, प्रत्यक्ष नहीं। गंगा ग्लेशियर के एक तरफ केदारनाथ दूसरी तरफ बद्रीनाथ है, इतना बड़ा ग्लेशियर पर कहीं भी किसी भी नदी के ऊपर नहीं है। बद्रीनाथ की ओर से अलकनंदा और ऋषिगंगा नदी निकलती हैं। ऋषिगंगा नदी की एक धारा कुछ दूर जा कर अदृश्य हो जाती है, कहा जाता है कि ये नदी सिद्धाश्रम होते हुए कैलाश क्षेत्र की तरफ निकल जाती है। गंगोत्री में केदार-गंगा और रूद्र-गंगा का संगम है। पकोड़ी गंगा भी एक मील बाद गंगा से मिलती है। यहाँ से आधे मील की दूरी पर लक्ष्मी वन है जिसे गंगा जी का बागीचा भी कहते हैं। गंगरोत्री मंदिर के पास भगीरथ शिला है यहाँ पर महाराज भगीरथ ने तपस्या की थी। गौरी कुंड का दृश्य अत्यंत दर्शनीय है। यहाँ से बहुत ऊंचाई से गंगा जी कुंड में गिरती है। यहाँ भगवान शंकर का वरण करने के लिए पार्वती जी ने घोर तपस्या की थी। यह स्थान अत्यंत शांत, रमणीय और आध्यात्मिक है।

यहाँ से अदृश्य नगरी सिद्धाश्रम स्तवन तीन-चार मील पर ही स्थित है परन्तु साधारण जनमानस को दिखाई नहीं दे सकता। यहाँ जब वृक्ष नाममात्र के दिखलाई देने लगे तो समझ लें कि सिद्धाश्रम निकट ही है। नंदवन के निकट जिसके उत्तर में गंगा ग्लेशियर है तो दक्षिणी भाग में शिवलिंग पर्वत, इसकी ऊंचार 21 हजार फीट है, इसके नीचे एक नदी है जो केदारनाथ से आती है। सिद्धाश्रम की ऊंचाई लगभग 13 हजार फीट तथा गोमुख की ऊंचाई 12 हजार 9 सौ फीट है।

नंदवन से होकर जाने पर मार्ग में चौखम्बा पर्वत मिलता है। नंदवन से हो कर जाने पर गोमुख और सिद्धाश्रम क्षेत्र सामने ही दिखते हैं। यहाँ का मार्ग अत्यंत दुर्गम और पिसलन भरा है चारों तरफ बर्फ ही बर्फ दिखलाई पड़ती है।

गोमुख जलवायु परिवर्तन के कारण लगातार अपनी जगह पीछे की ओर जा रहा है। वो अब तक 18 किलोमीटर पीछे जा चुका है। गंगा गौ मुख रूपी ग्लेशियर से निकलती है। इस स्थान पर इन्हें भगीरथी भी कहा जाता है। यहां से निकलकर गंगा जब अलकनंदा से मिलती हैं तो वह गंगा कहलाती है। उत्तराखंड के उत्तर काशी जिले में हिमालय के शिखरों से निकलने वाली गंगा की उद्गम स्थल गोमुख से गंगोत्री की दूरी लगभग 18 किलोमीटर है। गंगोत्री स्थित गौड़ी कुण्ड को देखने से लगता है कि शिव जी ने निश्चित ही अपनी विशाल जटाओं में गंगा को बांध लिया है। गौड़ी कुण्ड के इस दिव्य दृश्य को देख कर दर्शक आनंद विभोर हो जाता है। गौमुख को देखने से ऐसा लगता है जैसे देवाधिदेव महादेव ने अपनी स्वर्णिम जटा को गोल में घुमाकर इस गौड़ी कुण्ड में एक लट से गंगा को इस कुण्ड में निचोड़ दिया है। यहाँ से पहाड़ों के सीना को चीरती हुई आगे की ओर बढ़ती हैं और यहाँ इसे भागीरथी के नाम से पुकारा जाता है। वैसे देवप्रयाग में सात नदियों की धारा मिलकर गंगा बनती है। इन सब श्रेष्ठ जीवनदायनी देव नदियों के नाम क्रमशः भागीरथी, जाह्नवी, भीलगंगा, मंदाकिनी, ऋषि गंगा, सरस्वती और अलकनंदा है। ये सभी देव नदियां देव प्रयाग में आकर मिलती हैं।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि गोमुख से निकलने वाली नदी की धारा की दिशा बदल रही है। गोमुख एक ग्लेशियर है और पहले इससे सीधे-सीधे भागीरथी निकलती थीं लेकिन अब इसके बाएं तरफ से निकल रही हैं। गोमुख में एक झील बन गयी है जिसके कारण ये परिवर्तन आया है। इस झील के कारण गंगा लगातार बदली हुई दिशा में बह रही हैं और इसका अंतिम परिणाम गोमुख के नष्ट होने के रूप में हो सकता है।

बृहस्पतिवार को बाल ना धोने का रहस्य

हम अक्सर अपने घरो में देखते हैं या सुनते हैं कि जब भी कभी बृहस्पतिवार का दिन होता हैं और उस दिन अगर किसी कारणवश बालों को धोना पड़ जाये तो घर के बड़े जैसे दादी-नानी और मम्मी तुरंत मना कर देते हैं कि बृहस्पतिवार को बाल नहीं धोने चाहिये। आजकल की युवा पीढ़ी पुराने रीती-रिवाज,परम्पराओं को नहीं मानते हैं। कहते हैं उस दिन तो भैस भी अपना सिर पानी में नहीं डुबोती हैं। जब एक जानवर ऐसा कर सकती हैं फिर इंसान क्यों नहीं। पर क्या कभी आपने सोचा हैं कि आखिर ऐसा क्या हैं जो बृहस्पतिवार को बाल नहीं धोने चाहिए?

अगर आप ये बात नहीं जानते हैं तो आपको बता दे कि हिन्दू धर्म के विभिन्न देवताओं में से एक देवता बृहस्पति भी हैं, जिन्हें खास रूप से गुरुवार के दिन ही पूजा जाता है। ऐसी मान्यता है कि यदि गुरुवार के दिन बाल धो लिए जाएं तो ऐसे में भगवान बृहस्पति की कृपा उस जातक से उठ जाती है। उसकी ज़िंदगी में धन की हानि होती है एवं साथ ही सुख-समृद्धि के क्षेत्र में भी वह असफलता ही पाता है। लेकिन कुछ लोग इस तथ्य को महज़ अंधविश्वास मानते हैं। परन्तु इस तथ्य के पीछे छिपी कहानी इसे सही साबित करती है।

कहते हैं एक बार एक काफी अमीर शख़्स हुआ करते थे। वे और उनकी पत्नी एक सुखी जीवन व्यतीत करते थे, उन्हें किसी प्रकार की कोई आर्थिक कमी नहीं थी। लेकिन वह महिला दान-पुण्य के मामले में थोड़ी कुटिल थी। एक दिन उनके दरवाज़े पर एक साधु भिक्षा मांगने आए। उस समय उस महिला के पति घर पर नहीं थे तो उसने साधु को दरवाज़े से यह कहकर लौट जाने से कहा कि वह घर के कार्यों में कुछ व्यस्त है, कृपा करके वह कुछ क्षण बाद दोबारा आएं। लेकिन यह दृश्य एक बार नहीं कई बार दोहराया गया। रोज़ाना वह साधु वहां आते और भिक्षा मांगते, लेकिन हमेशा की तरह वह स्त्री उन्हें वही बहाना बनाकर जाने को कहती। तो एक दिन साधु ने पूछ ही लिया कि बताएं आप कब कार्यों को छोड़ मुझे दान देंगी, तो जवाब में महिला ने कहा कि जब तक मेरे पास ढेरों कार्य हैं, मैं तुम्हें भीक्षा नहीं दे सकती। तो साधु ने उत्तर में कहा कि प्रत्येक गुरुवार को अपने बाल धो लो, तुम इन सभी कार्यों से जल्द ही मुक्त हो जाओगी।

उस महिला ने साधु की इस सलाह के पीछे छिपी गहराई पर गौर तो नहीं किया, लेकिन नियमित रूप से हर गुरुवार को बाल धोना आरंभ कर दिया। और धीरे-धीरे उनकी सारी संपत्ति पानी के बहाव की तरह खत्म होती चली गई। वे इतने गरीब हो गए कि उनके पास खाने को एक वक्त की रोटी भी नहीं थी। तभी एक दिन फिर दोबारा वह साधु वहां आया और भिक्षा मांगी, तो महिला ने बताया कि उनके पास स्वयं के खाने के लिए भी भोजन नहीं है तो वह उन्हें क्या खिलाएगी। बाद में पति-पत्नी दोनों को ज्ञात हुआ कि वह साधु कोई और नहीं वरन्‌स्वयं भगवान बृहस्पति थे, जो उन्हें दान-पुण्य का पाठ पढ़ाने के लिए वहां आए थे। इसी कहानी के आधार पर यह मान्यता उत्पन्न हो गई कि कभी भूलकर भी गुरुवार को अपने केसों में पानी ना डालें। साथ ही भगवान बृहस्पति को प्रसन्न करने के लिए गुरुवार को पीले वस्त्र धारण करें, पीले फूलों से उनकी पूजा करें एवं भोजन में पीले रंग के पकवान ही बनाएं।

हमारे सनातन धर्म के प्रत्येक नियम शास्त्रोक्त होते है इनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी हमे लाभ मिलता है।

बृहस्पतिवार हफ्ते में धर्म का दिन माना जाता है। इस दिन देव गुरु बृहस्पति और भगवान्‌विष्णु की पूजा की जाती है। ब्रह्मांड के सभी नौ ग्रहों में से गुरु (बृहस्पति) सबसे भारी ग्रह है। इसीलिए इस दिन हर उस काम को करने से मना किया जाता है जिससे शरीर या घर में हल्का महसूस हो। क्योंकि ऐसा करने से ग्रह भी हल्का हो जाता है जिसका दुष्प्रभाव परिवार और शरीर को ही झेलना पड़ता है। गुरुवार के दिन महिलाओं को बाल नहीं धोने का कारण भी शास्त्र और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लाभप्रद है। क्योंकि स्त्रियों की जन्मकुंडली में बृहस्पति पति और संतान का कारक होता है। और अकेले बृहस्पति ग्रह के खराब होने के पति और संतान पर संकट आ सकता है। गुरुवार के दिन बाल धोना बृहस्पति को कमजोर करता है जिससे उसके शुभ प्रभावों में कमी आ जाती है। इसीलिए वीरवार के दिन बाल नहीं धोने चाहिए। और न ही कटवाने चाहिए। इससे पति और संतान के जीवन पर प्रभाव पड़ेगा और उनकी उन्नति बाधित होगी।

देवी मां के नौ वाहनों का अर्थ

1- सिंह:- देवी दुर्गा का वाहन सिंह बल का प्रतीक है माता दुर्गा के उपासक शक्तिशाली होते है और शत्रुओ का सामना करने में समर्थ होते है !

२ - हंस:- देवी सरस्वती का वाहन हंस है मोती युगना उसकी विशेषता है इन गुणों को अपनाकर ब्रह्म पद पाया जाता है !

३- व्याघ्र:- यह स्फूर्ति व निरंतर कर्म करने का प्रतीक है अत: माता देवी कुछ विशिष्ट रूपों में बाघ की सवारी करती है !

4 - वर्षभ:- बैल ब्रह्म चर्य व संयम का प्रतीक है यह बल व सकारात्म ऊर्जा की प्राप्ति करता है इसलिए न केवल भगवती शैलपुत्री अपितु भगवान शिव नंदी की ही सवारी करते है !

5 - गरुड़:- भगवती लक्ष्मी जब भगवान नारायण के साथ विचरण करती है तो वे विष्णु वाहन गरुड़ पर विराजमान होती है गरुड़ त्याग व वैराग्य के प्रतीक है इन्हें पक्षीयो का राजा माना जाता है !

६ - मयूर:- भगवान कर्तिकेय की परम शक्ति कर्तिकेय मोर पर विराजित है मोर सौन्दर्य, लावण्य, स्नेह, व योग शक्ति का प्रतीक है !

7 - उल्लू:- माता लक्ष्मी का वाहन उल्लू आध्यात्मिक दृष्टि से अंधता का प्रतीक है सांसारिक जीवन में लक्ष्मी यानि धन दौलत के पीछे भागने वाला इंसान आत्मज्ञान रूपी सूर्य को नहीं देख पाता है !

8 - गदर्भ:- यह तमोगुण का प्रतीक है इसलिए भगवती कालरात्रि ने इसे अपने वाहन के रूप में चुना है माता शीतला का वाहन भी गधा ही होता है !

9 - हाथी:- देवी विभिन्न रूपों में हाथी पर विराजमान होती है अनेक लोकदेवीया हाथी पर बैठती है तंत्र शास्त्र के अनुसार देवी का एक नाम गजलक्ष्मी भी है !

चेतना की सात अवस्थाएँ

1. जागृति -ठीक-ठीक वर्तमान में रहना ही चेतना की जागृत अवस्था है। जब हम भविष्य की कोई योजना बना रहे होते हैं, तो हम कल्पना-लोक में होते हैं। कल्पना का यह लोक यथार्थ नहीं होता। यह एक प्रकार का स्वप्न-लोक ही है। जब हम अतीत की किसी यद् में खोए हुए रहते हैं, तो हम स्मृति-लोक में होते हैं। यह भी एक दूसरे प्रकार का स्वप्न-लोक है तो, वर्तमान में रहना ही, ठीक-ठीक वर्तमान में रहना ही चेतना की जागृत अवस्था है।

२. स्वप्न------ स्वप्न की चेतना एक घाल-मेली चेतना है।जागृति और निद्रा के बीच की अवस्था, थोड़े-थोड़े जागे, थोड़े-थोड़े सोए से। अस्पष्ट अनुभवों का घाल-मेल रहता है।

*. सुषुप्ति----- सुषुप्ति की चेतना निष्क्रिय अवस्था है, चेतना की यह अवस्था हमारी इन्द्रियों के विश्राम की अवस्था है। इस अवस्था में हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ और हमारी कर्मेन्द्रियाँ अपनी सामान्य गतिविधि को रोक कर विश्राम में चली जाती हैं। यह अवस्था सुख-दु:ख के अनुभवों से मुक्त होती है। किसी प्रकार के कष्ट या किसी प्रकार की पीड़ा का अनुभव नहीं होता। इस अवस्था में न तो क्रिया होती है, न क्रिया की संभावना।

4. तुरीय-तुरीय का अर्थ होता है "चौथी"। चेतना की चौथी अवस्था को तुरीय चेतना कहते हैं। इसका कोई गुण नहीं होने के कारण इसका कोई नाम नहीं है। इसके बारे में कुछ कहने की सुविधा के लिए इसकी संख्या से संबोधित कर लेते हैं। नाम होगा, तो गुण होगा नाम होगा तो रूप भी होगा। चेतना की इस अवस्था का न तो कोई गुण है न ही कोई रूप।यह निर्गुण है, निराकार है। यह सिनेमा के सफ़ेद पर्दे जैसी है। जैसे सिनेमा के पर्दे पर प्रोजेक्टर से आप जो कुछ भी प्रोजेक्ट करो, पर्दा उसे हू-ब-हू प्रक्षेपित कर देता है। ठीक उसी तरह जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि चेतनाएँ तुरीय के पर्दे पर ही घटित होती हैं, और जैसी घटित होती हैं, तुरीय चेतना उन्हें हू-ब-हू, हमारे अनुभव को प्रक्षेपित कर देती है। यह आधार-चेतना है। इसे समाधि की चेतना भी कहते हैं। यहीं से शुरू होती है हमारी आध्यात्मिक यात्रा।

5. तुरीयातीत-चेतना की पाँचवी अवस्था : तुरीय के बाद वाली, यह अवस्था जागृत, स्वप्ना, सुषुप्ति आदि दैनिक व्यवहार में आने वाली चेतनाओं में तुरीय का अनुभव स्थाई हो जाने के बाद आती है। चेतना की इसी अवस्था को प्राप्त व्यक्ति को योगी या योगस्थ कहा जाता है। कर्म-प्रधान जीवन के लिए चेतना की यह अवस्था सर्वाधिक उपयोगी अवस्था है। इस अवस्था में अधिष्ठित व्यक्ति निरंतर कर्म करते हुए भी थकता नहीं। सर्वोच्च प्रभावी और अथक कर्म इसी अवस्था में संभव हो पाता है। योगेश्वर श्री कृष्ण ने अपने शिष्य अर्जुन को इसी अवस्था में कर्म करने का उपदेश करते हुए कहा था "योगस्थ: कुरु कर्माणि" योग में स्थित हो कर कर्म करो! इस अवस्था में काम और आराम एक ही बिंदु पर मिल जाते हैं। काम और आराम एक साथ हो जाए तो आदमी थके ही क्यों? अध्यात्म की भाषा में समझें तो कहेंगे कि "कर्म तो होगा परन्तु संस्कार नहीं बनेगा।" इस अवस्था को प्राप्त कर लिया, तो हो गए न जीवन रहते जीवन-मुक्त। चेतना की तुरीयातीत अवस्था को ही सहज-समाधि भी कहते हैं।

6. भगवत चेतना------- बस मैं और तुम वाली चेतना।चेतना की इस अवस्था में संसार लुप्त हो जाता है, बस भक्त और भगवान शेष रह जाते हैं। चेतना की इसी अवस्था में वास्तविक भक्ति का उदय होता है। भक्त को सारा संसार भगवन-मय ही दिखाई पड़ने लगता है। इसी अवस्था को प्राप्त कर मीरा ने कहा था "जित देखौं तित श्याम-मई है"। तुरीयातीत चेतना अवस्था में सभी सांसारिक कर्तव्य पूर्ण कर लेने के बाद भगवत चेतना की अवस्था बिना किसी साधना के प्राप्त हो जाती है। इसके बाद का विकास सहज, स्वाभाविक और निस्प्रयास हो जाता है।

7. ब्राह्मी-चेतना- एकत्व की चेतना, चेतना की इस अवस्था में भक्त और भगवन का भेद भी ख़त्म हो जाता है। दोनों मिल कर एक ही हो जाते हैं। इस अवस्था में भेद-दृष्टि का लोप हो जाता है। अवस्था में साधक कहता है "अहम् ब्रह्मास्मि" मैं ही ब्रह्म हूँ।

शिक्षा का संकट: नींव को बचाने की जंग, जब शिक्षक गायब, तो ज्ञान का दीपक कौन जलाएगा?

कल्पना करें—एक बच्चा सुबह-सुबह स्कूल की ओर चल पड़ता है, कंधे पर बस्ता, मन में सपने और आँखों में चमक। लेकिन स्कूल पहुँचते ही उसका दिल टूट जाता है—दरवाजे पर ताला, शिक्षक गायब, और चारों ओर सन्नाटा। यह कोई कहानी नहीं, बल्कि मध्यप्रदेश के उमरिया जिले की हकीकत है, जो हाल ही में कलेक्टर के औचक निरीक्षण में सामने आई। शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है, लेकिन जब यह रीढ़ लापरवाही की मार से कमजोर पड़ने लगे, तो क्या हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें? उमरिया की यह घटना सिर्फ एक जिले का दर्द नहीं, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र के लिए एक जोरदार चेतावनी है।

जब उमरिया के कलेक्टर ने सरकारी स्कूलों का औचक दौरा किया, तो जो देखा, वह दिल दहला देने वाला था। कहीं शिक्षक बिना बताए गायब थे, तो कहीं स्कूलों के दरवाजे बच्चों के लिए बंद मिले। यह सिर्फ ड्यूटी से चूक नहीं, बल्कि उन मासूम सपनों के साथ विश्वासघात था, जो हर बच्चा स्कूल लेकर आता है। कलेक्टर ने तुरंत कड़ा रुख अपनाया—दो शिक्षकों को निलंबित कर दिया गया और 29 की वेतन वृद्धि पर रोक लगा दी गई। यह सख्ती जरूरी थी, लेकिन क्या यह समस्या सिर्फ उमरिया की है? मध्यप्रदेश के हर कोने में अगर झाँकें, तो यह लापरवाही एक गहरे संकट की ओर इशारा करती है।

मध्यप्रदेश में सरकारी स्कूलों को चमकाने के लिए सरकार ने ढेरों योजनाएँ शुरू कीं—नई इमारतें, मुफ्त किताबें, मिड-डे मील। लेकिन जब जमीनी हकीकत सामने आती है, तो सारा ढाँचा खोखला नजर आता है। शिक्षक समय पर नहीं आते, स्कूल प्रबंधन सोया रहता है, और शिक्षा विभाग की निगरानी बस कागजों तक सीमित है। प्रवेश उत्सव जैसे आयोजन, जो बच्चों को स्कूल से जोड़ने के लिए होते हैं, महज औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। नतीजा सामने है—बच्चों की उपस्थिति गिर रही है, ड्रॉपआउट की दर बढ़ रही है, और शिक्षा की गुणवत्ता धूल चाट रही है। योजनाएँ तो हैं, पर जब तक शिक्षकों और प्रशासन की जवाबदेही तय नहीं होगी, ये सब बेकार हैं।

एक पल को रुकें और सोचें—वह बच्चा जो स्कूल के लिए मीलों पैदल चलता है, धूप-धूल में अपने सपनों को सींचता है, उसे क्या मिलता है? एक खाली कक्षा, एक अनुपस्थित शिक्षक और टूटती उम्मीदें। मध्यप्रदेश के सरकारी स्कूलों पर ज्यादातर गरीब परिवारों के बच्चे निर्भर हैं। उनके लिए स्कूल सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं, बल्कि जिंदगी बदलने का एकमात्र रास्ता है। लेकिन जब शिक्षक ही अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ लें, तो ये बच्चे कहाँ जाएँ? यह सिर्फ शिक्षा का संकट नहीं, बल्कि लाखों मासूमों के भविष्य पर लगा ग्रहण है। हर गायब शिक्षक के साथ एक बच्चे का सपना मरता है—क्या हम इसे यूँ ही देखते रहेंगे?

अगर मध्यप्रदेश की शिक्षा को बचाना है, तो अब नरमी नहीं, सख्ती चाहिए। उमरिया में हुई कार्रवाई इसकी मिसाल है—जब कड़ा कदम उठाया गया, तो संदेश साफ गया कि लापरवाही अब बर्दाश्त नहीं होगी। लेकिन यह काफी नहीं है। हर जिले में नियमित औचक निरीक्षण होने चाहिए। डिजिटल मॉनिटरिंग जैसे बायोमेट्रिक सिस्टम से शिक्षकों की उपस्थिति पर नजर रखी जा सकती है। स्कूलों में बुनियादी सुविधाएँ—साफ पानी, शौचालय, बिजली—को अनिवार्य करना होगा। साथ ही, शिक्षकों को न सिर्फ सजा, बल्कि बेहतर प्रशिक्षण और प्रोत्साहन भी देना होगा, ताकि वे ड्यूटी को बोझ नहीं, बल्कि जुनून समझें। यह सिर्फ नियम लागू करने की बात नहीं, बल्कि बच्चों के भविष्य को प्राथमिकता देने का वादा है।

उमरिया की यह कार्रवाई एक चिंगारी है, जो पूरे प्रदेश में बदलाव की आग जला सकती है। अगर हर जिले में ऐसी सख्ती और पारदर्शिता आए, तो सरकारी स्कूल फिर से ज्ञान के मंदिर बन सकते हैं। यह सिर्फ प्रशासन का काम नहीं, बल्कि समाज की साझा जिम्मेदारी है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कोई भी बच्चा स्कूल से खाली हाथ न लौटे। उमरिया ने एक मॉडल पेश किया है—अब इसे पूरे मध्यप्रदेश में लागू करने का वक्त है। जब हर स्कूल में शिक्षक मौजूद हों, हर कक्षा में ज्ञान की रोशनी हो, तभी हम कह सकेंगे कि हमने अपनी नींव बचा ली।

शिक्षा महज किताबों के पन्ने पलटना नहीं, बल्कि हर बच्चे के मन में छिपे सपनों को पंख देना है—उन सपनों को, जो आसमान छूने की हिम्मत रखते हैं। उमरिया की घटना ने हमें नींद से झटका देकर जगाया है—अब आँखें मूँदे रहने का वक्त नहीं, बल्कि उठ खड़े होने का समय है। सख्त अनुशासन की डोर, निगरानी का मजबूत जाल और बच्चों को दिल से प्राथमिकता देकर उठाया गया हर कदम ही इस डूबते तंत्र को बचा सकता है। आइए, आज एक पक्का इरादा करें—हर बच्चे को वह शिक्षा दें, जो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है, जो उसके सपनों को हकीकत में बदल सके। क्योंकि जब शिक्षा का किला अडिग होगा, तभी मध्यप्रदेश का भविष्य सुनहरे सूरज सा दमकेगा। यह एक जुनून भरी पुकार है—शिक्षा को जिंदा रखें, बच्चों के सपनों को उड़ने दें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जिला रोजगार कार्यालय सिरसा के अंदर डीडीओ के हस्ताक्षरों से हुआ फर्जीवाड़ा फिर भी रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा दी गई डबल प्रमोशन

परिवहन विशेष न्यूज

सिरसा। जिला रोजगार कार्यालय सिरसा के अंदर सक्षम योजना स्कीम के अंदर बड़े पैमाने पर फर्जीवाड़ा हुआ है जो डीडीओ के हस्ताक्षरों से संभव हुआ है लेकिन अधिकारियों द्वारा अपने बचाव के लिए एक क्लर्क को दोषी बनाया गया है, जो कि यह फर्जीवाड़ा 14 लाख 22 हजार रुपए का सामने आया है

जिला रोजगार कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों को एक नवनियुक्त क्लर्क पर कैसे था इतना भरोसा सूत्रों से पता चला है कि क्लर्क का विभागीय टेस्ट भी पास नहीं था अधिकारी अपने बचाव के लिए केवल एक क्लर्क के ऊपर ही दोष मंड रहे हैं.

आम जनता को नहीं ऐसे अधिकारियों की जरूरत

बड़ी हैरानी की बात है कि सक्षम योजना स्कीम के अंदर पोर्टल में ऐसा ऑप्शन दिया हुआ है की सक्षम योजना का कार्यालय का पोर्टल अधिकारी के फोन के ऊपर ओटीपी जाने के बाद ओटीपी डालने की वजह से खुलता है. ऐसे में एक कलर्क को ही दोषी कैसे ठहराया जा सकता है.

अधिकारियों की नाक के नीचे इतना बड़ा घोटाला हो जाए यह अधिकारियों की मिलीभक्गत के बिना संभव नहीं है

अधिकारियों की काबिलियत पर भी उठ रहे हैं सवाल

इतना बडा घोटाला सामने आने के बावजूद अधिकारियों की काबिलियत पर भी सवाल खड़े होना लाजमी है. अधिकारी है अपनी ड्यूटी के प्रति लापरवाह.

जिला रोजगार कार्यालय सिरसा के अंदर इतना बड़ा घोटाला सामने आने के बाद रोजगार विभाग हरियाणा की कमेटी द्वारा जो जांच की गई थी उस जांच में भी कमेटी दोनों अधिकारियों से पहले से ही मिली हुई थी.

हरियाणा राज्य के बाहर से हो जांच अधिकारी नियुक्त

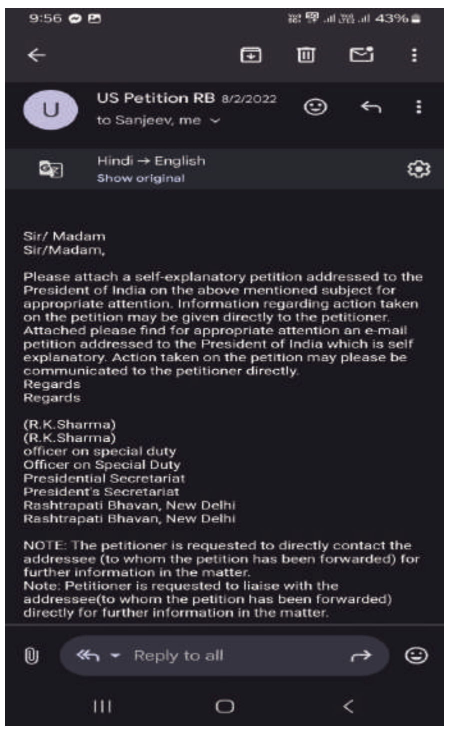

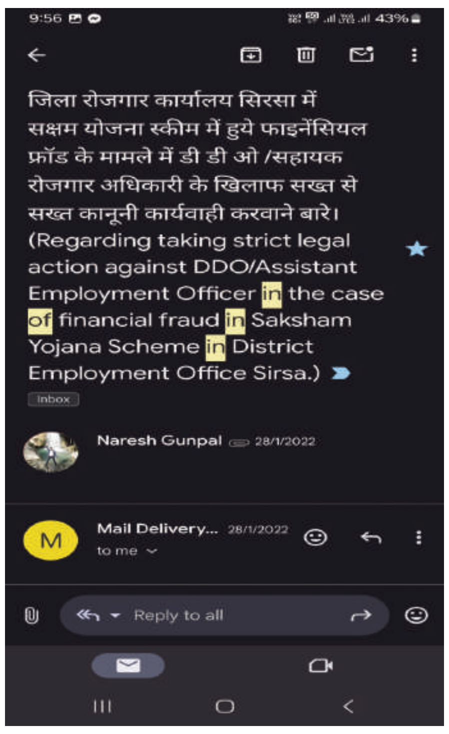

निष्पक्ष जांच के लिए तो हरियाणा राज्य से बाहर के अधिकारियों को जांच अधिकारी नियुक्त किया जाना चाहिए तथा इस मामले में सीबीआई को केस सौपा जाना चाहिए ताकि अधिकारियों की असलियत जनता के सामने आ सके क्योंकि इन अधिकारियों के अंदर जातिवाद कूट-कूट कर भरा हुआ है इसलिए हरियाणा सरकार से यह उम्मीद नहीं की वह इन अधिकारियों की निष्पक्ष जांच करवा पाए.

जांच कमेटी की जांच पर भी खड़े होते हैं सवाल

रोजगार निदेशालय हरियाणा पंचकूला के उच्च अधिकारियों द्वारा भी नहीं की गई निष्पक्ष जांच रोजगार निदेशालय द्वारा श्रीमती सोनम गोयल मण्डल रोजगार अधिकारी रोहतक को किया गया था जांच अधिकारी नियुक्त

उचित माध्यम द्वारा नहीं किया गया पत्राचार

मामले को छिपाने के लिए जिला रोजगार सरस के अधिकारियों द्वारा उचित माध्यम द्वारा रोजगार निदेशालय पंचकूला में पत्राचार नहीं किया गया है इसकी भी निष्पक्ष जांच करवाई जानी सर्वथा उचित है

आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल का महामहिम राष्ट्रपति जी, मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार, मंत्री अनिल विज को अधिकारियों पर भी उचित कार्रवाई ट्वीट किया है

जिला रोजगार कार्यालय सिरसा के अधिकारियों के खिलाफ महामहिम राष्ट्रपति कार्यालय से भी जांच के लिए हो चुके हैं आदेश जारी

नरेश गुणपाल आरटीआई एक्टिविस्ट

तुम्हें क्या मालूम ,?

लिख – लिख के,
कई बार मिटाया है ,
तेरा नाम ,
तुझे क्या मालूम ,
हर बार जख्म नया ,
एक बनाया है ,
तुझे क्या मालूम ।
दो घूंट ही मिल जाए,
साकी तो इनायत होगी ,
तपती धूप में ,
जुल्फों का असर ,
क्या है , तुझे क्या मालूम ।
तेरा अक्स मेरी आंखों में ,
उभर आया है ,
कैसेडरता हूंजमाने से,
तुम्हें क्या मालूम ?
वक्त ठहरा है अब भी,
तेरे इंतजार में आजा ,
दो घड़ी की है मोहलत ,
मेरे पास तुम्हें क्या मालूम ,
चीख उठा दिल ,
टूट गई हसरतें सारी ,
दर्द की शिद्दत क्या होती है ,
तुम्हें क्या मालूम ,
मुझको मिला क्या ,
सिला मुहब्बत का
₹ मुश्ताक़₹
दिन भी घायल ,
रात भी पागल ,
तुम्हें क्या मालूम ,

डॉ . मुश्ताक़ अहमद शाह
'सहज़' हरदा मध्यप्रदेश

भ्रष्टाचार पर लगाम और पारदर्शिता की नई पहल

वक्फ संशोधन बिल 2024 : पारदर्शिता और जवाबदेही की ओर एक क्रांतिकारी कदम

वक्फ संशोधन बिल 2024 लोकसभा में पारित हुआ, जिसका उद्देश्य वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना है। भारत में वक्फ बोर्ड के अंतर्गत लाखों एकड़ भूमि आती है, लेकिन वर्षों से इसके दुरुपयोग, भ्रष्टाचार और मनमानी के आरोप लगते रहे हैं। यह बिल वक्फ बोर्डों की मनमानी पर रोक लगाने, संपत्तियों का सही उपयोग सुनिश्चित करने और कानूनी विवादों के समाधान में मदद करेगा। हालांकि, कुछ चुनौतियाँ भी सामने आ सकती हैं, जैसे वक्फ बोर्डों का विरोध और नए तंत्र का प्रभावी क्रियान्वयन। यदि यह कानून प्रभावी रूप से लागू होता है, तो यह वक्फ संपत्तियों से जुड़े विवादों को कम करने और पारदर्शी प्रशासन सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

प्रियंका सौरभ

भारत में वक्फ संपत्तियों से जुड़े विवाद और भ्रष्टाचार के आरोप लंबे समय से चर्चा का विषय रहे हैं। देश में लाखों एकड़ भूमि वक्फ बोर्ड के अंतर्गत आती है, जिसका उद्देश्य धार्मिक और सामाजिक कल्याण कार्यों के लिए संपत्तियों का उपयोग करना है। हालांकि, समय के साथ यह देखा गया कि वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन पूरी तरह पारदर्शी नहीं रहा, और कई मामलों में अनियमितताओं, भ्रष्टाचार और मनमानी के आरोप सामने आए हैं।

लोकसभा में हाल ही में पारित वक्फ संशोधन बिल 2024 से उम्मीद की जा रही है कि यह बिल वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता बढ़ाएगा और आम नागरिकों, खासकर उन किरायेदारों को राहत प्रदान करेगा, जो वर्षों से इन संपत्तियों में रह रहे हैं या उनसे जुड़े कानूनी विवादों का सामना कर रहे हैं।

वक्फ संपत्तियों से जुड़े विवाद और समस्याएँ

भारत में वक्फ अधिनियम 1995 के तहत वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन किया जाता है। इस कानून के तहत बनाई गई वक्फ बोर्डों को अत्यधिक शक्तियाँ प्रदान की गईं, जिससे वे अपने अधीन संपत्तियों का नियंत्रण कर सकें। हालाँकि, इस प्रबंधन में पारदर्शिता की कमी और मनमानी फैसलों के चलते कई विवाद उत्पन्न हुए। वक्फ बोर्ड के पास मौजूद कानूनी अधिकारों के कारण कई स्थानों पर उनकी कार्यप्रणाली पर सवाल उठे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, कई मामलों में वक्फ बोर्ड अधिकारियों द्वारा संपत्तियों को मनमाने ढंग से लीज़ पर देना, कब्जे खाली करवाना, और बिना उचित प्रक्रिया के संपत्ति बेचने जैसे फैसले लिए गए हैं। हजारों किरायेदार दशकों से वक्फ संपत्तियों में रह रहे हैं। लेकिन कई बार वक्फ बोर्डों ने पुराने किरायेदारों को कानूनी सुरक्षा प्रदान नहीं की, बल्कि उन्हें संपत्तियों से बाहर निकालने की कोशिश की। ऐसे मामलों में कई परिवारों को कानूनी लड़ाइयों में उलझना पड़ा, और कुछ मामलों में जबरन बेदखली भी देखी गई। वक्फ संपत्तियों की खरीद, बिक्री, और लीज़ में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की शिकायतें आई हैं। कई रिपोर्टें बताती हैं कि वक्फ संपत्तियों को बाजार मूल्य से बहुत कम कीमतों पर बेचा गया या फिर बिना उचित प्रक्रिया के इसे राजनीतिक और व्यावसायिक हितधारकों को सौंप दिया गया।

वर्तमान वक्फ कानून में कई अस्पष्टताएँ थीं, जिससे कानूनी विवाद बढ़ते गए। वक्फ संपत्तियों से जुड़े मामलों को सुलझाने के लिए कोई स्पष्ट कानूनी प्रक्रिया नहीं थी, जिससे विवाद लंबित रह जाते थे और पीड़ित पक्ष को न्याय पाने में वर्षों लग जाते थे।

वक्फ संशोधन बिल 2024: क्या हैं प्रमुख बदलाव?

लोकसभा में पारित वक्फ संशोधन बिल 2024 का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को पारदर्शी और जवाबदेह बनाना है। इस बिल में यह प्रावधान किया गया है कि वक्फ बोर्ड की कार्यप्रणाली की निगरानी और सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया जाएगा, ताकि संपत्तियों के दुरुपयोग को रोका जा सके।

संशोधन के तहत पुराने किरायेदारों को अधिक कानूनी सुरक्षा दी जाएगी, जिससे उन्हें जबरन निष्कासन का सामना न करना पड़े। वक्फ संपत्तियों की लीज़, बिक्री, या हस्तांतरण में पारदर्शिता लाने के लिए नई निगरानी एजेंसियाँ बनाई जाएँगी। इसके अलावा, सभी सौदों की डिजिटल रिकॉर्डिंग और पारदर्शी ऑडिटिंग की व्यवस्था की जाएगी। वक्फ संपत्तियों से जुड़े कानूनी विवादों के निपटारे के लिए विशेष न्यायाधिकरण बनाए जाने का प्रस्ताव है। इससे मामलों का त्वरित समाधान हो सकेगा और आम नागरिकों को लंबे समय तक अदालतों में भटकना नहीं पड़ेगा।

संशोधन बिल के संभावित प्रभाव

वक्फ संशोधन बिल 2024 के लागू होने से भारत में वक्फ संपत्तियों से जुड़े विवादों को सुलझाने और पारदर्शिता बढ़ाने में मदद मिलेगी। यह संशोधन सुनिश्चित करेगा कि वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में किसी भी प्रकार की धांधली न हो और सभी लेन-देन को सार्वजनिक किया जाए। नए कानून के तहत पुराने किरायेदारों को सुरक्षा मिलेगी और उनके निष्कासन की प्रक्रिया को कानूनी दायरे में लाया जाएगा। नए निगरानी और ऑडिट तंत्र से वक्फ संपत्तियों से जुड़े घोटालों को रोका जा सकेगा। न्यायाधिकरणों के माध्यम से वक्फ संपत्तियों से जुड़े विवादों का त्वरित समाधान किया जा सकेगा।

संभावित चुनौतियाँ

हालाँकि, इस बिल के प्रभावी कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी हो सकती हैं; कुछ वक्फ बोर्ड इस संशोधन का विरोध कर सकते हैं, क्योंकि इससे उनकी शक्ति और स्वायत्तता पर प्रभाव पड़ सकता है। निगरानी और ऑडिटिंग तंत्र को प्रभावी रूप से लागू करने में समय लग सकता है। संभावना है कि कुछ समूह इस संशोधन को अदालत में चुनौती दे सकते हैं, जिससे इसके क्रियान्वयन में देरी हो सकती है।

वक्फ संशोधन बिल 2024 भारत में वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को पारदर्शी और न्यायसंगत बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। यदि इस कानून को प्रभावी रूप से लागू किया गया, तो यह न केवल वक्फ संपत्तियों के सही उपयोग को सुनिश्चित करेगा, बल्कि भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगाएगा।

हालांकि, यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस कानून को व्यवहारिक रूप से कैसे लागू किया जाता है और सरकार इस पर किस तरह की निगरानी रखती है। यदि सभी प्रावधान सही तरीके से अमल में लाए जाते हैं, तो यह बिल वक्फ संपत्तियों के प्रशासन को एक नई दिशा देने में सक्षम होगा।

गलत इंजेक्शन से कानपुर में भाजपा नेत्री की मौत, बवाल, जांच के आदेश

सुनील बाजपेई

कानपुर। दो द्वारा लगाए गए गलत इंजेक्शन नेयहां की एक भाजपा नेता की जान ले ली। घटना के विरोध में परिजनों ने जमकर बवाल भी किया। मौके पर पुलिस भी पहुंची। वहीं घटना की जांच के भी आदेश दिए गए हैं।

प्राप्त विवरण के मुताबिक आवास विकास निवासी सुनीता शुक्ला (56 साल) भाजपा की वरिष्ठ नेत्री और अंतरराष्ट्रीय महिला महासभा की पदाधिकारी थीं। पैर में दर्द होने पर उन्हें उनकी दोनों बेटियां, तृप्ति और ऋचा उन्हें एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचीं थीं। मौके पर पहुंची पुलिस को बेटी ऋचा ने बताया कि मेरी मां के पैर में मामूली दर्द था, लेकिन अस्पताल संचालक ने उन्हें आई सी यू में भर्ती कर लिया। और देर रात 10:30 बजे कंपाउंडर ने उन्हें एक इंजेक्शन लगाया। इसके बाद उनकी हालत बिगड़ गई

बेटियों के मुताबिक जब उन्होंने स्टाफ और अस्पताल के ऑनर से इस बारे में बात की, तो उन्हें धक्का देकर वार्ड से बाहर निकाल दिया। इंजेक्शन के करीब 10 मिनट बाद भाजपा नेत्री सुनीता शुक्ला की तड़प-तड़प कर मौत हो गई।

इस बारे में बेटियों का आरोप है कि पैसे कमाने के चक्कर में अस्पताल प्रबंधन ने उन्हें आई सी यू में भर्ती किया। यहां कंपाउंडर ने उनको गलत इंजेक्शन लगा दिया, जिससे उनकी तबीयत बिगड़ गई। 10 मिनट तक तड़पती रहीं, फिर दम तोड़ दिया।

कल्याणपुर थाना क्षेत्र के एक प्राइवेट नर्सिंग होम में हुई इस घटना के बारे में बेटियों का कहना है कि अस्पताल ने उन्हें मां की डेडबॉडी को जिंदा बताकर सौंप दिया। जब हमने विरोध किया तो अस्पताल संचालक ने स्टाफ के साथ मिलकर मारपीट और बदसलूकी की। इसके बाद इस घटना के विरोध में हंगामा भी किया गया। मामले की शिकायत बड़े अधिकारियों से भी की गई है, जिसके बाद जांच के आदेश दिए गए हैं।

वक्फ संशोधन बिल 2025 की लड़ाई ,अंजाम तक आई- लोकसभा में अर्ली मॉर्निंग 288/232 से बिल पारित

लोकसभा में लगातार 12 घंटे की बहस सुनने से लेकर अर्ली मॉर्निंग 4 बजे यह रिपोर्ट बनाना मेरे लिए रोमांचित अनुभव रहा– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लोकतंत्र के मंदिर रूपी संसद व उच्च सदन राज्यसभा में किसी महत्वपूर्ण विधेयक पर बहस कर उसमें संशोधन से लेकर वोटिंग तक पर पूरी प्रक्रिया को भारत सहित पूरे विश्व नें ध्यान से देखा व सुना है, जिसमें महिला आरक्षण विधेयक बिल, जीएसटी बिल, आर्टिकल 370 बिल सहित अनेकों बिलो को हमने लोकसभा के दोनों सदनों से पास होते हमने देखा है। आज यह चर्चा हम इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आज अर्ली मॉर्निंग करीब 4 बजे तक मैंनें करीब 16 घंटे लगातार वक़्फ़ (संशोधन) बिल 2025 की पूरी बहस, वोटिंग प्रक्रिया व अमेंडमेंट पर वोटिंग प्रक्रिया पर पर मैं नजर रखी। मैंने लगातार 16 घंटे संचार माध्यमों से जुड़ा रहा, क्योंकि ऐसे विषय पर लाइव देखकर रिपोर्टिंग बनाना मेरी रुचि रही है। मैंने देखा कि विपक्ष व पक्ष के सदस्यों ने ध्रुवीकरण बोलने पर विशेष ध्यान दिया विपक्ष के नेताओं ने ध्रुवीकरण पर आरोप प्रत्यारोप लग रहे थे बहस के दौरान मैंने एक बात देखी कि एक सदस्य वाली पार्टी को भी बोलने का अधिकार दिया गया था, जिसमें चंद्रशेखर, पप्पू यादव, असदुद्दीन ओवैसी भी शामिल थे। ओवैसी साहब ने बिल को फाड़ने की बात तो की, लेकिन बिल को फाड़ नहीं पाए बल्कि दो भागों को स्टेपलर की पिन खोलकर अलग किया। बहस पूरी हो जाने के बाद ज़ेपीसी अध्यक्ष ने उसका जवाब दिया, फिर अंत में अल्पसंख्यक विभाग के मंत्री ने बहस का जवाब दिया। मैंने महसूस किया कि पक्ष और विपक्ष दोनों ही पूरी तैयारी के साथ बहस में शामिल होने, बहस की प्रक्रिया हो जाने के बाद माननीय सदस्यों द्वारा 100 से अधिक संशोधनों जो दर्ज कराए गए थे, उसमें तीन संशोधन की वोटिंग मशीन से वोटिंग हुई व बाकी 100 से अधिक संशोधनों को ध्वनि मत से जिसमें करीब-करीब विपक्ष के सभी संशोधन खारिज कर दिए गए। विशेष बात यह रही कि मैं पिछले 10-12 सालों में मैंने रात्रि 2-3 बजे तक संसद चलने और विधेयक पारित होने की प्रक्रिया नहीं देखी थी। वक़्फ़ (संशोधन) विधेयक, 2025 रात 1.56 बजे लोकसभा में पारित हुआ। विधेयक पर 1 घंटे 50 मिनट तक वोटिंग चली। विधेयक के समर्थन में 288 वोट पड़े, जबकि विरोध में 232 वोट पड़े। अनेक संशोधन में एक संशोधन पर इलेक्ट्रॉनिक पद्धति से मतदान के बाद कुल 464 वोट दर्ज किए गए। विधेयक के पक्ष में 273 और विरोध में 191 मत पड़े। शुद्धि के बाद स्पीकर ओम बिरला आधिकारिक आंकड़ों का एलान करेंगे। लोकसभा संसद सदस्यों द्वारा दिए गए संशोधन में सबसे महत्वपूर्ण संशोधन बोर्ड में शामिल होने वाले 11 गैरमुस्लिम सदस्यों वाला संशोधन 288 के मुकाबले 231 मतों से गिर गया, यानि अब गैरमुस्लिम सदस्य बोर्ड में शामिल होंगे।वक़्फ़ (संशोधन) बिल 2025 आज ही उच्चसदन यांने राज्यसभा में पेश होगा उम्मीद है बहस के बाद इस सदन में भी वक़्त (संशोधन) बिल 2025 पारित हो जाएगा ऐसा मेरा मानना है। चूँकि संसद में 12 घंटे की लंबी मैराथन बहस के बाद वक़्त संशोधन बिल 2025 लोकसभा से पारित हो गया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग सेइस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, वक़्फ़ संशोधन बिल 2025 की लड़ाई, अंजाम तक आई। लोकसभा में अर्ली मॉर्निंग 232 के मुकाबले 288 मतों से यह बिल पारित किया गया तथा आज 3 अप्रैल को ही राज्यसभा सदन में भी पारित कर दिया जाएगा ऐसी संभावना है।

साथियों बात अगर हम वक्फ बिल पर लोकसभा में बहस के के बाद जेपीसी के अध्यक्ष द्वारा जवाब देने की करें तो उन्होंने कहा यदि बीजेपी चाहती तो इस विधेयक को सीधे संसद में पास करा सकती थी, लेकिन सरकार ने इसे जेपीसी को भेजने का फैसला किया ताकि अन्य दलों के साथ विस्तृत चर्चा हो सके। उन्होंने कहा कि यह सरकार की लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता को दिखाता है कि उसने बिना किसी जल्दबाजी के इस विषय पर व्यापक विमर्श किया।उन्होंने असदुद्दीन ओवैसी द्वारा वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024 को फाड़ने की बात को असंवैधानिक करार दिया है। उन्होंने कहा कि ओवैसी इस बिल को असंवैधानिक बता रहे हैं, लेकिन असली असंवैधानिक हरकत तो उन्होंने खुद की है। पाल ने लोकसभा में कहा कि संसद में इस तरह से विधेयक को फाड़ना लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का अपमान है और यह संसदीय मर्यादाओं के खिलाफ है।

साथियों बात अगर हम 2 अप्रैल 2025 को हुए बिल पर चर्चा का जवाब रात्रि 12 बजेअल्पसंख्यक विभाग के मंत्री द्वारा जवाब देने की करें तो उन्होंने कहा, सरकार ने बुधवार को लोकसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पेश किया। इसपर आधी रात तक लगभग 12 घंटे तक चर्चा हुई। अब सदन में वोटिंग हो रही है। पक्ष ने जहां बिल का समर्थन किया तो विपक्ष ने जोरदार हमला बोलते हुए इसे मुस्लिमों को हाशिए पर धकेलने वाला बताया। बिल पेश करते हुए केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि पूर्ववर्ती यूपीए सरकार ने वक्फ कानून में बदलावों के जरिए इसे अन्य कानूनों से ऊपर कर दिया था, इसलिए इसमें नए संशोधनों की जरूरत पड़ी। गौरतलब है कि लोकसभा में संख्याबल के हिसाब से एनडीए की स्थिति मजबूत है, जिसके पास 294 सांसद हैं, जबकि बिल पास करने के लिए 272 वोटों की जरूरत है।

साथियों बातें कर हम विधेयक का विरोध करने की करें तो, एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने वक्फ बिल पर बहस के दौरान कहा, इस बिल का असली मकसद मुसलमानों को जलील करना है। सरकार हमारे वक्फ की संपत्तियों पर कब्जा जमाना चाहती है और हमारे धार्मिक अधिकार छीनना चाहती है। अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए उन्होंने सदन में कहा कि मैं इस बिल को फाड़ता हूं। उन्होंने इसे अल्पसंख्यकों के धार्मिक अधिकारों पर सीधा हमला बताया और कहा कि यह संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 का उल्लंघन करता है। संसद में मदनी वक्फ संशोधन बिल पेश किए जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जमीयत उलमा-ए- हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद असअद मदनी ने कहा कि संसद में पेश किया गया वक्फ से संबंधित यह बिल असंवैधानिक है और मूल अधिकारों का उल्लंघन करता है। सरकार अपनी संख्यात्मक बहुमत के बल पर इसे पारित कराने की कोशिश कर रही है ।यह रवैया बहु संख्यकवादी मानसिकता पर आधारित है और लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। इस बिल को जबरन संसद में लाया गया है, जिसका उद्देश्य अल्पसंख्यकों के अधिकारों को छीनना है, जो किसी भी हाल में स्वीकार्य नहीं है। जिस तरह से यह बिल तैयार किया गया है और जिस मंशा व रवैये के साथ इसे पेश किया जा रहा है, वह मुसलमानों के खिलाफ एक नकारात्मक रुख को दर्शाता है। उन्होंने कहा,हम पहले ही कह चुके हैं कि पुराने कानून में सुधार की जरूरत थी, लेकिन इसके बजाय सरकार ने ऐसे संशोधन पेश किए हैं, जो समस्याओं का समाधान करने के बजाय उन्हें और जटिल बना रहे हैं ।अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्य के रूप में, मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि यह बिल पूरी तरह अस्वीकार्य है और हम इसे पूरी तरह खारिज करते हैं। इसके खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी और हम हर संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीके से इस अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज उठाते रहेंगे।

साथियों बात अगर हम सत्ताधारी पार्टी द्वारा विधेयक के समर्थन की करें तो, वक्फ बिल पर चर्चा में भाग लेते हुए भाजपा के रवि शंकर प्रसाद ने कहा कि वक्फ विधेयक के जरिए बोर्ड में पिछड़े मुसलमानों को जगह दी जा रही है तो इसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर वक्फ की जमीन लूटी जा रही है तो संविधान अधिकार देता है कि उसे रोका जाना चाहिए। उनका कहना था कि वक्फ धार्मिक संस्था नहीं है और अगर इस संस्था को दान दी जाने वाली संपत्ति लूटी जा रही है तो सरकार इस पर चुप नहीं रह सकती है।

साथियों बात अगर हम वक़्फ़ (संशोधन) बिल लोकसभा में पारित होने की करें तो, वक्फ संशोधन विधेयक लोकसभा से पास हो गया। 12 घंटे से ज्यादा समय तक चली मैराथन चर्चा के बाद लोकसभा ने वक्फ (संशोधन) विधेयक 2025 पारित कर दिया। इस विधेयक के पक्ष में 288 और विपक्ष में 232 वोट पड़े। स्पीकर ओम बिरला ने चर्चा पूरी होने के बाद वोटिंग करवाई। इस दौरान बिल के पक्ष में 288 वोट पड़े, वहीं विरोध में 232 वोट पड़े और इस तरह रात 2 बजे वक्फ संशोधन बिल लोकसभा से पास हो गया। इससे पहले सदन में गौरव गोगोई, औवैसी समेत कई सदस्यों की ओर से लाए गए संशोधन खारिज हो गए।

साथियों बात अगर हम 2 अप्रैल 2025 को सुबह संसद में बिल पेश होने की करें तो केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री नें लोकसभा में वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025 पेश किया। बिल पेश करने के बाद अपने संबोधन में स्पष्ट किया कि इस विधेयक का धार्मिक व्यवस्था से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा, यह बिल धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए नहीं, बल्कि वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए लाया गया है ।उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकार का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों की बेहतर देखरेख और डिजिटलीकरण के जरिए व्यवस्था को मजबूत करना है, न कि किसी की जमीन छीनना ।बिल पर चर्चा शुरू करते हुए रिजिजू ने कहा कि वक्फ बिल पर दोनों सदनों की संयुक्त समिति के सदस्यों ने अपने- अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि समाज के हर वर्ग ने इस बिल को लेकर अपने सुझाव दिए। इनमें कानून के जानकारों ने भी सुझाव दिए। मंत्री ने कहा कि ये पहली बार नहीं है जब वक्फ बिल में संशोधन हो रहा है। इससे पहले भी हुआ है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वक़्फ़ संशोधन बिल 2025 की लड़ाई, अंजाम तक आई- लोकसभा में अर्ली मॉर्निंग 288/232 से बिल पारित - 3 अप्रैल को राज्यसभा से भी पारित होगा ।12 घंटे की लंबी मैराथन बहस के बाद, वक़्फ़ संशोधन बिल 2025 लोकसभा में पारित ।लोकसभा में लगातार 12 घंटे की बहस सुनने से लेकर अर्ली मॉर्निंग 4 बजे यह रिपोर्ट बनाना मेरे लिए रोमांचित अनुभव रहा।

लैंबॉर्गिनी भारत ला रही नई सुपरकार, 2.7 सेकंड में पकड़ लेगी 0-100kmph की स्पीड

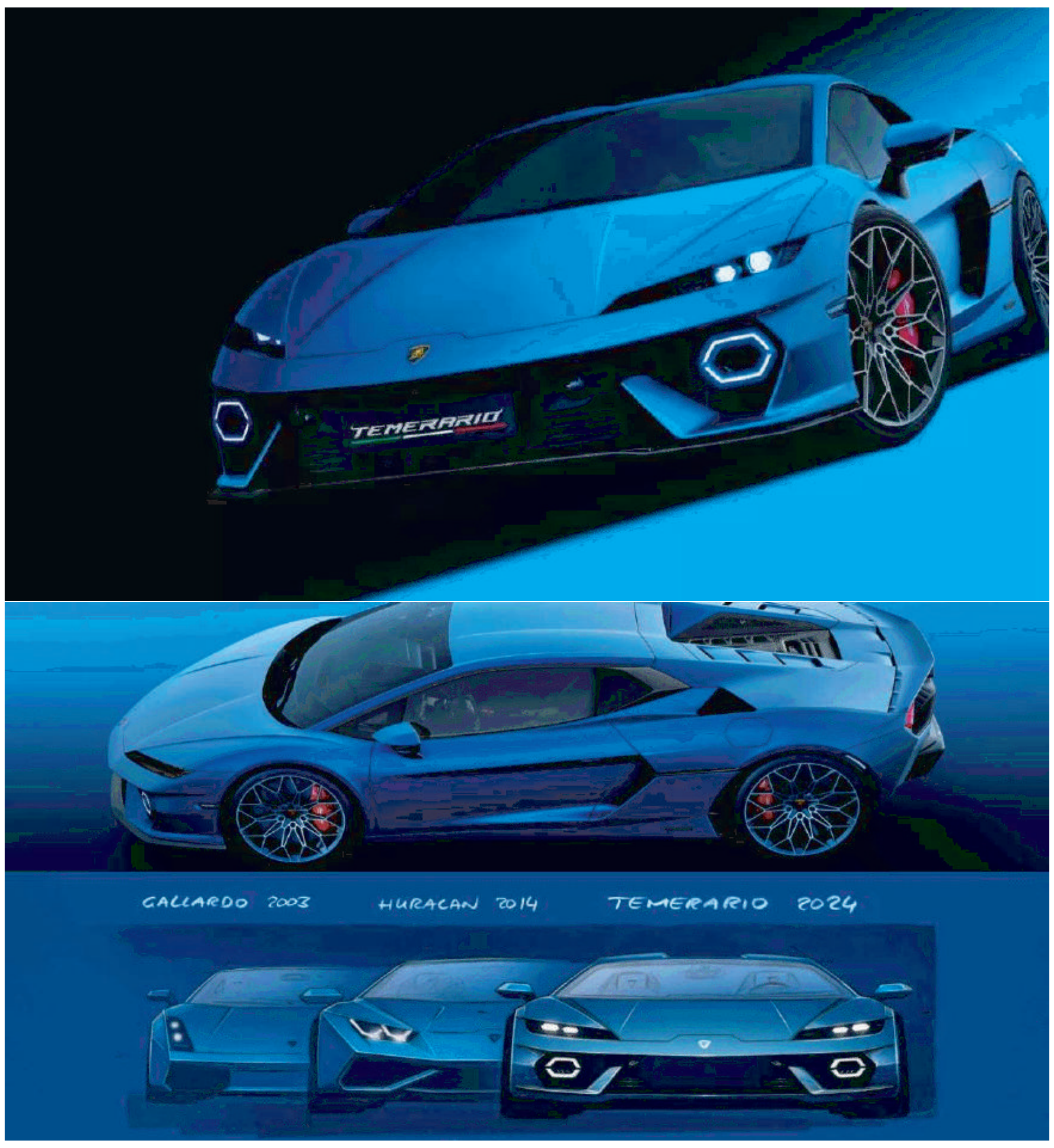

परिवहन विशेष न्यूज

लैंबॉर्गिनी की सुपरकार Lamborghini Temerario का नया वेरिएंट भारत में लॉन्च होने वाला है। इसे 30 अप्रैल 2025 भारत में लॉन्ट किया जाएगा। इसमें 4.0-लीटर ट्विन-टर्बो V8 इंजन और तीन इलेक्ट्रिक मोटर का इस्तेमाल किया गया है। जिसकी मदद से यह महज 2.7 सेकंड में 0-100 किमी/घंटा की स्पीड पकड़ लेती है। इसका इंटीरियर्स एयरक्राफ्ट-थीम पर बेस्ड है। तीन डिस्प्ले दिए गए हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में लैंबॉर्गिनी अपने सुपरकार के नए वेरिएंट Lamborghini Temerario को लॉन्च करने की तारीख की घोषणा कर दी है। इसे कंपनी भारत में 30 अप्रैल 2025 को लॉन्च करने जा रही है। Lamborghini की इस सुपरकार में प्लग-इन हाइब्रिड इंजन दिया गया है। कंपनी ने इसे ग्लोबल लेवल पर अगस्त 2024 में लॉन्च किया था। लैंबॉर्गिनी की यह सुपरकार कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

Lamborghini Temerario का इंजन

लैंबॉर्गिनी टेमेरारियो में 4.0-लीटर ट्विन-टर्बो V8 इंजन और तीन इलेक्ट्रिक मोटर दिया गया है। इसका V8 इंजन अकेले 800hp और 730Nm का उत्पादन करता है। इसे अधितकम 10,000 RPM तक ले जाया जा सकता है। यह इलेक्ट्रिक मोटर के साथ 920hp की पावर और 800Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Lamborghini Temerario महज 2.7 सेकंड में 0-100 किमी/घंटा की स्पीड पकड़ लेती है। इसे 343 किमी/घंटा की रफ्तार तक चलाया जा सकता है। इसमें 3.8kWh प्लग-इन हाइब्रिड बैटरी मिलती है, जिसे 7kW AC चार्जर से 30 मिनट में पूरा चार्ज किया जा सकता है।

डिजाइन और एक्सटीरियर्स

Lamborghini Temerario का डिजाइन काफी हद तक हुराकन से मिलता-जुलता है, लेकिन इसमें कई नए फीचर्स को शामिल किया गया है। इसमें शार्क-नोज फ्रंट एण्ड और लोअर-लिप स्पॉइलर मिलता है। इसके साथ ही रूफलाइन और साइड पैनल में एयरोडायनेमिक्स के लिए अधिक प्रोनाउंस्ड लाइन्स दी गई हैं।

Lamborghini Temerario

इसमें हेक्सागोनल-आकार के LED DRLs दिए गए हैं और इसके टेल लाइट्स भी हेक्सागोनल शेप में हैं। इस डिजाइन को रियर एग्जॉस्ट, साइड मिरर और फ्यूल टैंक कैप दिया गया है। इसके अलावा, लैंबॉर्गिनी टेमेरारियो में 20 इंच (फ्रंट) और 21 इंच (रियर) व्हील्स के लिए लैंबॉर्गिनी फोर्ज्ड और कार्बन-फाइबर ऑप्शन भी मिलेगा।

इंटीरियर्स और फीचर्स

Lamborghini Temerario का इंटीरियर्स एयरक्राफ्ट-थीम पर बेस्ड है। इसमें फाइटर जेट-स्टाइल पुश स्टार्ट/स्टॉप बटन दिया गया है और इसके स्टीयरिंग व्हील पर डिजिटल बटन की जगह फिजिकल बटन दिए गए हैं।

इसमें तीन डिस्प्ले दिए गए हैं, जो 12.3 इंच का ड्राइवर डिस्प्ले, 8.4 इंच की पोर्ट्रेट ओरिएंटेशन वाली टच स्क्रीन और 9.1 इंच का पैसेंजर स्क्रीन है। ड्राइवर की सीट में 18-वे अडजस्टेबल फीचर के साथ हीटिंग और वेंटिलेशन का ऑप्शन भी मिलेगा।

Lamborghini Temerario की कीमत

लैंबॉर्गिनी टेमेरारियो को 7 करोड़ रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च होने की उम्मीद है। भारत में इसका मुकाबला McLaren 750S और Ferrari 296GTB जैसी गाड़ियों से देखने के लिए मिलेगा।

स्कोडा एलॉक RS हुई पेश, सिंगल चार्ज में मिलेगी 550 KM तक की रेंज के साथ मिलेंगे 180 की टॉप स्पीड

परिवहन विशेष न्यूज

यूरोप की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Skoda की ओर से ग लोबल स्तर पर नई इलेक्ट्रिक एसयूवी Skoda Elroq RS को पेश कर दिया है। इस एसयूवी में कितनी दमदार बैटरी और मोटर को दिया गया है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे पेश किया गया है। क या एसयूवी को भारतीय बाजार में लॉन् च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। यूरोप की प्रमुख वाहन निर्माता Skoda की ओर से Elroq RS को औपचारिक तौर पर पेश कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इस एसयूवी में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। कितनी दमदार बैटरी और मोटर को दिया गया है। क्या इसे भारत में लॉन्च किया जा सकता है? आइए जानते हैं।

Skoda Elroq RS हुई पेश

स्कोडा की ओर से एलरॉक आरएस एसयूवी को पेश कर दिया गया है। इसे इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर ग्लोबल स्तर पर पेश किया गया है। इसे Elroq के लाइनअप में सबसे ऊपर पोजिशन किया गया है। साथ ही इसमें Skoda Enyaq EV की तरह फीचर्स दिए गए हैं।

कैसे हैं फीचर्स

इलेक्ट्रिक एसयूवी में स्कोडा की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें 21 इंच अलॉय व्हील्स, रेड पेंट ब्रेक कैलिपर्स, कम स्पीड में चलने पर साउंड अलर्ट, एलईडी मैट्रिक्स एलईडी हेडलाइट, एलईडी डीआरएल, ग्लॉसी ब्लैक रूफ रेल, थ्री स्पोक स्टेयरिंग व्हील, इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल सीट्स, स्टेनलेस स्टील पैडल कवर्स, डार्क इंटीरियर, पांच इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 13 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, 470 लीटर की क्षमता का बूट स्पेस सहित कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

Skoda Elroq RS में निर्माता की ओर से 84 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। सिंगल चार्ज में इससे 550 किलोमीटर तक की रेंज मिल सकती है। इसमें लगी मोटर से इसे 250 किलोवाट की पावर का आउटपुट मिलता है। जिससे इसे 0-100 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से सिर्फ 5.4 सेकेंड में चलाया जा सकता है। इसकी टॉप स्पीड 180 किलोमीटर प्रति घंटा तक है। इसे डीसी फास्ट चार्जिंग से 10 से 80 फीसदी तक 26 मिनट में चार्ज किया जा सकता है। इसके अलावा इसे एसी चार्जर से 0-100 फीसदी चार्ज करने में आठ घंटे का समय लगेगा। एसयूवी में ड्यूल मोटर ऑल व्हील ड्राइव सिस्टम को दिया गया है।

क या भारत में होगी लॉन्च

निर्माता की ओर से अभी इस एसयूवी को सिर्फ ग्लोबल स्तर पर पेश किया गया है। कुछ समय बाद इस एसयूवी को कुछ देशों में ऑफर किया जाएगा। फिलहाल इसे भारत लाया जाएगा या नहीं इस बारे में स्कोडा की ओर से कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। स्कोडा की ओर से इस एसयूवी को अब आठ से 13 अप्रैल 2025 के बीच इटली के मिलान में होने वाले डिजाइन वीक के दौरान दिखाया जाएगा।

किआ सायरॉस के डीजल वेरिएंट को ले आएं घर, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

Kia की ओर से Syros को SUV के तौर पर ऑफर किया जाता है। यह पेट्रोल के साथ ही डीजल विकल् प के साथ आती है। डीजल के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में किआ की ओर से एसयूवी सेगमेंट में सिरोस को कुछ समय पहले लॉन्च किया गया है। इस एसयूवी को पेट्रोल के साथ ही डीजल इंजन के विकल्प में ऑफर किया जाता है। डीजल में एसयूवी के बेस वेरिएंट को खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट करने के बाद सात सालों के लिए हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia Syros Price

किआ की ओर से सिरोस को भी एसयूवी सेगमेंट में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। इसके डीजल बेस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 11 लाख रुपये है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 1.37 लाख रुपये के रजिस्ट्रेशन के साथ ही करीब 46 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा टीसीएस चार्ज के तौर पर 18129 रुपये भी देने होंगे। जिसके बाद इसकी ऑन रोड कीमत 13.01 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Kia Syros डीजल के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 11.01 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 11.01 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 17715 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 11.01 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 17715 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Kia Syros डीजल के बेस वेरिएंट के लिए करीब 3.87 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 16.88 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Kia की ओर से Syros को एसयूवी सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Brezza, Tata Nexon, Mahindra XUV 3XO, Skoda Kylaq, Hyundai Venue, Renault Kiger और Nissan Magnite जैसी सब फोर मीटर एसयूवी के साथ होता है।

हुंडई Ioniq 6 फेसलिफ्ट का हुआ खुलासा, नए ट्रिम में हुई पेश

परिवहन विशेष न्यूज

हुंडई ने Seoul Motor Show 2025 में अपनी कई गाड़ियों को शोकेस किया है। जिसमें से एक Hyundai Ioniq 6 facelift है। इसे नई डिजाइन के साथ ही नए N Line ट्रिम के साथ पेश किया गया है। इसमें पहले की तरह ही दो बैटरी पैक दिया गया है। Hyundai Ioniq 6 facelift के बाहर और अंदर के डिजाइन में हल्के बदलाव किए गए हैं।

नई दिल्ली। हाल में Seoul Motor Show 2025 चल रहा है। यहां पर कई ऑटोमेकर अपनी गाड़ियों को शोकेस कर रही है। इसमें Hyundai भी शामिल है। कंपनी ने यहां पर Hyundai Ioniq 6 facelift को पेश किया है, वो भी नए N Line ट्रिम के साथ जो इसे और स्पोर्टी और अट्रैक्टिव बनाता है। आइए जानते हैं कि Hyundai Ioniq 6 facelift में क्या कुछ नया देखने के लिए मिला है?

Hyundai Ioniq 6 facelift का एक्सटीरियर

इसका डिजाइन Hyundai RN22e मोटरस्पोर्ट-केंद्रित कॉन्सेप्ट से प्रेरित है। इसके फ्रंट में नए स्लिमर हेडलाइट दिए गए हैं, जिसमें Ioniq 9 SUV की तरह पिक्सल मोटोफ दिया गया है। इसके बम्पर को फिर से डिजाइन किया गया है। इसमें एक नया फ्रंट स्प्लिटर एरोडायनामिक्स को बेहतर बनाने के लिए शामिल करने के साथ बोनट को और ऊंचा किया गया है।

Hyundai Ioniq 6 facelift

इसमें नए डिजाइन के अलॉय व्हील्स और रिवाइज्ड रियरव्यू कैमरे दिए गए हैं और इसके साइड स्कर्ट्स पर काले रंग की फिनिश दी गई है। इसमें पुराने के मुकाबले ज्यादा डिस्क्रीट एक्सटेंडेड बूट लिप दिया गया है।

Hyundai Ioniq 6 facelift का इंटीरियर

इसके बाहरी डिजाइन के मुकाबले अंदर के डिजाइन में मामूली बदलाव किए गए हैं। इसमें अब तीन-स्पोक वाला स्टीयरिंग व्हील दिया गया है। इसके सेंट्रल कंसोल के कंट्रोल्स के इस्तेमाल को बढ़ाने के लिए फिर से सिस्टमैटिक किया गया है और ड्यूल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल सिस्टम के लिए एक बड़ा डिस्प्ले दिया गया है। इसके दरवाजों के लिए नए मटेरियल का इस्तेमाल किया गया है।

Hyundai Ioniq 6 facelift

इसके अलावा, इसमें दो 12.3 इंच के स्क्रीन (इंफोटेनमेंट और इंस्ट्रूमेंट्स के लिए), एंबियंट लाइटिंग, वाहन-से-लोड (V2L) की सुविधा, 8-वे इलेक्ट्रॉनिकली एडजस्टेबल फ्रंट सीट्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसके डैशबोर्ड के दोनों तरफ एक्स्ट्रा स्क्रीन दी गई है, जो रियर व्यू कैमरे के आउटपुट को डिस्प्ले करती हैं।

Hyundai Ioniq 6 facelift बैटरी और रेंज

इसमें पुराने मॉडल की तरह ही 77.4kWh और 53kWh बैटरी दिया गया है। इसकी बड़ी बैटरी पैक के लिए दो पावरट्रेन ऑप्शन दिया गया है। इसका सिंगल-मोटर रियर-व्हील ड्राइव सेटअप 225hp का पावर जनरेट करता है और ड्यूल-मोटर ऑल-व्हील ड्राइव सेटअप 21hp का पावर जनरेट करता है। वहीं, इसका 53kWh बैटरी पैक केवल सिंगल-मोटर के साथ पेश किया गया है, जो 149hp की पावर जनरेट करता है। इसमें दी गई बैटरी पैक फुल चार्ज होने के बाद कितना रेंज देगी अभी तक इसकी जानकारी नहीं दी गई है।

क्या एनडीए जेईई से ज्यादा कठिन है?

विजय गर्ग

1954 में स्थापित एनडीए परीक्षा को भारतीय सशस्त्र बलों में नेतृत्व भूमिकाओं के लिए कैडेट तैयार करने के लिए डिजाइन किया गया था। यह न केवल भविष्य के सैन्य नेताओं को संवारने में, बल्कि अनुशासन, रणनीति और टीम वर्क की भावना को बढ़ावा देने में भी एक अनूठा महत्व है। दूसरी ओर, जेईई को भारत में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी शिक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ दिमाग का चयन करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी परीक्षा के रूप में पेश किया गया था। आईआईटी ने अपने कठोर शैक्षणिक मानकों और अनुसंधान और नवाचार में योगदान के लिए अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है। इन परीक्षाओं का विकास रक्षा और प्रौद्योगिकी दोनों में उत्कृष्टता की भारत की खोज का प्रतीक है, जिससे लाखों छात्र प्रभावित होते हैं और देश के भविष्य को आकार देते हैं।

यह उन छात्रों के बीच एक सामान्य प्रश्न है जो राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) के माध्यम से भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल होने या संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) के माध्यम से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) जैसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थानों को आगे बढ़ाने की इच्छा रखते हैं। जबकि दोनों परीक्षाएं अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हैं और कठोर तैयारी की मांग करते हैं, वे पूरी तरह से अलग कौशल सेट और दृष्टिकोण का आकलन करते हैं।

जब भारत में इच्छुक छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने के महत्वपूर्ण चरण में पहुंचते हैं, तो वे अक्सर प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) परीक्षा या संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) के चुनौतीपूर्ण विकल्पों का सामना करते हैं। इन दोनों परीक्षाओं में से कौन सी एक बड़ी चुनौती है, यह बहस चल रही है और बहुआयामी है, पाठ्यक्रम, परीक्षा पैटर्न, प्रतियोगिता के स्तर और चयन प्रक्रियाओं की कठोरता जैसे विभिन्न कारकों पर आकस्मिक है। जबकि दोनों रास्ते महत्वपूर्ण महत्व रखते हैं और सफलता के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं, उनकी बारीकियों की गहन परीक्षा दोनों के बीच कठिनाई में गहन अंतर को इंगित करती है।

1954 में स्थापित एनडीए परीक्षा को भारतीय सशस्त्र बलों में नेतृत्व भूमिकाओं के लिए कैडेट तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। यह न केवल भविष्य के सैन्य नेताओं को संवारने में, बल्कि अनुशासन, रणनीति और टीम वर्क की भावना को बढ़ावा देने में भी एक अनूठा महत्व है। दूसरी ओर, जेईई को भारत में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी शिक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ दिमाग का चयन करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी परीक्षा के रूप में पेश किया गया था। आईआईटी ने अपने कठोर शैक्षणिक मानकों और अनुसंधान और नवाचार में योगदान के लिए अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है। इन परीक्षाओं का विकास रक्षा और प्रौद्योगिकी दोनों में उत्कृष्टता की भारत की खोज का प्रतीक है, जिससे लाखों छात्र प्रभावित होते हैं और देश के भविष्य को आकार देते हैं।

कठिनाई स्तर एनडीए परीक्षा एनडीए परीक्षा को अक्सर मुश्किल माना जाता है, लेकिन जेईई की गहराई और उन्नत अवधारणाओं की चौड़ाई की तुलना में इसकी जटिलता है। जबकि उम्मीदवारों को विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला में ज्ञान प्रदर्शित करना चाहिए, प्रारूप को समयबद्ध परिस्थितियों में जटिल समस्याओं को हल करने की क्षमता के बजाय मुख्य समझ का आकलन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कई लोग तर्क दे सकते हैं कि एनडीए चयन प्रक्रिया में शारीरिक मूल्यांकन और मनोवैज्ञानिक आकलन कठिनाई की परतें जोड़ते हैं, फिर भी लिखित परीक्षा स्वयं उतना गहरा नहीं है जितना कि जेईई करता है।

जेईई परीक्षा इसके विपरीत, जेईई, विशेष रूप से जेईई एडवांस्ड, विकट चुनौतियां प्रस्तुत करता है। प्रश्न न केवल उच्च स्तर की समझ की मांग करते हैं, बल्कि असाधारण विश्लेषणात्मक क्षमता और समय प्रबंधन की भी आवश्यकता होती है। कई समस्याओं में कई कदम और जटिल समाधान हो सकते हैं, जो उम्मीदवारों को उनकी सीमा तक धकेलते हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण बताते हैं कि कई उम्मीदवार इस परीक्षा के लिए उन्नत अवधारणाओं में महारत हासिल करने के लिए वर्षों की तैयारी करते हैं, यह प्रदर्शित करते हुए कि जेईई को अक्सर एनडीए की तुलना में अधिक बौद्धिक रूप से मांग माना जाता है।

प्रतियोगिता और चयन अनुपात एनडीए परीक्षा आवेदक पूलः एनडीए परीक्षा के लिए मोटे तौर पर 2.5 लाख छात्र पंजीकरण करते हैं। चयनित उम्मीदवारः लगभग 300-400 उम्मीदवारों को भर्ती किया जाता है, जिससे लगभग 0.15% का चौंका देने वाला चयन अनुपात होता है। यह चुनौतीपूर्ण आँकड़ा इस धारणा को पुष्ट करता है कि एनडीए में सफल होना केवल ज्ञान के बारे में नहीं है बल्कि असाधारण शारीरिक और मानसिक तैयारी के बारे में भी है। जेईई परीक्षा आवेदक पूलः इसके विपरीत, जेईई सालाना के लिए लगभग 15 लाख उम्मीदवार उपस्थित होते हैं। चयनित उम्मीदवारः आईआईटी प्रत्येक वर्ष लगभग 9,000-10,000 छात्रों का चयन करते हैं, जो लगभग 0.71% के चयन प्रतिशत में अनुवाद करते हैं। हालांकि यह एनडीए की दर से थोड़ा अधिक लग सकता है, यह इंजीनियरिंग उम्मीदवारों के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा को काफी दर्शाता है। प्रतियोगिता का यह सांख्यिकीय विश्लेषण दोनों परीक्षाओं की अलग-अलग प्रकृति को रेखांकित करता है, जो प्रत्येक में शामिल असाधारण दबाव और दांव को दर्शाता है।

तैयारी का समय और दबाव एनडीए परीक्षा आमतौर पर, उम्मीदवार अपनी 12 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं को पूरा करने के तुरंत बाद एनडीए परीक्षा की तैयारी शुरू कर देते हैं। यह अपेक्षाकृत कम तैयारी का समय है - अक्सर कुछ महीनों में फैले हुए हैं - उम्मीदवारों को महत्वपूर्ण दबाव में रखते हैं। इस अवधि के दौरान ध्यान व्यापक रूप से व्यापक है, जिसमें असंख्य विषयों पर सामान्य ज्ञान शामिल है, जबकि शारीरिक परीक्षणों के लिए भी तैयार है।

जेईई परीक्षा जेईई की तैयारी के लिए समय सीमा एक अलग कहानी बताती है। कई छात्र 11 वीं कक्षा में या उससे पहले भी गहन अध्ययन के वर्षों में अपनी तैयारी शुरू करते हैं। यह लंबे समय तक समयरेखा गहरी वैचारिक समझ और व्यापक समस्या को सुलझाने के अभ्यास पर जोर देती है। दबाव बनाता है क्योंकि छात्र अपने भविष्य के शैक्षणिक प्रक्षेपवक्र पर अपने प्रदर्शन के महत्वपूर्ण नतीजों को देखते हुए काफी संसाधनों- वित्तीय और भावनात्मक- कोचिंग, अध्ययन सामग्री और मॉक टेस्ट में निवेश करते हैं।

कुल मिलाकर मूल्यांकन जबकि एनडीए और जेईई दोनों परीक्षाएं विकट चुनौतियां पेश करती हैं, उनकी कठोरता का विश्लेषण करने से पता चलता है कि जेईई को अक्सर दोनों के अधिक चुनौतीपूर्ण के रूप में मान्यता दी जाती है।

अकादमिक कठोरताः उन्नत भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित पर जेईई का ध्यान अकादमिक अपेक्षा के उच्च मानक को दर्शाता है। जटिलताः छात्र अक्सर जेईई में बहुआयामी समस्याओं का सामना करते हैं जो उन्नत समस्या-समाधान कौशल की मांग करते हैं, जबकि एनडीए परीक्षा, चुनौतीपूर्ण होते हुए, गहराई से समझ के बजाय व्यापक ज्ञान का आकलन करती है। समग्र मूल्यांकनः एनडीए में एक व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया शामिल है जो एक उम्मीदवार के व्यक्तित्व और शारीरिक विशेषताओं को संबोधित करती है, लेकिन जेईई की गहन शैक्षणिक जांच बेजोड़ है। प्रत्येक परीक्षा पथ से जुड़े।

सांख्यिकीय डेटा और अनुसंधान अंतर्दृष्टि विश्व स्तर पर सबसे चुनौतीपूर्ण परीक्षाओं में से एक के रूप में जेईई परीक्षा की प्रतिष्ठा विभिन्न अध्ययनों और रिपोर्टों द्वारा प्रबलित हैः

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि आईआईटी स्नातक छात्र जो बाद में तकनीकी प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, इन संस्थानों में पनपने के लिए आवश्यक बौद्धिक कठोरता पर जोर देते हैं। शिक्षण संस्थानों द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि अधिकांश आईआईटी स्नातक अनुसंधान और विकास भूमिकाओं में संलग्न होते हैं, अक्सर वैश्विक तकनीकी दिग्गजों में, जेईई में उत्कृष्ट प्रदर्शन से जुड़े प्रभाव और प्रतिष्ठा की पुष्टि करते हैं। चुनौतियां और समाधान दोनों रास्ते अलग-अलग चुनौतियों से भरे हैं। एनडीए परीक्षा की व्यापक चयन प्रक्रिया पूरी तरह से पारंपरिक शिक्षाविदों के आदी उम्मीदवारों को अभिभूत कर सकती है। इसके विपरीत, जेईई की सामग्री की परिमाण अक्सर उम्मीदवारों के बीच बर्नआउट की ओर ले जाती है।

समाधानः एनडीए उम्मीदवारों के लिएः समय प्रबंधन कौशल प्रशिक्षण और मॉक साक्षात्कार जैसी रणनीतियाँ विविध चयन मानदंडों के लिए उम्मीदवारों को तैयार कर सकती हैं। जेईई एस्पिरेंट्स के लिएः मानसिक स्वास्थ्य और संतुलित अध्ययन दिनचर्या के महत्व पर जोर देने से तनाव को कम करने और जटिल विषयों के दीर्घकालिक प्रतिधारण में सुधार करने में मदद मिल सकती है। भविष्य के रुझान और भविष्यवाणियां भारत में प्रतियोगी परीक्षाओं का भविष्य विकसित हो रहा है।

चूंकि शिक्षा ऑनलाइन सीखने और अभिनव शिक्षाशास्त्र की ओर बढ़ती है, इसलिए एनडीए और जेईई दोनों डिजिटल तैयारी विधियों को समायोजित करने और पारंपरिक अकादमिक कठोरता के साथ नरम कौशल, महत्वपूर्ण सोच और सहयोगी समस्या-समाधान का आकलन करने के लिए अपने परीक्षा प्रारूपों में बदलाव का अनुभव कर सकते हैं।

इसके अलावा, एआई और डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीक का एकीकरण व्यक्तिगत सीखने के अनुभवों के लिए मार्ग प्रशस्त कर सकता है, दोनों रास्तों में छात्रों के लिए तैयारी रणनीतियों का अनुकूलन कर सकता है।

निष्कर्ष सारांश में, एनडीए और जेईई परीक्षाओं की तुलना अकादमिक कठोरता, चयन प्रक्रियाओं और प्रतिस्पर्धी दबावों में निहित अलग-अलग चुनौतियों पर जोर देती है। जबकि एनडीए शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक विशेषताओं के समग्र मूल्यांकन को बढ़ाता है, जेईई को उन्नत वैज्ञानिक अवधारणाओं और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चयन मानदंडों के कठोर अन्वेषण की विशेषता है। अंततः, जबकि कई लोग जेईई को अपनी बौद्धिक मांगों और गहराई के कारण अधिक चुनौती के रूप में देखते हैं, एनडीए की व्यापक प्रकृति भी भारत के सशस्त्र बलों में सेवा करने के इच्छुक लोगों के लिए एक कठिन यात्रा का प्रतीक है। दोनों मार्गों को भारत में महत्वाकांक्षी छात्रों के लिए उपलब्ध विविध अवसरों को रेखांकित करते हुए, तैयारी के लिए अपार समर्पण, लचीलापन और एक सक्रिय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार

इंसान जैसी हत्या

विजय गर्ग

देश में लगातार जारी पेड़ों की अवैध कटाई के खिलाफ सख्त रवैया अख्तियार करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा है कि एक पेड़ का कटना इंसान की हत्या से भी बदतर है। कोर्ट ने आरोपी व्यक्ति को नये पौधे लगाने की अनुमति तो दी, लेकिन काटे गए 454 पेड़ों के बदले प्रति पेड़ एक लाख रुपये के हिसाब से लगाया जुर्माना कम करने से इनकार कर दिया। ऐसा कोर्ट ने अभियुक्त के गलती स्वीकारने और माफी मांगने के बावजूद किया। इसके जरिये कोर्ट ने साफ संदेश दिया कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वालों को कोई रियायत नहीं दी जाएगी। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने स्पष्ट संदेश दिया कि संबंधित प्राधिकारी की आज्ञा के बिना पेड़ काटने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। उल्लेखनीय है कि ताजमहल व अन्य पुरातात्विक इमारतों के संरक्षण के लिये बनाये गए ताज ट्रेपोजियम क्षेत्र में 454 पेड़ कटवा दिए गए थे। दरअसल, कोर्ट ने इस मामले में एमिकस क्यूरी के रूप में सहयोग कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता एडीएन राव के इस सुझाव पर सहमति जतायी कि कोई कानून और पेड़ों को हल्के में न ले। वहीं जुर्माना लगाने के बाबत भी कोर्ट ने मानक तय किया कि इसमें किसी तरह रियायत नहीं दी जाएगी। कोर्ट ने इस बात को लेकर भी चिंता जतायी कि जो पेड़ काटे गए हैं, उसकी जगह नये पेड़ लगाने के बावजूद इसकी क्षतिपूर्ति में सौ साल लग जाएंगे।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील संरक्षित ताज ट्रेपोजियम क्षेत्र में अदालत ने पेड़ काटने पर वर्ष 2015 से ही प्रतिबंध लगा रखा था। इसके बावजूद अदालत की अनुमति के बिना सैकड़ों पेड़ काट डाले गए। जिसके बाद न्यायालय ने केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति यानी सीईसी की वह रिपोर्ट स्वीकार कर ली कि बीते वर्ष 454 पेड़ काटने वाले व्यक्ति पर प्रति पेड़ के हिसाब से एक लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाए। कोर्ट ने अभियुक्त की तरफ से पेश वकील वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी की वह दलील ठुकरा दी कि अभियुक्त ने गलती मानते हुए माफी मांग ली है, तो उसे जुर्माना कम करके राहत दी जाए। हालांकि कोर्ट ने पास के किसी स्थान पर पौधरोपण करने की अनुमति जरूर प्रदान कर दी है। ऐसे वक्त में जब पूरी दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग के चलते तापमान में निरंतर वृद्धि जारी है, वृक्षों का होना प्राणवायु का जरिया ही है। जो हमें शहरों के कंक्रीट के जंगल से उत्पन्न खतरों से बचाते हैं। खासकर पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण इलाकों में उनकी दोहरी भूमिका है। ऐसे में नीति-नियंताओं को सोचना होगा कि कैसे किसी व्यक्ति को संवेदनशील इलाके में पेड़ काटने की अनुमति दी गई। निरंतर बढ़ते तापमान के दौर में वृक्षों के प्रति संवेदनशीलता शासन-प्रशासन के साथ समाज में भी होनी चाहिए। उत्तराखंड में चिपको आंदोलन और राजस्थान में खेजड़ी वृक्षों को बचाने के लिये लोगों के त्याग व संघर्ष को हमें याद रखना चाहिए। जनता का कड़ा प्रतिरोध भी वृक्षों की रक्षा करने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

जल संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसमें केवल वर्षा जल संरक्षण की बात नहीं होनी चाहिए, बल्कि अन्य उपायों पर भी विचार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यथासंभव तालाबों का निर्माण किया जाना चाहिए तथा पारंपरिक जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में जल संरक्षण पर जोर देते हुए देश की जनता को सही समय पर सही संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने यह जानकारी साझा की कि पिछले सात-आठ वर्षों में विभिन्न जल संरक्षण उपायों के माध्यम से 11 बिलियन क्यूबिक मीटर पानी सफलतापूर्वक बचाया गया है, जो लोगों को पानी के महत्व को समझने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित कर रहा है। बेशक, यह किसी उपलब्धि से कम नहीं है कि जल संरक्षण उपायों के माध्यम से बड़ी मात्रा में पानी की बचत की गई है और प्रधानमंत्री ने इसका उल्लेख इसलिए किया क्योंकि उनकी सरकार ने जल संरक्षण के लिए नीतिगत स्तर पर कुछ उल्लेखनीय कार्य किए हैं, लेकिन इस संबंध में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। जल संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। जल संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इस जरूरत को सरकारों, समाजसेवी संगठनों के साथ-साथ आम जनता को भी अपने स्तर पर पूरा करना चाहिए, क्योंकि हमारे देश में पानी बचाने के लिए जरूरी प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। बरसात के मौसम में बहुत सारा पानी बेकार बह जाता है।

सरकार और समाज को यथासंभव वर्षा जल को संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि भारत उन देशों में से एक है जहां जल संकट मंडरा रहा है। जल संरक्षण के प्रयासों को कितनी गंभीरता से लिया जाना चाहिए, यह इस तथ्य से समझा जा सकता है कि भारत में विश्व की 17 प्रतिशत जनसंख्या रहती है, जबकि इसके उपयोग के लिए उपलब्ध जल चार प्रतिशत से भी कम है।

इसमें केवल वर्षा जल संरक्षण की बात नहीं होनी चाहिए, बल्कि अन्य उपायों पर भी विचार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यथासंभव तालाबों का निर्माण किया जाना चाहिए तथा पारंपरिक जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाया जाना चाहिए। इसके अलावा, घरेलू कार्यों, औद्योगिक गतिविधियों और कृषि में जल की खपत को कम करने के लिए प्राथमिकता के आधार पर उपाय अपनाए जाने चाहिए। इस तरह के उपाय फिलहाल सीमित आधार पर ही अपनाए जा रहे हैं। इसके कारण न केवल कृषि बल्कि औद्योगिक गतिविधियों में भी पानी का आवश्यकता से अधिक उपयोग हो रहा है। जल संरक्षण पूरे वर्ष भर चिंता का विषय होना चाहिए। जल शक्ति मंत्रालय जल संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चला रहा है, लेकिन अपेक्षित परिणाम तभी प्राप्त हो सकते हैं जब सभी लोग अपने स्तर पर जल संरक्षण के उपाय अपनाने के लिए तैयार हों।

विजय गर्ग

कहानीः भेंट

विजय गर्ग

बूढ़े की श्रद्धा देखकर रंजन साहब भावुक हो उठे। जाने क्यों कोने पड़े उपहारों की ढेरी में सबसे कीमती उपहार गठरी में बंधे ये चावल ही जान पड़े। गठरी भी कैसी बिल्कुल दीन-हीन अवस्था में। एक बारगी लगा जैसे सुदामा आ गए हों कृष्ण की द्वारिका में और कृष्ण ने सुदामा की चावल से भरी पोटली अधिकार पूर्वक ले ली हो।

सरस्वती रमेशगोविंद का मन खिन्न है। दिन-रात बस वही चिंता कठफोड़वे की तरह चोंच मार रही है। किसी काम में जी नहीं लगता। घर की दीवारें सब मौन हैं। चूल्हे में ठंडी पड़ी आग की तरह उनकी भूख-प्यास भी ठंडी पड़ चुकी है। बुढ़ापे की हड्डियों का बचा-खुचा बल आंसुओं के साथ अवशोषित हो चुका है। पत्नी सुशीला के आंसू गोविंद के हृदय में बरछी की तरह चुभते हैं। वह बार-बार उस मनहूस घड़ी को कोसता है, जब उसने रामू को लखनऊ भेजने का फैसला किया था।

चौमासों के दिन थे। कई दिन से बरसात रुकने का नाम नहीं ले रही थी। गोविंद के खेत दो साल पहले से ही शांतेश्वर प्रसाद के पास गिरवी पड़े थे। जब एक रात रामू को पेट में भयानक दर्द उठा था। डॉक्टर बोले, 'अपेंडिक्स है। ऑपरेशन करना पड़ेगा।' आनन-फानन में खेत गिरवी रख गोविंद ने पैसों का इंतजाम किया। रामू ठीक हो गया मगर खेत जाने से घर की लक्ष्मी भी चली गई। धीरे-धीरे भंडार घर खाली होने लगे। बरसात ने गांव में खेती किसानी में मिलने वाले काम भी बंद करवा दिए थे। तेल-नून के डिब्बे खाली हो चले थे। एक दिन गोविंद ने रामू से कहा, 'बेटवा, लखनऊ में कुछ न कुछ काम जरूर मिल जाई। बंसी काका के लड़कि मुन्ना भी ओहीं है। सुना है छपाई कारखाना में काम करत है।'

रामू ने पिता की बात न काटी और अगले इतवार को लखनऊ जाने वाली पैसेंजर पकड़ ली। बेटे के जाते ही घर भांय-भांय करने लगा। अभावों से भरे इस घर में बेटे की उपस्थिति ने ही दोनों को खड़ा कर रखा था। मेहनत-मजदूरी से जो भी मिलता, वही भरा-पूरा जान पड़ता। बेटे की जवान होती भुजाएं उनके झुकते कंधों की बैशाखी थीं। गोविंद ने उसी बैशाखी को दूर भेज दिया था। मगर बेटा गया है तो कुछ काम-धंधा ही सीखेगा, यही सोचकर थोड़ा संतोष मिलता। वे पत्नी को समझाते और खुद भी हौसले का कोई कमजोर-सा स्तम्भ पकड़ खड़े रहते।

बेटा चला तो गया मगर उसकी कुछ खबर न मिली। लखनऊ गए कई लोग गांव वापस लौट आये थे। मगर रामू का कोई अता-पता नहीं। रामू को पहुंचकर कुछ खबर देनी चाहिए थी। शायद काम-धंधे की तलाश करने में वक्त ही न मिला हो या किसी काम में लग गया हो और बताने की फुर्सत न मिली हो। कई हफ्तों तक गोविंद इन्हीं सम्भावनाओं से खुद को बहलाता रहा। दिन बीतते रहे। महीना बीता। फिर साल भी बीत गया। रामू का कुछ पता नहीं चला। गोविंद एक बार मुन्ना के साथ लखनऊ भी गया। मगर इतने बड़े शहर में कहां खोजता अपने रामू को। दो-तीन दिन वहीं भटक कर फिर लौट आया।

अब रामू की अनुपस्थिति बिच्छू की तरह डंक मारती। बेटे के बिना पत्नी सुशीला की हालत देखकर गोविंद का मन कुम्हलाए हुए फूल की तरह हो गया। स्वयं को बार-बार कोसता, जाने किस घड़ी में बेटे को भेजने का कुविचार पनप गया।

कुछ दिन बाद गांव में इलेक्शन आ गया। हर ओर चुनावी गहमा-गहमी फैल गई। बड़े-बड़े दलों के नेता वोट मांगने लोगों के घर-घर पहुंचने लगे। गोविंद हर किसी को रामू की फोटो दिखाकर मदद की दरख्वास्त करता। हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाता। नेताओं से पूछता, कोई तो रास्ता होगा रामू को खोजने का। मगर कोई कुछ न बता पाता। सब खोखला आश्वासन और सहानुभूति की पुड़िया उसे पकड़ा कर चले जाते। आखिर गोविंद ने मान लिया अब उसका रामू नहीं मिलेगा। बुढ़ापे की लाठी खो गई। अब कलपने के सिवा जीवन में कुछ नहीं बचा। एक दिन सुशीला की बहन उससे मिलने पहुंची। बेटे के बिना दोनों टूट चुके थे। अपनी बहन और जीजा की ये दशा उससे देखी नहीं जा रही थी।

वह बोल पड़ी, 'जीजा, एक बेर रंजन साहब से मदद मांग के देख लेव। नए-नए बिधायक बने हैं। उ भी हमरे ही बिरादरी के हैं। शायद हमरे रामू को खोज निकाले।'

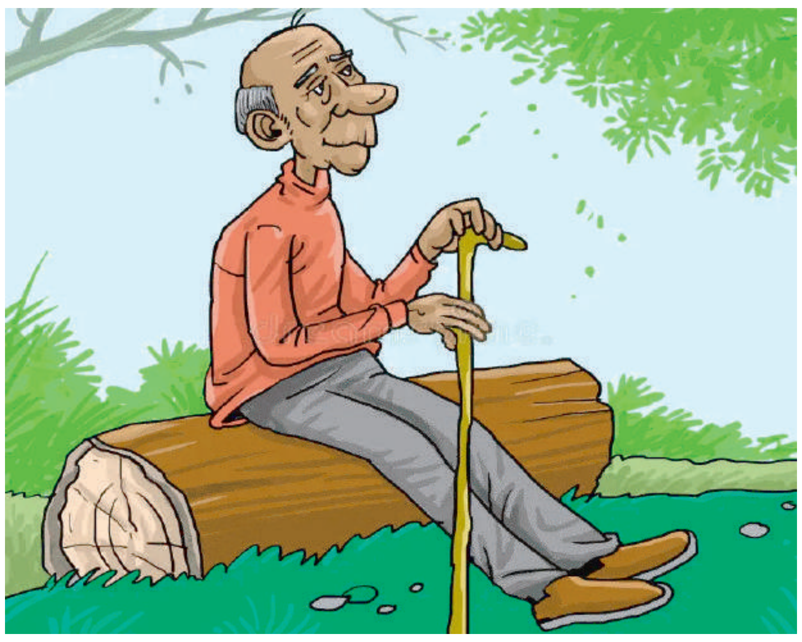

'कौनो फायदा नाही है। गरीबन के सुने वाला कौनो नाही।' गोविंद ने बुझती लौ समान धीमी आवाज में कहा।

'एक बार जाईके तो देखो। सुना है कल उनकर जन्मदिन भी है।'

'जन्मदिन है तो का खाली हाथ चले जाएं।'

'खाली काहे। हम पांच किलो चावल लाये हैं। ओही लेके चले जाना।'

गोविंद ने सुशीला की ओर देखा। उसकी आंखों में जैसे कोई उम्मीद चमकी। इस उम्मीद को खारिज करने की हिम्मत गोविंद नहीं कर पाया। अगले दिन वह रंजन साहब के घर चल पड़ा। रंजन साहब के घर आज सुबह से ही लोगों का तांता लगा हुआ है। हर कोई रंजन साहब को जन्मदिन की बधाई देने के लिए उतावला हो रहा है। हो भी क्यों न। रंजन साहब क्षेत्र के विधायक जो ठहरे। हालांकि रंजन साहब शहर में रहते हैं और उनका विधानसभा क्षेत्र शहर से चालीस किलोमीटर दूर स्थित है। पर आने वालों की कोई कमी नहीं। असल में, उनकी कृपा दृष्टि जिस पर हो जाए, उसके भाग्य उदय हो सकते हैं। इसलिए सब अपनी-अपनी हैसियत के हिसाब से उपहार लेकर चले आ रहे हैं। किसी के हाथ में ब्रांडेड कपड़ों का पैकेट है तो किसी के हाथ में मिठाइयां। कोई नमकीन के पैकेट लेकर आ रहा है तो कोई ड्राई फ्रूट्स। कोई फूलों का गुलदस्ता तो कोई फूलदान। हॉल के एक कोने में उपहारों का ढेर लग गया है। लोगों की शुभकामनाएं लेने के लिए आज रंजन साहब भी सुबह से ही नीचे हॉल में बैठे हैं। सभी के उपहार पूरी आत्मीयता से स्वीकार कर रहे हैं। बड़ों को प्रणाम और छोटों को आशीष दे रहे हैं। पूरा दिन गहमा-गहमी में बीत गया। शाम ढलने को हुई तो लोगों का आना कम हुआ। जब लगा अब कोई नहीं आएगा, रंजन साहब उठकर जाने लगे। तभी गोविंद ने मुख्य द्वार पर दस्तक दी। हाथ में लाठी, मैले-कुचले कपड़े, कुर्ते में कई जगह पैबंद लगा। मैल के कारण धोती का असली रंग पता नहीं चल रहा था। माथे पर पसीने की बूंदें चूचुहा गई थीं। कुर्ता भी कुछ गीला हो चला था। सिर पर गठरी धरे उसने भीतर प्रवेश किया।

रंजन जी ने आगे बढ़कर बूढ़े की गठरी उतार ली और उनको सोफे पर बैठने का इशारा किया। नौकर से पानी लाने का संकेत किया।

'आइए बैठिए बाबा। कहां से चले आ रहे हैं?' रंजन साहब ने पूछा।

'हम रामपुर गांव से आये हैं। आपको जन्मदिन की शुभकामना देय खातिर। हमरी ओर से ई छोटी सी भेंट स्वीकार करो।' बूढ़े गोविंद ने गठरी रंजन साहब को सौंपते हुए कहा।

'इस गठरी में क्या है बाबा?' रंजन साहब ने पूछा।

'चावल है। हम गरीब लोग हैं साहेब। तोहफा नहीं खरीद सकते। इसे ही हमार तोहफा समझो।' गोविंद ने संकोच से कहा।

'बाबा आपने मेरे लिए इतनी तकलीफ क्यों की?'

'तुम हमरे बेटवा जैसे हो। बेटवा से तो स्नेह होता है, तकलीफ नहीं।'

बूढ़े की श्रद्धा देखकर रंजन साहब भावुक हो उठे। जाने क्यों कोने पड़े उपहारों की ढेरी में सबसे कीमती उपहार गठरी में बंधे ये चावल ही जान पड़े। गठरी भी कैसी बिल्कुल दीन-हीन अवस्था में। एक बारगी लगा जैसे सुदामा आ गए हों कृष्ण की द्वारिका में और कृष्ण ने सुदामा की चावल से भरी पोटली अधिकार पूर्वक ले ली हो।

'कहां खो गए बेटवा।' बूढ़ा गोविंद बोला।

'कहीं नहीं बाबा, मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताइये।' रंजन जी ने खुद को संभालते हुए कहा।

'सेवा तो कुछ नाही एक उपकार कर दो,' बूढ़ा बुदबुदाया। और अपने कुर्ते की जेब से एक तस्वीर निकालकर रंजन साहब के आगे बढ़ा दिया।

'ई हमार बेटवा है रामू। सालभर पहले लखनऊ गवा रहा काम की तलाश में। अबही तक नाही लौटा। इसकी कोई खबर मिल जाये तो बड़ा उपकार होगा।' गोविंद ने बोझिल स्वर में कहा।

रंजन साहब ने फोटो ध्यान से देखा।

'बाबा आप अपना नाम, पता लिखवा दीजिये। हम पता करते हैं। हमें जैसे ही कुछ पता चलेगा, हम आपको संदेश भिजवा देंगे।'

'साहेब जरा धियान रखें।' गोविंद ने हाथ जोड़कर कहा।

'आप चिंता न करें। आपके बेटे को तलाशना हमारी जिम्मेदारी है।' रंजन साहब बोले।

मिटती उम्मीद एक बार फिर जीवित हो उठी। बेटे को पाने की लालसा फिर हिलोर मारने लगी। इंतजार की लंबी सड़कें कुछ छोटी जान पड़ीं।

रंजन साहब का लखनऊ आना-जाना था। वहां के बड़े ओहदे के लोगों से जान-पहचान थी। रामू को खोजने में बहुत मुश्किल नहीं हुई। मगर मुश्किल यह हुई कि रामू चोरी के जुर्म में जेल में बंद था। लखनऊ जाकर रामू एक सेठ की दुकान पर नौकरी कर रहा था। एक दिन दुकान में चोरी हो गई। सेठ को रामू पर शक हुआ। उसने उसे जेल भेजवा दिया। तब से वह जेल में ही बंद है।

रंजन साहब ने इलाके के दरोगा को मामले की जांच करने का अनुरोध किया। छानबीन करने से पता चला रामू निर्दोष है। रामू जेल से रिहा हो गया। रंजन साहब स्वयं उसे लेने गए। उसे लेकर वो सीधे गोविंद के पास पहुंच गए।

'लो बाबा मैं आपका बेटा वापस लेकर आया हूं।' रंजन साहब ने बूढ़े के घर पहुंचते ही कहा।

सालभर से लापता बेटे को देखते ही बूढ़े गोविंद की आंखें छलक उठीं। पत्नी भी भीतर से भागती हुई आई। इतने दिनों की प्रतीक्षा के बाद सहसा बेटे को देखकर उन्हें अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। दोनों ने रामू का चेहरा छू कर देखा। बाहें दबायीं। उंगलियां भींच कर उसके अहसास को अपने भीतर उतारा। जब रामू के लौटने का पूरा भरोसा हुआ तो दोनों बेटे से लिपट रोने लगे।

'हम लौट आएं हैं बापू। अब काहे रो रहे हो।' रामू बोला।

'रो नाहीं रहे हैं। ई तो तुमसे मिले की खुशी है पगले।' गोविंद ने कहा।

रंजन साहेब गीले नेत्रों से सब देख रहे थे।

बड़ी देर बाद गोविंद ने खुद को संभालते हुए कहा, 'हमार बेटवा को लाकर आप हमार जीवन वापस लाये हो। आप हमरे भगवान हो। ई उपकार का बदला हम कईसे चुकाएंगे।' गोविंद ने हाथ जोड़ रखे थे। रंजन साहब ने उसका हाथ पकड़ लिया। 'बाबा आपने हमें बेटा माना है। बेटे उपकार नहीं करते, बस स्नेह का बदला स्नेह से चुकाते हैं।'

कहकर रंजन साहब अपनी गाड़ी में जा बैठे। पांच किलो चावलों के मामूली भेंट के बदले बूढ़े को वो एक कीमती भेंट देकर लौट पड़े।

जाने यज्ञ कुंड कितने प्रकार के होते हैं ?

यज्ञ कुंड मुख्यतः आठ प्रकार के होते हैं और सभी का प्रयोजन अलग अलग होता हैं ।

1. योनी कुंड – योग्य पुत्र प्राप्ति हेतु ।
2. अर्ध चंद्राकार कुंड – परिवार मे सुख शांति हेतु । पर पतिपत्नी दोनों को एक साथ आहुति देना पड़ती हैं ।
3. त्रिकोण कुंड – शत्रुओं पर पूर्ण विजय हेतु ।
4. वृत्त कुंड - जन कल्याण और देश मे शांति हेतु ।
5. सम अष्टास्त्र कुंड – रोग निवारण हेतु ।
6. सम षडास्त्र कुंड – शत्रुओ मे लड़ाई झगडे करवाने हेतु ।
7. चतुष्कोणा स्त्र कुंड – सर्व कार्य की सिद्धि हेतु ।
8. पदम कुंड – तीव्रतम प्रयोग और मारण प्रयोगों से बचने हेतु ।

तो आप समझ ही गए होंगे की सामान्यतः हमें चतुर्वर्ग के आकार के इस कुंड का ही प्रयोग करना हैं ।

ध्यान रखने योग्य बाते :- अब तक आपने शास्त्रीय बाते समझने का प्रयास किया यह बहुत जरुरी हैं । क्योंकि इसके बिना सरल बाते पर आप गंभीरता से विचार नही कर सकते ।

सरल विधान का यह मतलब कदापि नही की आप गंभीर बातों को हृद्यगमन ना करें ।

जप के बाद कितना और कैसे हवन किया जाता हैं ? कितने लोग और किस प्रकार के लोग की **आप सहायता ले सकते हैं ?**

कितना हवन किया जाना हैं ? हवन करते समय किन किन बातों का ध्यान रखना हैं ?

क्या कोई और सरल उपाय भी जिसमे हवन ही न करना पड़े ? किस दिशा की ओर मुंह करके बैठना हैं ?

किस प्रकार की अग्नि का आह्वान करना हैं ? किस प्रकार की हवन सामग्री का उपयोग करना हैं ?

दीपक कैसे और किस चीज का लगाना हैं ?

कुछ ओर आवश्यक सावधानी ? आदि बातों के साथ अब कुछ बेहद सरल बाते को अब हम देखेगे ।

जब शास्त्रीय गूढता युक्त तथ्य हमने समंझ लिए हैं तो अब सरल बातों और किस तरह से करना हैं पर भी

कुछ विषद चर्चा की आवश्यकता हैं ।

1. कितना हवन किया जाए ?

शास्त्रीय नियम तो दसवे हिस्सा का हैं ।

इसका सीधा मतलब की एक अनुष्ठान मे 1,25,000 जप या 1250 माला मंत्र जप अनिवार्य हैं और इसका दशवा हिस्सा होगा 1250/10 =

125 माला हवन मतलब लगभग 12,500 आहुति । (यदि एक माला मे 108 की जगह सिर्फ100 गिनती ही माने तो) और एक आहुति मे मानलो 15 second लगे तब कुल 12,500 *

15 = 187500 second मतलब 3125 minute मतलब 52 घंटे लगभग । तो किसी एक व्यक्ति

के लिए इतनी देर आहुति दे पाना क्या संभव हैं ?

2. तो क्या अन्य

व्यक्ति की सहायता ली जा सकती हैं ? तो इसका

उतर

हैं हाँ । पर वह सभी शक्ति मंत्रो से दीक्षित हो या अपने ही गुरु भाई बहिन हो तो अति उत्तम हैं । जब यह भी न संभव हो तो गुरुदेव के श्री चरणों मे अपनी असमर्थता व्यक्त कर मन ही मन

उनसे आशीर्वाद लेकर घर के सदस्यों की सहायता ले सकते हैं ।

3. तो क्या कोई और उपाय नही हैं ? यदि दसवां हिस्सा संभव न हो तो शतांश हिस्सा भी हवन

किया जा सकता हैं । मतलब 1250/100 = 12.5 माला मतलब लगभग 1250 आहुति = लगने वाला समय = 5/6 घंटे ।यह एक साधक के लिए संभव हैं ।

4. पर यह भी हवन भी यदि संभव ना हो तो ? कतिपय साधक किराए के मकान में या फ्लैट में रहते हैं वहां आहुति देना भी संभव नही है तब क्या ? गुरुदेव जी ने यह भी विधान सामने रखा की साधक यदि कुल जप संख्या का एक चौथाई हिस्सा जप और कर देता है संकल्प ले कर की मैं दसवा हिस्सा हवन नही कर पा रहा हूँ । इसलिए यह मंत्र जप कर रहा हूँ तो यह भी संभव हैं । पर इस केस में शतांश जप नही चलेगा इस बात का ध्यान रखे ।

5. स्रुक स्रुव :- ये आहुति डालने के काम मे आते हैं । स्रुक 36 अंगुल लंबा और स्रुव 24 अंगुल लंबा होना चाहिए । इसका मुंह आठ अंगुल और कंठ एक अंगुल का होना चाहिए । ये दोनों स्वर्ण रजत पीपल आमपलाश की लकड़ी के बनाये जा सकते हैं ।

6 । हवन किस चीज का किया जाना चाहिये ?

- शांति कर्म मे पीपल के पत्ते, गिलोय, घी का ।
- पुष्टि क्रम में बेलपत्र चमेली के पुष्प घी ।
- स्त्री प्राप्ति के लिए कमल ।
- दरिद्र्यता दूर करने के लिये दही और घी का ।
- आकर्षण कार्यों में पलाश के पुष्प या सेंधा नमक से ।
- वशीकरण मे चमेली के फूल से ।
- उच्चाटन मे कपास के बीज से ।
- मारण कार्य में धतूरे के बीज से हवन किया जाना चाहिए ।

7. दिशा क्या होना चाहिए ? साधरण रूप से

जो हवन कर रहे हैं वह कुंड के पश्चिम मे बैठे और उनका मुंह पूर्व

दिशा की ओर होना चाहिये । यह भी विशद व्याख्या चाहता है । यदि षट्कर्म किये

जा रहे हो तो ;

- शांती और पुष्टि कर्म में पूर्व दिशा की ओर हवन कर्ता का मुंह रहे ।
- आकर्षण मे उत्तर की ओर हवन कर्ता का मुंह रहे और यज्ञ कुंड वायु कोण में हो ।
- विद्वेषण मे नैऋत्य दिशा की ओर मुंह रहे यज्ञ कुंड वायु कोण में रहे ।
- उच्चाटन मे अग्नि कोण में मुंह रहे यज्ञ कुंड वायु कोण मे रहे ।
- मारण कार्यों में - दक्षिण दिशा में मुंह और दक्षिण दिशा में हवन कुंड हो ।

8. किस प्रकार के हवन कुंड का उपयोग किया जाना चाहिए ?

- शांति कार्यों मे स्वर्ण, रजत या ताबे का हवन कुंड होना चाहिए ।
- अभिचार कार्यों मे लोहे का हवन कुंड होना चाहिए।
- उच्चाटन मे मिटटी का हवन कुंड ।
- मोहन्‌कार्यों मे पीतल का हवन कुंड ।
- और ताबे के हवन कुंड में प्रत्येक कार्य में उपयोग किया जा सकता है ।

9. किस नाम की अग्नि का आवाहन किया जाना चाहिए ?

- शांति कार्यों मे वरदा नाम की अग्नि का आवाहन किया जाना चहिये ।
- पुर्णाहुति मे शतमंगल नाम की ।
- पुष्टि कार्योंमे बलद नाम की अग्नि का ।
- अभिचार कार्योंमे क्रोध नाम की अग्नि का ।
- वशीकरण मे कामद नाम की अग्नि का आहवान किया जाना चहिये

: 10. कुछ ध्यान योग बाते :-

- नीम या बबुल की लकड़ी का प्रयोग ना करें ।
- यदि शमशान मे हवन कर रहे हैं तो उसकी कोई भी चीजे अपने घर मे न लाये ।
- दीपक को बाजोट पर पहले से बनाये हुए चन्दन के त्रिकोण पर ही रखे ।
- दीपक मे या तो गाय के घी का या तिल का तेल का प्रयोग करें ।
- घी का दीपक देवता के दक्षिण भाग में और तिल का तेल का दीपक देवता के बाए ओर लगाया जाना चाहिए ।
- शुद्ध भारतीय वस्त्र पहिन कर हवन करें ।
- यज्ञ कुंड के ईशान कोण मे कलश की स्थापना करें ।
- कलश के चारो ओर स्वास्तिक का चित्र अंकित करें ।
- हवन कुंड को सजाया हुआ होना चाहिए ।

अभी उच्चस्तरीय इस विज्ञानं के अनेको तथ्यों को आपके सामने आना बाकी हैं । जैसे की ₹यज्ञ कल्प सूत्र विधान₹क्या हैं ।

जिसके माध्यम से आपकी हर प्रकार की इच्छा की पूर्ति केवल मात्र यज्ञ के माध्यम से हो जाति हैं । पर यह यज्ञ कल्प विधान हैं क्या ? यह और भी अनेको उच्चस्तरीय तथ्य जो आपको विश्वास ही नही होने देंगे की यह भी संभव हैं । इस आहुति विज्ञानं के माध्यम से आपके सामने भविष्य मे आयंगे । अभी तो मेरा उदेश्य यह हैं की इस विज्ञानं की प्रारंभिक रूप रेखा से आप परिचित हो । तभी तो उच्चस्तर के ज्ञान की आधार शिला रखी जा सकती हीं क्योंकि कोई भी विज्ञानं क्या मात्र चार भाव मे सम्पूर्णता से लिया जा सकता हैं ? कभी नही । यह 108 विज्ञान मे से एक हैं ।

सनातन धर्म की जय हो

सांसद राजकुमार चाहर ने लोकसभा में भारत के महापुरुषों के योगदान को सम्मानित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया

परिवहन विशेष न्यूज

महापुरुषों के नाम पर मार्गों का नामकरण किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियां इनके योगदान को जान सकें और उनका सम्मान एवं वीरता को याद रखा जा सके : चाहर

आगरा, संजय साग़र सिंह। फतेहपुर सीकरी के सांसद और भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार चाहर ने लोकसभा में भारत के महापुरुषों के योगदान को सम्मानित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया।

फतेहपुर सीकरी सांसद चाहर ने कहा कि भारत की राजधानी दिल्ली और वहां स्थित लोकसभा भवन के चारों ओर जो मार्ग स्थित हैं, उन्हें मुग़ल आक्रांताओं के नाम पर रखा गया है, जिनमें तुगलक रोड, अकबर रोड, हिमांयू रोड, दाराशिकोह रोड जैसी सड़कें शामिल हैं।

श्री चाहर ने यह आरोप लगाया कि यह नामकरण कांग्रेस सरकार के शासनकाल में किया गया था और ये नाम मुग़ल आक्रमणकारियों के सम्मान में रखे गए थे, जो भारत की धरती पर लुटेरे थे।

सांसद राजकुमार चाहर ने लोकसभा अध्यक्ष से निवेदन करते हुए सरकार से यह आग्रह किया कि इन मार्गों का नाम बदलकर भारत के महान और वीर महापुरुषों के नाम पर रखा जाए।

उन्होंने उदाहरण स्वरूप कई महापुरुषों के नाम सुझाए, जिनमें महाराणा सांगा, पृथ्वीराज चौहान, गुरु गोविंद सिंह, महाराजा सूरजमल, गोकुला जाट, शिवाजी महाराज और हेमू विक्रमादित्य जैसे वीर योद्धा शामिल हैं।

संसद चाहर ने कहा, ₹हमारे पूर्वजों ने मुग़ल आक्रांताओं से जंग लड़ी और हमें स्वतंत्रता दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन वीरों के कारण ही हम आज अपनी संस्कृति और अस्तित्व को बनाए रख पाए हैं। इसलिए इन महापुरुषों के नाम पर इन मार्गों का नामकरण किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियां इनके योगदान को जान सकें और उनका सम्मान कर सकें।₹

उन्होंने यह भी कहा, "यह माँग भारतीय संस्कृति और इतिहास को सम्मान देने के लिहाज से एक अहम कदम है। सांसद चाहर ने इस प्रस्ताव को सरकार से शीघ्र लागू करने की मांग की, ताकि देश की महान हस्तियों का सम्मान किया जा सके और उनकी वीरता को याद रखा जा सके।

इण्डिया बुक ऑफ रिकॉड्र्स अवार्ड का समर्पण कल

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। निम्बार्क वैदिक संस्कृत समिति भीलवाड़ा संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसारार्थ विगत 16 वर्षों से निरन्तर कार्य कर रही है समिति के प्रान्तीय संयोजक डॉ० के० जी० जांगिड़ ने बताया कि संस्था द्वारा अब तक 2 लाख 28 हजार 918 छात्र छात्राओं को संस्कृत वाङ्मय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता से जोड़ने पर संस्था का नाम इण्डिया बुक ऑफ रिकॉड्र्स में 6 फरवरी 2025 को दर्ज हुआ। इस अवार्ड को इण्डिया बुक ऑफ रिकाड्र्स के प्रतिनिधियों के माध्यम से शनिवार को प्रातः 10.30 बजे हरिशेवा धाम उदासीन आश्रम में महामण्डलेश्वर हंसाराम उदासीन एवं सचिव नगर विकास न्यास ललित गोयल द्वारा संस्था के संरक्षक निम्बार्क आश्राम भीलवाड़ा के महन्त मोहन शरण शास्त्री, प्रदेशाध्यक्ष रामेश्वर प्रसार शर्मा एवं पदाधिकारियों को समर्पित किया जाएगा।

देश के सबसे बड़े जैन विद्वान की उत्कृष्ट समाधि

दिगंबर जैन समाज के बहुत ही सहज सरल व्यक्तित्व के धनी बड़े ही प्यार से मिलने वाले पंडित रतनलाल शास्त्री जी का वास्लय व स्नेह के साथ साथ खूब-खूब आशीष सभी समाजजनों को दिया करते थे । वह ऐसे ज्ञानी सरस्वती पुत्र पंडित जी साहब थें । जिन्होंने बहुत सारे मुनि महाराज , आर्यिका, दीदीयो को शिक्षा दी जो वर्तमान देश में जिनशासन का गौरव बड़ा रहे हैं। तभी वर्तमान आचार्य श्री समय सागर जी के दिशा-निर्देश के अनुसार उन्हें

*श्री आत्मानंदसागर जी * का नाम दिया था (पूर्वनाम पंडित रतनलाल जी शास्त्री) का 2 अप्रेल 2025 की रात्रि में सल्लेखना पूर्वक समाधि मरण हुआ, शताधिक आचार्यों एवं साधु भगवंतों के गुरु रहे, 'जीवंत जिनवाणी₹ कहे जाने वाले पंडित रतनलाल जी के पुण्यप्रताप का ही परिणाम है कि उनकी समाधि हेतु अनेकों साधु भगवंतों का उपदेश और सान्निध्य सतत उन्हें मिलता रहा। 2 अप्रेल 2025 की शाम 6 बजे ही पूज्य श्रुतसंवेगी महाश्रमण १०८ मुनिश्री आदित्य सागर जी ससंघ ने पंडित जी को संबोधन प्रदान किया था, साथ ही मुनि श्री महिमा सागर जी महाराज व निर्णय सागर जी महाराज भी वह पहुंचे थे । और इस ही रात्रि में उत्कृष्ट भावों के साथ उनका समाधि मरण हुआ। सम्पूर्ण दिगंबर जैन समाज इन्दौर के सभी वरिष्ठ समाजजनों द्वारा परम पूजनीय आत्मानंदसागर महाराज पूर्व नाम (पंडित रतनलाल शास्त्री) की उत्कृष्ट समाधि से दिगंबर जैन समाज धन्य हो गया इस मृत्यु महोत्सव पर आप जैसे महा पुण्यात्मा के चरणों में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

- हरिहर सिंह चौहान

वक्फ संशोधन बिल असहाय गरीबों के विकास के लिए ऐतिहासिक उम्मीद : वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

गरीबों के लिए दान दी गई संपत्तियों पर चैरिटेबल अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, स्टेडियम और आश्रय स्थल बनने चाहिए --- वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह

आगरा, संजय साग़र सिंह। वक्फ संशोधन बिल को संसद में मंजूरी मिलने के बाद वरिष्ठ समाजसेवी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मुबारकबाद दी और इसे असहाय गरीबों के विकास की दिशा में एक बड़ा कदम बताया। उन्होंने इस बिल को गरीबों के लिए एक ऐतिहासिक और समर्पित प्रयास बताया, जो उनकी भलाई में सहायक होगा।

वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने कहा, ₹यह कानून बहुत पहले आ जाना चाहिए था, लेकिन जिन लोगों ने सिर्फ वोट की राजनीति की, उन्होंने इसे कभी लागू नहीं होने दिया। अब मोदी सरकार ने इसे लागू करके गरीबों के लिए एक ठोस दिशा दिखाई है।₹ उन्होंने जोर देते हुए कहा कि वक्फ संपत्तियों और दान के पैसों का सही उपयोग असहाय गरीबों की भलाई के लिए किया जाना चाहिए।

श्री सिंह ने आगे कहा, ₹गरीबों के लिए दान दी गई संपत्तियों पर चैरिटेबल अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, स्टेडियम और आश्रय स्थल बनने चाहिए, ताकि असहाय और पिछड़े समाज को शिक्षा, स्वास्थ्य और खेलों में समान अवसर मिल सके।₹ उनका मानना था कि इस कदम से गरीब और पिछड़े समाज को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

वक्फ अमेंडमेंट एक्ट को उन्होंने गरीबों के हित में एक ऐतिहासिक कदम बताया और कहा कि यह संशोधन वक्फ संपत्तियों को संगठित और नियमित करेगा, जिससे उनका सही उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा। ₹मोदी सरकार का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि वक्फ संपत्तियों और दान के पैसों का उपयोग गरीबों की भलाई के लिए होना चाहिए,₹ उन्होंने कहा।

वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने यह भी आरोप लगाया कि गरीब विरोधी दल हमेशा असहाय गरीबों के विकास में रुकावट डालते रहे हैं। उन्होंने कहा, ₹वे नहीं चाहते कि गरीब समाज मुख्यधारा में जुड़कर तरक्की करे, लेकिन मोदी सरकार पूरी ईमानदारी से गरीबों के हितों की रक्षा कर रही है।₹

उन्होंने यह भी बताया कि वक्फ अमेंडमेंट एक्ट से वक्फ बोर्ड की ऑडिटिंग और दस्तावेजीकरण किया जाएगा, जिससे अवैध कब्जे हटाए जा सकेंगे। इसके अलावा, वक्फ बोर्ड में महिलाओं और पसमांदा समाज की भागीदारी बढ़ाई जाएगी, जिससे असहायों को मजबूती मिलेगी।

साथ ही, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि गरीब लोग इस कानून के समर्थन में हैं, जबकि इसका विरोध वे लोग कर रहे हैं, जिन्होंने अवैध रूप से वक्फ संपत्तियों पर कब्जा कर रखा है।

वरिष्ठ भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने देशवासियों से अपील की कि वे भ्रम की राजनीति छोड़कर असहाय गरीबों के वास्तविक विकास पर ध्यान दें और इस ऐतिहासिक बदलाव को सकारात्मक रूप से स्वीकार करें। उन्होंने कहा, ₹यह कानून बहुत पहले आ जाना चाहिए था, लेकिन वोट की राजनीति करने वालों ने इसे कभी लागू नहीं किया। मोदी सरकार अब गरीबों के ठोस विकास के लिए प्रतिबद्ध है और यह कानून उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"

झारखंड में 53,293 स्वयं सहायता समूह को 13,659 करोड़ क्रेडिट लिंकेज सहायता

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। ग्रामीण महिलाओं के उत्थान और उनके आर्थिक स्वावलंबन के प्रति मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के सचिवालय से महिला समूह के क्रेडिट लिंकेज कार्य को आज सक्रिय कर अहम कार्य हुआ । जिसमें अब तक 2.91 लाख समूहों का जिसमें वर्ष 2019 से अब तक 53,293 से ज्यादा समूह एवं क्रेडिट लिंकेज में 14,204 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ । राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास को गति देने के लिए स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को बैंकों के साथ क्रेडिट लिंकेज सुनिश्चित कराने की पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सहायक हो रही है । ग्रामीण महिलाएं और अर्थव्यवस्था सशक्त हो, इसके लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के जरिए राज्य के 32 लाख परिवारों को आजीविका के सशक्त माध्यमों से जोड़ा गया है। कृषि, पशुपालन, वनोपज, अंडा उत्पादन, जैविक खेती आधारित आजीविका से ग्रामीण परिवारों को आच्छादित किया जा रहा है।

माइक्रोड्रिप इरिगेशन परियोजना के तहत करीब 31,861 किसानों को टपक सिंचाई तकनीक से जोड़ कर उन्नत खेती की जा रही है।

राज्य में बैंकिग कॉरेस्पॉन्डेंट सखी, पशु सखी, कृषि सखी, वनोपज मित्र, आजीविका रेशम मित्र, सीआरपी समेत, करीब 85,000 सामुदायिक कैडर को प्रशिक्षित कर परियोजना के क्रियान्वयन एवं विस्तारण में लगाया है। आधुनिक संचार तकनीक से इन महिलाओं को लैस किया गया गया ।

जल और ऊर्जा: मितव्ययिता के साथ विवेकपूर्ण उपयोग जरूरी !

वर्तमान में अप्रैल का महीना चल रहा है और अभी से ठीक-ठाक गर्मी पड़ने लगी है ।अभी से ही उत्तर भारत गर्मी का सामना करने लगा है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि हाल ही में इस संदर्भ में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने अलर्ट जारी किया है ।आईएमडी का यह अनुमान है कि इस बार अप्रैल में सामान्य से ज्यादा गर्मी पड़ेगी। गौरतलब है कि आईएमडी द्वारा कई इलाकों में 'लू' (गर्म हवाएं) का भी अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के मुताबिक उत्तर प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा सहित कुछ राज्यों में 10 से 11 दिन लू चलने की संभावना है। कहना चाहूंगा कि मौसम विभाग ने आने वाले महीनों में सामान्य से अधिक गर्मी और हीटवेव को लेकर जो अलर्ट जारी किया है, वह जलवायु परिवर्तन के गहराते संकट को इंगित करता है ।आईएमडी के मुताबिक देश में अप्रैल से जून तक तापमान सामान्य से अधिक रह सकता है। इसके अलावा मध्य और पूर्वी भारत और उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों में 'लू' चल सकती है। आशंका जताई गई है कि पश्चिमी और पूर्वी भारत के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर देश के अधिकांश हिस्सों में अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक रहेगा। वास्तव में, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश के साथ-साथ महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में भीषण गर्मी और लू का प्रकोप दिखेगा। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे धरती पर गर्म लहरों की तीव्रता बढ़ रही है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पारिस्थितिकी तंत्र, मानव स्वास्थ्य, जीवों के स्वास्थ्य, वनस्पतियों और देश की अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर पड़ता है। सच तो यह है कि अत्यधिक गर्मी उधोगों और व्यवसायों के लिए अनेक प्रकार की चुनौतियां प्रस्तुत करती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि गर्मी बढ़ने से उत्पादकता में अभूतपूर्व कमी आती है ।उच्च तापमान के संपर्क में आने वाले कर्मचारी गर्मी से संबंधित बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, जिससे कार्य कुशलता कम हो जाती है और उत्पादकता प्रभावित होती है ।अत्यधिक गर्मी आपूर्ति श्रृंखलाओं (जैसे कि परिवहन व रसद में देरी) को बाधित कर सकती है ।जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, शीतलन उद्देश्यों के लिए ऊर्जा की खपत में जबरदस्त वृद्धि होती है। यह बढ़ी हुई मांग बिजली ग्रिड पर दबाव डालती है, जिससे संभावित रूप से बिजली की कटौती होती है और निरंतर ऊर्जा आपूर्ति पर निर्भर व्यवसायों पर असर पड़ता है और ऊर्जा की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। कहना चाहूंगा कि अत्यधिक गर्मी से कई तरह से वित्तीय नुकसान हो सकता है, जिसमें कृषि में फसल की विफलता, पर्यटन पर निर्भर व्यवसायों के लिए पैदल यातायात में कमी, तथा क्षतिग्रस्त बुनियादी ढांचे के रख-रखाव की लागत में वृद्धि शामिल है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि मौसम वैज्ञानिक बहुत लंबे समय से यह चेतावनी जारी कर रहे हैं कि ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापमान) में बढ़ोत्तरी की वजह से दुनिया भर में चरम मौसमी घटनाएं बढ़ेंगी और भारत भी इससे अछूता नहीं रहेगा। गौरतलब है कि पिछले ही वर्ष यानी कि वर्ष 2024 में पहली हीटवेव ओडिशा में अप्रैल की शुरुआत में महसूस की गई थी, जबकि इस वर्ष कोंकण व तटीय कर्नाटक के कुछ हिस्सों में फरवरी का अंत आते-आते ही होटवेव जैसी स्थितियां पैदा होने से मौसम को लेकर पहले ही अनेक प्रकार की आशंकाएं व्यक्त की जा रही थीं। यह बात ठीक है कि हम ग्लोबल वार्मिंग को एकदम से रातों-रात नहीं रोक सकते हैं, लेकिन हम गर्मी रोकने वाली गैसों और कालाशे कार्बन के मानव उत्सर्जन को कम करके इसकी दर को धीमा कर सकते हैं और ग्लोबल वार्मिंग की मात्रा को काफी हद तक सीमित कर सकते हैं ।अपनी दैनिक दिनचर्याओं को समायोजित करके भी हम ग्लोबल वार्मिंग को रोकने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। मसलन, रिसाइक्लिंग (पुनर्चक्रण), परिवहन के तरीकों को बदलकर, भोजन की बर्बादी को रोककर, अपनी ऊर्जा खपत का उचित प्रबंधन करके तथा दूसरों को पर्यावरण के प्रति शिक्षित और जागरूक करके काफी हद तक ग्लोबल वार्मिंग से बचा जा सकता है। आज विभिन्न मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी की सतह के औसत तापमान में दीर्घकालिक वृद्धि हो रही है और इसके लिए मुख्य रूप से कोयला , तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन का जलना जिम्मेदार ठहराते जा सकते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि ये गतिविधियाँ ग्रीनहाउस गैसों को वायुमंडल में छोड़ती हैं, और हमारे नीले ग्रह के नाजुक जलवायु संतुलन को बिगाड़ती हैं। संक्षेप में कहें तो ग्लोबल वार्मिंग से तात्पर्य विशेष रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण पृथ्वी की सतह के तापमान में वृद्धि से है और यही तापमान वैश्विक जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा दे रहा है ।सच तो यह है कि तापमान में निरंतर वृद्धि दुनिया भर में व्यवधानों को बढ़ावा देती है। मसलन, अधिक चरम गर्मी पिघलती बर्फ की टोपियों से लेकर बारिश के बदलते पैटर्न तक, कृषि और जल आपूर्ति को प्रभावित करते हैं। ग्लोबल वार्मिंग से समुद्र का स्तर बढ़ता है। ग्लेशियर और बर्फ की चादरें पिघलने लगतीं हैं ।उच्च तापमान से तूफान, वन्य आग, बाढ़ और सूखे की घटनाएं बढ़ जाती हैं। जैव-विविधता की हानि होती है। सच तो यह है कि आज कई प्रजातियां बदलती जलवायु के अनुकूल ढलने के लिए संघर्ष कर रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप विलुप्ति हो रही है। तापमान बढ़ोत्तरी से महासागरों का अम्लीकरण होता है। इससे अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड महासागरों में घुल जाती है, जिससे पीएच स्तर में परिवर्तन होता है और समुद्री जीवन को नुकसान पहुंचता है। धरती का तापमान बढ़ता है तो भोजन एवं पानी की कमी हो जाती है। सच तो यह है कि सूखे और अनियमित मौसम से फसल की पैदावार कम हो जाती है, जिससे खाद्य सुरक्षा को खतरा पैदा हो जाता है ।वायु प्रदूषण और अत्यधिक गर्मी श्वसन संबंधी बीमारियों और हीटस्ट्रोक में योगदान देती है। संक्षेप में कहें तो इससे स्वास्थ्य पर संकट बढ़ते हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि हमने समय रहते अपने कार्बन उत्सर्जन (ग्रीन हाउस गैसों) को नियंत्रित नहीं किया और पर्यावरण संरक्षण को उचित प्राथमिकता नहीं दी, तो आने वाले वर्षों में हालात और भी भयावह हो सकते हैं ।आज वनों की कटाई, चरागाहों में लगातार कमी और अनियंत्रित औधोगिकीकरण और शहरीकरण ने मौसम चक्र को असंतुलित किया है, जिससे मौसम संबंधी असामान्य घटनाएं भारत समेत पूरी दुनिया में बढ़ी हैं। पाठकों को बताता चलूं कि पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय संधि है, जो वर्ष 2015 में पेरिस में हुआ था लेकिन अमेरिका ने पेरिस समझौते से दूरी बनाकर अपना रुख पहले ही स्पष्ट कर दिया है। पाठकों को बताता चलूं कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा था कि यह समझौता अमेरिकी आर्थिक हितों को नुकसान पहुंचा रहा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अमेरिका तो अमेरिका ग्रीनहाउस गैसों (कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड आदि) के उत्सर्जन के लिए चीन, भारत, रूस, इंडोनेशिया, ब्राज़ील, जापान, ईरान, और कनाडा जैसे देश ज़्यादा ज़िम्मेदार हैं। एक जानकारी के अनुसार इन देशों ने साल 2020 में कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का करीब 67% हिस्सा अदा किया था। एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, यूरोपीय संघ , रूस और ब्राजील वर्ष 2023 में दुनिया के सबसे बड़े जीएचजी (ग्रीन हाउस गैस) उत्सर्जक थे। साथ में वे वैश्विक जनसंख्या का 49.8%, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 63.2%, वैश्विक जीवाश्म ईंधन खपत का 64.2% और वैश्विक जीएचजी उत्सर्जन का 62.7% हिस्सा हैं। इन शीर्ष उत्सर्जकों में से, वर्ष 2023 में चीन , भारत , रूस और ब्राजील ने वर्ष 2022 की तुलना में अपने उत्सर्जन में वृद्धि की, जिसमें भारत में सापेक्ष रूप से सबसे बड़ी वृद्धि (+ 6.1%) और चीन में 784 मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड की सबसे बड़ी निरपेक्ष वृद्धि हुई ।यह विडंबना ही है कि आज विकसित देश विकासशील देशों को ग्रीन हाउस गैसों का जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, लेकिन खुद इन गैसों पर नियंत्रण नहीं कर रहे हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जरूरत इस बात की है कि हम सौर व ऊर्जा के अन्य नवीकरणीय स्रोतों पर जोर दें, ताकि पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम हो सके। पाठकों को बताता चलूं कि ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों में सौर ऊर्जा के अलावा क्रमशः पवन ऊर्जा, जल विद्युत, भूतापीय ऊर्जा, बायोमास, इथेनॉल, तरंग और ज्वारीय ऊर्जा को शामिल किया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि नवीकरणीय ऊर्जा प्राकृतिक और स्व-पुनःपूर्ति करने वाली ऊर्जा होती है तथा इनका कार्बन फ़ुटप्रिंट कम या शून्य होता है। इतना ही नहीं, ये ऊर्जा स्रोत कभी खत्म भी नहीं होते हैं। वास्तव में, इनका इस्तेमाल करके हम जलवायु परिवर्तन से निपट सकते हैं, क्यों कि इनमें से कई संसाधन सीधे वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नहीं करते हैं। ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने होंगे। जल और ऊर्जा की बचत करनी होगी अथवा इनका मितव्ययिता के साथ विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। ग्लोबल वार्मिंग से तभी बचा जा सकता है जब हम जागरूक होकर जल-जंगल-जमीन की रक्षा के लिए आगे आए, प्रकृति व इसके संसाधनों का अंधाधुंध दोहन न करें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

डीजीसीए ने पीटीटी और आरईटी उड़ानों में तेजी लाने की अनुमति दी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: बीजू पटनायक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उड़ान और लैंडिंग प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए कदम उठाए गए हैं। हवाई अड्डे पर पीटीटी (समानांतर टैक्सी ट्रैक) और एआरआई (रैपिड एग्जिट टैक्सीवे) का काम पूरा हो चुका है। आज डीजीसीए अधिकारियों ने तैयार हो चुके ट्रैक का निरीक्षण किया और कहा कि यह कार्यान्वयन उड़ान प्रक्रिया को और भी आसान बनाने में बहुत सहायक होगा।डीजीसीए ने कहा है कि पीटीटी और एआरटी की अनुमति तुरंत दे दी जाएगी। हालांकि, पीटीटी किसी भी विमान को टैक्सीवे ट्रैक से तुरंत रनवे पर जाने में सक्षम बनाएगा, जिससे उड़ान को तुरंत भरने में मदद मिलेगी। इसी प्रकार, आरईटी का उपयोग करके किसी भी विमान को उतारने के बाद, उसे दूसरे विमान के लिए रास्ता बनाने हेतु थोड़े समय के भीतर रनवे से टैक्सीवे पर ले जाया जा सकता है। हालांकि, भुवनेश्वर में रनवे की

कुल लंबाई फिलहाल 2744 है और एक बार ये दोनों टैक्सीवे चालू हो जाएं तो प्रति घंटे करीब 20 विमानों के उड़ान भरने और उतरने की प्रक्रिया और भी तेज हो जाएगी।

ओडिशा राज्य राजमार्ग प्राधिकरण विधेयक विधानसभा में पारित, 75 हजार किलोमीटर विश्वस्तरीय सड़कें बनेंगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: राज्य में 75,000 किलोमीटर विश्व स्तरीय सड़कें बनाई जाएंगी। निर्माण कार्य समय पर पूरा करने के लिए फास्ट-ट्रैक दृष्टिकोण के तहत काम में तेजी लाई जाएगी। इसे ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार के राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) की तर्ज पर ओडिशा में भी राज्य राजमार्ग प्राधिकरण (ओएसएचए) का गठन किया जाएगा।ओडिशा राज्य राजमार्ग प्राधिकरण विधेयक-2025 विधानसभा में पारित हो गया है। यह संगठन राज्य राजमार्गों के निर्माण के लिए आवश्यक कदम जैसे भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास, पर्यावरण मंजूरी, वन मंजूरी आदि पर काम करेगा। सड़कों के निर्माण के दौरान, शहर के भीतर यातायात की समस्याओं को कम करने के लिए इस कंपनी द्वारा पहुंच सड़कों का निर्माण भी किया जाएगा। ओडिशा राज्य

राजमार्ग प्राधिकरण में एक अध्यक्ष सहित चार पूर्णकालिक सदस्यों की नियुक्ति की जाएगी। इसमें एक वित्त सदस्य, एक सुरक्षा एवं प्रौद्योगिकी सदस्य, एक कार्य, अनुबंध एवं संचालन सदस्य तथा एक परामर्श एवं साझेदारी सदस्य होंगे। इसके साथ ही छह अंशकालिक सदस्य भी नियुक्त किये जायेंगे। उनकी नियुक्ति राज्य सरकार की खोज एवं चयन समिति के माध्यम से की जाएगी।

रिदमशाला: संगीत के सुरों से मानसिक स्वास्थ्य की ओर एक कदम : प्रियंका

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में मानसिक तनाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। खासकर बच्चों और युवाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है। इस चुनौती का समाधान खोजने के लिए डॉ. अंकुर शरण ने 'रिदमशाला' की शुरुआत की, जो एक अनोखी पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य संगीत के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करना और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना है।

क्या है 'रिदमशाला' ?

'रिदमशाला' एक सामुदायिक शिक्षण अनुभव है, जहां हर कोई लय की कला का आनंद ले सकता है। भले ही आप किसी वाद्ययंत्र में नए हों, लेकिन लय आपके लिए जानी-पहचानी होती है। हमारा शरीर और आत्मा स्वाभाविक रूप से लय को समझते हैं।

यह एक ऐसा मंच है, जहां बच्चों और युवाओं को विभिन्न वाद्ययंत्रों की शिक्षा दी जाती है। यह न केवल उन्हें संगीत से जोड़ता है, बल्कि मानसिक तनाव को कम करने और आत्मविश्वास बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होता है।

वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि संगीत का अभ्यास मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बेहतर बनाता है, एकाग्रता को बढ़ाता है और तनाव को कम करता है। 'रिदमशाला' का उद्देश्य है—संगीत के माध्यम से हर व्यक्ति को अपनी आंतरिक लय से जोड़ना और जीवन को एक सुंदर ताल में ढालना।

डॉ. अंकुर शरण की प्रेरणा

डॉ. अंकुर शरण, जो खुद एक अनुभवी विशेषज्ञ हैं, ने महसूस किया कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के लिए एक रचनात्मक और व्यावहारिक समाधान की आवश्यकता है। संगीत उनके लिए सिर्फ एक कला नहीं, बल्कि एक चिकित्सा का माध्यम भी है। उन्होंने बच्चों और युवाओं में बढ़ते मानसिक तनाव को दूर करने के लिए 'रिदमशाला' की स्थापना की, जहां वे संगीत के जरिए खुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं और एक सकारात्मक मानसिकता विकसित कर सकते हैं।

कैसे करता है रिदमशाला काम ?

संगीत और ध्यानः संगीत के साथ-साथ ध्यान (मेडिटेशन) को भी सिखाया जाता है, जिससे मानसिक संतुलन बेहतर होता है।

ग्रुप परफॉर्मेंसः समूह में संगीत बजाने से टीमवर्क और आत्मविश्वास बढ़ता है।

मनोवैज्ञानिक समर्थनः पेशेवरों द्वारा मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए काउंसलिंग और गाइडेंस भी दी जाती है।

रिदमशाला का प्रभाव

अब तक, सैकड़ों बच्चे और युवा इस पहल से लाभान्वित हो चुके हैं। कई ऐसे मामले सामने आए हैं जहां बच्चों ने संगीत के माध्यम से अपने डर, घबराहट और अवसाद पर काबू पाया है। यह कार्यक्रम न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सुधारता है, बल्कि एक नई ऊर्जा और आत्मविश्वास भी प्रदान करता है।

ड्रमिंग और ताल की कला के लाभ

मानसिक संतुलन और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता – जब हम तालबद्ध तरीके से ताली बजाते हैं या ढोल बजाते हैं, तो हमारा मस्तिष्क एक लय में ढल जाता है। इससे एकाग्रता और सोचने की क्षमता में सुधार होता है।

तनाव कम करने में सहायक – ड्रमिंग थेरेपी को वैज्ञानिक रूप से तनाव कम करने और मानसिक शांति बढ़ाने के लिए प्रभावी माना गया है।

टीम वर्क और समन्वय – जब समूह में ड्रमिंग की जाती है, तो यह टीम वर्क और एक-दूसरे के साथ तालमेल बैठाने की कला सिखाती है। यह कार्यस्थल और सामाजिक जीवन में बेहतर समन्वय बनाने में सहायक होता है।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य – ताली बजाने से हाथों की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और शरीर में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है।

संस्कृति और परंपरा से जुड़ाव – भारतीय संगीत और परंपराओं में ताल का विशेष महत्व है। इसे समझने से हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहते हैं।

शिक्षा और जीवन कौशल में ताल का महत्व

बच्चों में ताल का अभ्यास कराने से उनकी गणितीय क्षमता, भाषा कौशल और रचनात्मकता में वृद्धि होती है। यह स्कूलों में 'लर्निंग बाय डूइंग' (Learning by Doing) के सिद्धांत को मजबूत करता है।

संस्कारशाला के अंतर्गत यदि बच्चों को ड्रमिंग और ताल की समझ विकसित करने के अवसर दिए जाएं, तो यह उनके मानसिक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

भविष्य की योजनाएं

डॉ. अंकुर शरण की योजना है कि 'रिदमशाला' को और व्यापक स्तर पर ले जाया जाए, ताकि अधिक से अधिक बच्चे और युवा इससे लाभान्वित हो सकें। उनकी सोच है कि हर बच्चे को संगीत के माध्यम से एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने का अवसर मिले।

'रिदमशाला' न केवल मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक सशक्त मंच है, बल्कि यह आत्म-सशक्तिकरण और भावनात्मक सुदृढ़ता का भी माध्यम है। इस पहल ने यह साबित किया है कि संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन को सकारात्मक ऊर्जा और संतुलन देने का साधन भी है।

इसके विस्तार में युवा प्रतिभाओं, म्यूज़िक हॉर्न टीम और उन सभी समर्पित कलाकारों का योगदान शामिल होगा, जिन्होंने संगीत को आत्मा से जोड़ने और जीवन को लयबद्ध बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। 'रिदमशाला' का उद्देश्य है—संगीत के साथ जीवन का आनंद लेना और हर धड़कन को सुरों की लय में ढालना।

संस्कारशाला: "टोकना और रोकना जरूरी है"

(संवाद : अंकुर और उनकी अम्मा के बीच)

अंकुर : अम्मा, आजकल लोग बड़े गर्व से कहते हैं कि उन्हें अपने पड़ोसी का नाम तक नहीं पता। पहले ऐसा तो नहीं था, क्यों?

अम्मा : बेटा, पहले जमाने में मोहल्ले का हर घर एक परिवार जैसा होता था। अगर बच्चा कोई गलत हरकत करता, तो पड़ोसी भी उसे टोकता और सही रास्ता दिखाता। लेकिन अब, लोग इसे अपनी आज़ादी में दखल मानते हैं।

अंकुर : लेकिन अम्मा, क्या किसी को टोकना या रोकना सही है? कहीं यह किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन तो नहीं?

अम्मा : बेटा, सही और गलत का फर्क समझाने के लिए टोकना जरूरी होता है। जब कोई बच्चा गलत राह पर जाता है, तो माता-पिता उसे समझाते हैं, रोकते हैं। वैसे ही समाज में भी अगर कोई गलत कर रहा हो, तो उसे सही रास्ता दिखाना हमारा फर्ज़ है। यही सामाजिक उत्तरदायित्व है।

अंकुर : लेकिन अम्मा, आजकल लोग इस जिम्मेदारी से बचना चाहते हैं। वे सोचते हैं कि ?हमें क्या?ः

अम्मा : यही तो दुख की बात है। जब कोई मुसीबत आती है, तो पहला सहारा पड़ोसी ही बनता है। लेकिन अगर हमें पड़ोसी का नाम भी न पता हो, तो फिर मुसीबत के समय कौन साथ देगा?

अंकुर : तो इसका हल क्या है? समाज में यह भाव फिर से कैसे लाया जाए?

अम्मा : इसका हल वही पुरानी सीख में है – अपने आसपास के लोगों से जुड़ो, उनकी फिक्र करो। अगर कोई गलत राह पर जा रहा है, तो उसे प्यार से समझाओ। बच्चों को अच्छे संस्कार दो कि वे बड़ों की बातें मानें और खुद भी दूसरों की भलाई का सोचें।

अंकुर : अम्मा, सच में, टोकने और रोकने की परंपरा ही एक सभ्य समाज की नींव होती है। हमें इसे फिर से मजबूत करना होगा।

अम्मा : हां बेटा, अगर आज की पीढ़ी इस बात को समझ ले, तो समाज पहले की तरह एक परिवार बन सकता है।

लेखक की स्वतंत्रता बनाम संपादकीय नीति: बहस के नए आयाम

संपादक आमतौर पर अनूठी और मौलिक रचनाएँ चाहते हैं ताकि उनकी पत्रिका की विशिष्टता बनी रहे। दूसरी ओर, लेखकों को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे अपनी रचनाएँ अधिक से अधिक स्थानों पर भेज सकें, खासकर जब संपादक बिना किसी समयसीमा के रचनाओं को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार रखते हैं। साहित्य और प्रकाशन की दुनिया में संपादकों और लेखकों दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि पारदर्शिता और संतुलन बनाया जाए, तो यह दोनों के लिए लाभकारी होगा और साहित्य का उद्देश्य—विचारों का प्रसार—पूरी तरह से साकार हो सकेगा।

डॉ. सत्यवान सौरभ

साहित्यिक प्रकाशन जगत में यह बहस लंबे समय से जारी है कि लेखक को अपनी रचनाएँ एक से अधिक पत्रिकाओं में भेजने की स्वतंत्रता होनी चाहिए या नहीं। जबकि संपादक किसी भी रचना को छापने या न छापने के लिए स्वतंत्र होते हैं और उन पर कोई समयसीमा लागू नहीं होती, तो लेखक को भी यह अधिकार क्यों नहीं मिलना चाहिए कि वह अपनी रचना जितनी चाहें जगहों पर भेजे? यह प्रश्न आज के डिजिटल युग में और भी प्रासंगिक हो गया है, जहाँ सूचना और सामग्री के प्रसार की गति अत्यधिक तेज हो चुकी है।

संपादकीय दृष्टिकोण: अनूठेपन की चाह

अधिकांश संपादक यह मानते हैं कि किसी पत्रिका की साख और प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रकाशित सामग्री मौलिक और अनूठी हो। यदि कोई रचना पहले से ही किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है, तो पाठकों को वह पहले ही पढ़ने को मिल चुकी होगी, जिससे नई पत्रिका की विशिष्टता प्रभावित हो सकती है। संपादकों का यह भी मानना है कि यदि एक ही रचना कई जगह प्रकाशित हो, तो पाठकों का भरोसा पत्रिका से कम हो सकता है।

इसके अलावा, संपादकीय दृष्टिकोण से एक और महत्वपूर्ण तर्क यह दिया जाता है कि यदि एक लेखक एक ही रचना को कई जगह भेजता है और वह कई संपादकों द्वारा स्वीकृत कर ली जाती है, तो इससे पत्रिकाओं के बीच असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए कई पत्रिकाएँ इस नीति का पालन करती हैं कि वे केवल वही रचनाएँ स्वीकार करेंगी जो पहले कहीं और प्रकाशित न हुई हों।

लेखक की स्वतंत्रता: अधिकार और सीमाएँ

लेखकों की दृष्टि से देखा जाए तो यह नीति कई बार अनुचित लगती है। जब संपादक को अपनी पत्रिका के लिए सर्वश्रेष्ठ सामग्री चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त है, तो लेखक को भी यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी रचना को अधिक से अधिक स्थानों पर भेजकर प्रकाशन के अवसर बढ़ा सके।

प्रकाशन में देरी

कई बार संपादक रचनाओं को महीनों तक रोककर रखते हैं और अंततः अस्वीकार कर देते हैं। इससे लेखक का कीमती समय नष्ट होता है और उनकी रचना लंबे समय तक अप्रकाशित रह जाती है। कई लेखक केवल एक पत्रिका में अपनी रचना भेजने के कारण महीनों या वर्षों तक इंतजार करते रहते हैं, लेकिन अगर अंत में उन्हें अस्वीकार कर दिया जाता है, तो उनके पास विकल्प सीमित रह जाते हैं।

विभिन्न पाठक वर्ग

हर पत्रिका का अपना अलग पाठक वर्ग होता है। यदि कोई रचना कई जगह छपती है, तो यह लेखक के लिए लाभदायक हो सकता है क्योंकि उसकी रचना अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचती है। यह भी देखा गया है कि विभिन्न पत्रिकाएँ विभिन्न विषयों पर केंद्रित होती हैं, जिससे लेखक की रचनाएँ अलग-अलग प्लेटफार्म पर सही पाठकों तक पहुँच सकती हैं।

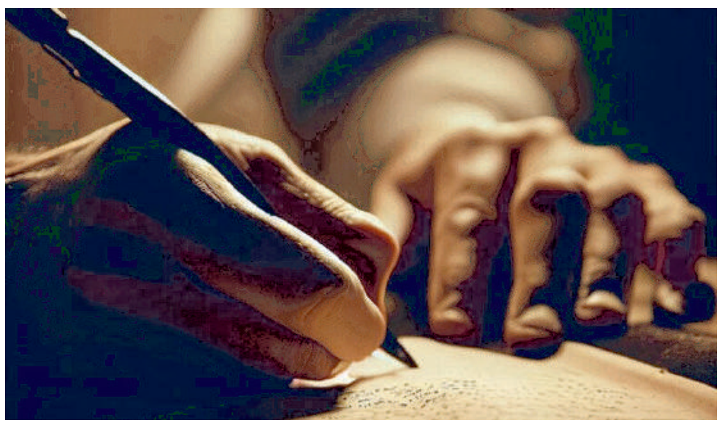

लेखक के अधिकार

जिस तरह संपादक को अपनी पत्रिका के लिए सर्वोत्तम रचनाएँ चुनने की स्वतंत्रता है, उसी तरह लेखक को भी यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपनी रचना को जहाँ चाहे भेज सके। यदि संपादक को यह अधिकार है कि वे किसी भी समय रचना को अस्वीकार कर सकते हैं, तो लेखक को भी यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी रचनाओं को विभिन्न मंचों पर भेजकर अधिक अवसर प्राप्त कर सके।

डिजिटल युग में बदलते नियम

आज के डिजिटल युग में, जहाँ ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की भरमार है, वहाँ इस बहस ने नया रूप ले लिया है। पहले जहाँ लेखकों को केवल प्रिंट पत्रिकाओं में छपने के लिए संघर्ष करना पड़ता था, वहीं अब वे विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर अपनी रचनाएँ प्रकाशित कर सकते हैं।

ऑनलाइन प्रकाशन की नई संभावनाएँ

अब कई ऑनलाइन पत्रिकाएँ और ब्लॉग ऐसे प्लेटफार्म उपलब्ध करा रहे हैं, जहाँ लेखक अपनी रचनाएँ बिना किसी रोक-टोक के प्रकाशित कर सकते हैं। इससे न केवल लेखकों को अधिक स्वतंत्रता मिल रही है, बल्कि पाठकों के लिए भी सामग्री की उपलब्धता बढ़ रही है।

कंटेंट सिंडिकेशन और क्रॉस-प्लेटफार्म प्रकाशन

कई बड़े मीडिया हाउस और डिजिटल प्रकाशन समूह अब "कंटेंट सिंडिकेशन" की प्रक्रिया अपना रहे हैं, जहाँ एक ही सामग्री को विभिन्न प्लेटफार्मों पर पुनः प्रकाशित किया जाता है। इससे लेखकों को अधिक व्यूअरशिप और पाठकों तक पहुँचने का अवसर मिलता है।

समाधान और संतुलन की आवश्यकता

इस बहस का समाधान संतुलन स्थापित करने में है। दोनों पक्षों की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए कुछ संभावित समाधान निकाले जा सकते हैं:

पारदर्शी संपादकीय नीति

यदि कोई पत्रिका केवल मौलिक रचनाएँ ही प्रकाशित करना चाहती है, तो उसे स्पष्ट रूप से यह नियम बताना चाहिए और यह भी निर्दिष्ट करना चाहिए कि कितने समय में निर्णय लिया जाएगा। इससे लेखकों को यह स्पष्ट रहेगा कि वे अपनी रचना को कितने समय तक किसी पत्रिका के लिए आरक्षित रखें।

साझा प्रकाशन की अनुमति

कुछ पत्रिकाएँ यह नीति अपना सकती हैं कि वे ऐसी रचनाएँ स्वीकार करेंगी जो पहले सीमित पाठक वर्ग तक पहुँची हों, लेकिन व्यापक स्तर पर नहीं। यह एक मध्य मार्ग हो सकता है, जिससे लेखकों और संपादकों दोनों के हितों की रक्षा हो सके।

संपादन और पुनर्प्रकाशन की सुविधा

यदि कोई रचना पहले प्रकाशित हो चुकी है, तो उसे थोड़ा संशोधित और अद्यतन कर पुनः प्रकाशित करने की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे न केवल पत्रिकाओं की विशिष्टता बनी रहेगी, बल्कि लेखकों को भी अपनी रचनाओं को दोबारा प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा।

साहित्य और प्रकाशन की दुनिया में लेखक और संपादक, दोनों का योगदान महत्वपूर्ण है। एक ओर संपादकों की जिम्मेदारी होती है कि वे अपने पाठकों को नई और मौलिक सामग्री दें, तो दूसरी ओर लेखकों के अधिकारों की भी रक्षा की जानी चाहिए। यदि एक स्वस्थ और पारदर्शी प्रणाली विकसित की जाए, तो यह दोनों पक्षों के लिए लाभदायक होगी। अंततः, साहित्य का उद्देश्य विचारों का प्रसार और ज्ञान का विस्तार करना है, और इसमें अनावश्यक प्रतिबंधों की जगह नहीं होनी चाहिए।

क्या एक आदर्श संतुलन संभव है?

इस प्रश्न का उत्तर आसान नहीं है, लेकिन यह बहस साहित्यिक समुदाय में पारदर्शिता और संवाद को प्रोत्साहित कर सकती है। यदि पत्रिकाएँ लेखकों के अधिकारों का सम्मान करें और लेखक संपादकीय नीतियों को समझते हुए उनके अनुरूप कार्य करें, तो एक बेहतर प्रकाशन संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023